आपकी बात, निर्भीकता के साथ

प्रातःनागपुरी

आरएनआई पंजीयन सं. JHABIL/2023/86791

वर्ष : 01 अंक : 144 रांची, बुधवार, 08 मई, 2024 (वैशाख कृष्ण अमावस्या, संवत 2081), पृष्ठ- 12, मूल्य- 3 रुपये email : jharkhandwanitaudyog@gmail.com

लोकसभा चुनाव : तीसरे चरण में 62 फीसदी मतदान, पश्चिम बंगाल में झड़प

एजेंसियां, नई दिल्ली

■ सपा ने यूपी में अनियमितताओं का लगाया आरोप ■ कर्नाटक में चुनाव ड्यूटी पर तैनात दो सरकारी अधिकारियों की दिल का दौरा पड़ने से मौत

लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण में मंगलवार को 11 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 93 निर्वाचन क्षेत्रों में लगभग 62 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया और पश्चिम बंगाल में हिंसा की छिटपुट घटनाएं हुईं।

रात 9 बजे चुनाव आयोग के आंकड़ों के मुताबिक, असम में सबसे अधिक 75.53 प्रतिशत मतदान हुआ, उसके बाद गोवा में 74.47 प्रतिशत और पश्चिम बंगाल में 73.93 प्रतिशत मतदान हुआ, जबकि महाराष्ट्र में सबसे कम 55.54 प्रतिशत, बिहार में 56.55 प्रतिशत और गुजरात में 56.98 प्रतिशत मतदान हुआ, जो थोड़ा बेहतर रहा। कुल मतदान प्रतिशत करीब 61.89 फीसदी रहा।

चुनाव आयोग के अनुसार, अन्य राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में, उत्तर प्रदेश में 57.34 प्रतिशत, छत्तीसगढ़ में 67.64 प्रतिशत, दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव में 65.23 प्रतिशत, कर्नाटक में 68.85 प्रतिशत और मध्य प्रदेश में 64.02 प्रतिशत मतदान हुआ। तीसरे चरण में 8.39 करोड़ महिलाओं सहित 17.24 करोड़ लोग मतदान करने के पात्र थे और 18.5 लाख अधिकारियों द्वारा संचालित 1.85 लाख मतदान केंद्र बनाए गए थे। इसके साथ ही

20 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों और 543 में से 282 लोकसभा सीटों पर मतदान पूरा हो चुका है। पहले और दूसरे चरण में कुल मतदान प्रतिशत क्रमशः 66.14 प्रतिशत और 66.71 प्रतिशत था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह उन लोगों में शामिल थे, जिन्होंने गुजरात में अपने मताधिकार का प्रयोग किया, जहां 25 सीटों पर चुनाव हुए। जहां पीएम मोदी ने गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र के एक मतदान केंद्र पर अपना वोट डाला, वहीं शाह ने अहमदाबाद के एक मतदान केंद्र पर वोट डाला। शाह (गांधीनगर) केंद्रीय मंत्रियों ज्योतिरादित्य सिंधिया (गुना), मनसुख मंडाविया (पोरबंदर), परषोत्तम रूपाला (राजकोट), प्रल्हाद जोशी (धारवाड़) और एसपी सिंह बघेल (आगरा) के साथ मैदान में बड़े नेताओं में से हैं। इस दौर में भाजपा के लिए दांव ऊंचे हैं क्योंकि पिछले चुनाव में उसने गुजरात, कर्नाटक और मध्य प्रदेश सहित इन सभी सीटों पर भारी बहुमत से जीत हासिल की थी। उत्तर प्रदेश में, जहां समाजवादी पार्टी के संरक्षक मुलायम सिंह यादव के परिवार के कई सदस्य चुनाव लड़ रहे हैं, पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने आरोप लगाया कि भाजपा कार्यकर्ता मैनपुरी में "बूथ लूटने" की कोशिश कर रहे थे और विपक्षी दलों के लोगों को पुलिस स्टेशनों में हिरासत में लिया जा रहा था। यादव ने मैनपुरी निर्वाचन क्षेत्र के सैफई (इटावा) में अपना वोट डाला, जहां उनकी पत्नी और मौजूदा सांसद डिंपल यादव चुनाव लड़ रही हैं।

पश्चिम बंगाल में चार निर्वाचन क्षेत्रों में लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण में हिंसा की छिटपुट घटनाओं के कारण मुर्शिदाबाद और जंगीपुर सीटों के विभिन्न हिस्सों में टीएमसी, भाजपा और कांग्रेस-सीपीआई (एम) कार्यकर्ता एक-दूसरे से भिड़ गए।

शेष पेज 08 पर

संक्षिप्त

दुमका समेत संथाल की तीन सीटों के लिए अधिसूचना जारी

दुमका। दुमका लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के लिए चुनाव की अधिसूचना मंगलवार को जारी कर दी गई। दुमका के उपायुक्त सह जिला निर्वाचन पदाधिकारी ए दोड्डे ने बताया कि मंगलवार से नाम निर्देशन की प्रक्रिया शुरू हो गई है। सार्वजनिक छुट्टी के दिन को छोड़कर 14 मई तक दिन के 11:00 से 3:00 तक नामांकन पत्र दाखिल किए जा सकेंगे। 15 मई को नामांकन पत्रों की जांच होगी और 17 मई तक नाम वापस लिए जा सकेंगे। 1 जून को सुबह सात बजे से शाम पांच बजे तक मतदान होगा और चार जून को मतों की गिनती की जाएगी।

सलमान के घर के बाहर फायरिंग केस में लॉरेंस गिरोह का सदस्य गिरफ्तार

मुंबई। मुंबई पुलिस की क्राइम ब्रांच ने पिछले महीने अभिनेता सलमान खान के घर के बाहर फायरिंग मामले में राजस्थान से लॉरेंस बिश्नोई गिरोह के एक सदस्य को गिरफ्तार किया है। एक अधिकारी ने बताया कि आरोपी की पहचान मोहम्मद रफीक चौधरी (37) के रूप में की गयी है। वह गोलीबारी मामले में गिरफ्तार पांचवां आरोपी है। उस पर शूटरों को धन देने का आरोप है।

श्रीनगर: सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़, दो आतंकियों ढेर

श्रीनगर. जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले में सुरक्षा बलों ने मुठभेड़ में दो आतंकवादियों को मार गिराया. अधिकारियों ने बताया कि कुलगाम के रेडवानी इलाके में आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद सुरक्षा बलों ने सोमवार देर रात इलाके में घेराबंदी कर तलाशी अभियान शुरू किया था. मंगलवार सुबह आतंकियों और सुरक्षाबलों के बीच जारी गोलीबारी हुई थी.

चाईबासा की चुनावी सभा में कांग्रेस नेता ने केंद्र सरकार पर किया जमकर प्रहार

भाजपा ने जल, जंगल और जमीन का किया सौदा : राहुल

प्रातः नागपुरी प्रतिनिधि, चाईबासा

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मंगलवार को चाईबासा में झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) की प्रत्याशी जोबा मांझी के समर्थन में चुनावी सभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि इंडी गठबंधन यदि सत्ता में आया तो देश के गरीब परिवारों का सर्वेक्षण कराया जायेगा। हर गरीब परिवार की एक महिला के खाते में हर वर्ष एक लाख रुपये डाले जायेंगे। आंगनबाड़ी एवं स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं का मानदेय भी दोगुना कर दिया जायेगा। राहुल गांधी ने केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देश के 22 पूंजीपतियों को अरबपति और करोड़पति बना रहे हैं लेकिन हम देश की करोड़ों महिलाओं को लखपति बनायेंगे। उन्होंने आरक्षण बढ़ाने का भी वादा किया। भारतीय जनता पार्टी पर हमला बोलते हुए कहा कि ये लोग आपके जल, जंगल और जमीन का सौदा करते हैं। राहुल ने आदिवासियों को झारखंड की जमीन का असली मालिक बताया।

देश में महंगाई कम नहीं हुई : चम्पाई सोरेन

मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन ने केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि देश में महंगाई कम नहीं हुई। उन्होंने कहा कि गैस सिलेंडर के दाम बढ़ते गये। झारखंड की प्रथा और परंपरा को भी दबाने का काम किया गया। आज तक केंद्र सरकार ने आदिवासी हित में कोई का नहीं किया। हमने विधानसभा में आदिवासियों की परंपरा और अस्मिता को सुरक्षित करने के लिए सरना धर्म कोड का नियम बनाया। प्रधानमंत्री जब यहां आये तो सरना धर्म कोड पर कुछ नहीं बोले। झारखंड सरकार ने पिछड़ा वर्ग को 27 प्रतिशत आरक्षण का कानून बनाया लेकिन केंद्र के इशारे पर राजभवन में ही रोक दिया गया।

आदिवासी समाज का जल, जंगल, जमीन पर पहला अधिकार बताया। कांग्रेस का सपना है कि आदिवासी समाज के बच्चे देश के विकास में भागीदारी निभाएं। राहुल ने जोहार शब्द से संबोधन की शुरुआत की। साथ ही कहा कि जोहार इसलिए बोला कि यह आदिवासियों का शब्द है। इसमें आपकी आवाज अच्छी सुनाई देती है। उन्होंने कहा कि यह चुनाव आदिवासी, दलित, पिछड़ों के लिए जरूरी चुनाव है। साथ ही कहा कि हमने महिलाओं के बैंक अकाउंट को इसलिए चुना है कि महिलाएं 18 से 20 घंटे काम करती हैं। मैं जानता हूं कि दबाव डालकर महिलाओं से पुरुष कुछ पैसे ले लेंगे।

राहुल गांधी ने आदिवासियों की स्थिति का जिक्र करते हुए कहा कि यदि केंद्र सरकार 100 रुपये का फैसला लेती है तो आदिवासी नेता 10 पैसे का फैसला लेता है। वो आपको वनवासी बोलते हैं। क्योंकि, उनके लिए आप जंगल में रहने वाले लोग हैं लेकिन हमारे लिए आप आदिवासी हैं।

शेष पेज 08 पर

वोट की चोट देकर भाजपा को सत्ता से बेदखल करे: सीएम

गुमला। मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने कहा कि लोकसभा का यह चुनाव देश के लिए निर्णायक है। हम सब इंडी गठबंधन के हैं। आदिवासी मूलवासी अस्तित्व बचाने के लिये सरना

- मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने सुखदेव और कालीचरण को विजयी बनाने का किया आह्वान

धर्म कोड बनाया, लेकिन भाजपा ने रोक दिया। ओबीसी के लिए 27 फीसदी आरक्षण की व्यवस्था की, लेकिन वो आगे नहीं बढ़ा। भाजपा पूरी तरह से आदिवासी-मूलवासी, पिछड़ा, दलित, गरीब विरोधी है।

शेष पेज 08 पर

मंत्री आलमगीर आलम के पीएस संजीव लाल और उसके नौकर को ईडी ने किया गिरफ्तार

प्रातः नागपुरी संवाददाता, रांची

छह दिनों की ईडी रिमांड पर

रांची। झारखंड में मंत्री आलमगीर आलम के पीएस संजीव लाल और उसके सहायक जहांगीर आलम के ठिकानों पर चली 16 घंटे से अधिक की छापेमारी के बाद ईडी ने सोमवार देर रात दोनों को गिरफ्तार कर लिया है। उनके पास से ईडी को 35 करोड़ से की अधिक की रकम बरामद हुई। दोनों की आज ईडी की विशेष अदालत में पेशी हुई। जहां ईडी ने कोर्ट से 10 दिनों के लिए रिमांड पर लेने की अनुमति मांगी। लेकिन न्यायाधीश प्रभात कुमार शर्मा की अदालत ने इसे अस्वीकार करते हुए सिर्फ 6 दिन की ही रिमांड दी। दोनों की रिमांड अवधि 13 मई को खत्म होगी।

झारखंड सरकार में मंत्री आलमगीर आलम के पीएस संजीव लाल और उसके नौकर को ईडी ने गिरफ्तार कर लिया। ईडी ने गिरफ्तार करने से पहले संजीव लाल के नौकर जहांगीर आलम के आवास पर छापेमारी की। इस दौरान जहांगीर आलम के घर से 30 करोड़ रुपये कैश बरामद हुआ था। इसके अलावां रांची में 5 और ठिकानों पर ईडी की रेड हुई।

ईडी ने जहांगीर आलम के आवास के अलावा ग्रामीण विकास विभाग के इंजीनियर विकास कुमार के आवास पर भी छापेमारी की। सूत्रों के अनुसार विकास कुमार के आवास से करीब 3 करोड़ रुपये कैश ईडी को मिले हैं। ईडी द्वारा 6 जगहों पर हुई छापेमारी में कुल 35।23 करोड़ रुपये बरामद हुए हैं। इतने बड़े मात्रा में कैश की बरामदी को लेकर ईडी के अधिकारी भी हैरान हैं।

बताते चलें कि, प्रवर्तन निदेशालय ने सोमवार सुबह तड़के जहांगीर आलम के रांची स्थित आवास पर छापेमारी की।

शेष पेज 08 पर

दूसरे दिन भी छापामारी रही जारी, डेढ़ करोड़ बरामद

रांची। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की टीम मंगलवार को एक साथ रांची में अलग-अलग स्थानों पर छापेमारी कर रही है। डोरंडा के राजीव सिंह नामक कॉन्ट्रैक्टर के ठिकाने से डेढ़ करोड़ रुपये कैश बरामद किया गया है। इसके अलावा कांके पतरा टोली निवासी पथ निर्माण विभाग में एसडीओ अजय मुंडा के पैतृक आवास पर ईडी की छापेमारी चल रही है। सिंह मोड़ के पास रहने वाले एक बिल्डर के साथ रांची के रातू और आईटीआई बस स्टैंड के पास रहने वाले दो बिल्डरों के यहां भी छापेमारी चल रही है।

रांची में पेड़ से दबकर दो लोगों की मौत पलामू में वज्रपात ने ली तीन की जान

बदला मौसम का मिजाज

प्रातः नागपुरी संवाददाता, रांची

झारखंड में मंगलवार को अचानक मौसम का मिजाज बदल गया। इस दौरान रांची के नामकुम इलाके में आंधी-तूफान में विशाल पेड़ वाहनों पर गिर गया। इसमें दो लोगों की मौत हो गयी, जबकि तीन लोगों की हालत गंभीर है। इन्हें रिम्स में भर्ती कराया गया है। इस सड़क

हादसे में कार सवार पूरी तरह सुरक्षित हैं।रांची के नामकुम क्षेत्र में मंगलवार की शाम आयी आंधी में सड़क किनारे खड़ा विशाल पेड़ पास से गुजर रहे कार, स्कूटी एवं दो बाइक सवारों पर गिर गया। इसमें स्कूटी सवार सोनू कुमार साहू (26 वर्ष) पिता बसंत साहू, बेडवाडी गोंदलीपोखर निवासी की मौत हो गयी, जबकि इलाज के दौरान ज्योति भारती (साहिबगंज) की भी मौत हो गयी, जबकि तीन लोगों को गंभीर अवस्था में रिम्स में भर्ती कराया गया है।

शेष पेज 08 पर

झामुमो ने चमरा लिंडा को पार्टी से किया निलंबित

रांची। झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के अध्यक्ष शिबू सोरेन ने बिशुनपुर के विधायक चमरा लिंडा को पार्टी से निलंबित कर दिया है। वह लोहरदगा संसदीय सीट से बतौर निर्दलीय चुनाव लड़ रहे हैं। बता दें कि, बिशुनपुर से झामुमो विधायक चमरा लिंडा ने पार्टी से बगावत करते हुए बीते 24 अप्रैल को लोहरदगा में पार्टी नेतृत्व की इच्छा के विरुद्ध नामांकन कर दिया। उन्हों ने यहां से निर्दलीय चुनाव लड़ने का फैसला लिया।

चमरा के रूख ने बढ़ाई झामुमो की परेशानी : चमरा के ऐसा करने

से पार्टी उनसे नाराज हो गई और कह दिया कि अगर चमरा ने अपना नामांकन वापस नहीं लिया, तो उनके खिलाफ एक्शान लिया जाएगा।

शेष पेज 08 पर

राजमहल लोकसभा सीट से झामुमो विधायक लोबिन हेंब्रम ने निर्दलीय भरा पर्चा

साहिबगंज। राजमहल लोकसभा संसदीय क्षेत्र से मंगलवार को नामांकन के पहले दिन बोरियो से झामुमो विधायक लोबिन हेंब्रम ने निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में पर्चा दाखिल किया। लोबिन ने निर्वाची पदाधिकारी सह डीसी हेमंत सती के समक्ष दोपहर 2 बजकर 58 मिनट पर एक सेट में चार प्रस्तावक के साथ पहुंच कर नामांकन-पत्र दाखिल किया। नामांकन के बाद शाम करीब चार बजे कृषि बाजार मैदान में जनसभा को संबोधित किया। अपने संबोधन में लोबिन ने कहा कि जो लोग मुझे कम करके आंक रहे हैं। उन्हें 4 जून को परिणाम के बाद पछतावा होगा। राजमहल क्षेत्र में उन्हें अपार जन समर्थन मिल रहा है। अपनी जीत पक्की बताते हुए लोबिन ने कहा कि झारखंड मुक्ति मोर्चा ने उनकी बात न सुनकर जो भूल की है, इसका खामियाजा पार्टी को भुगतना होगा।

मुसलमानों को मिलना चाहिए पूरा आरक्षण : लालू

- बवाल मचा, तो कुछ ही घंटों में मार दी पलटी

एजेंसियां, पटना

लोकसभा चुनाव 2024 की वोटिंग के बीच आरजेडी प्रमुख लालू प्रसाद यादव ने 'मुसलमानों को आरक्षण मिलना चाहिए' वाले बयान से कुछ ही घंटों में पलटी मार दी। बवाल मचा, तो तुरंत सफाई दे डाली। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री रहे लालू यादव ने अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट पर लिखा, "आरक्षण का आधार धर्म नहीं, बल्कि सामाजिक पिछड़ापन होता है। प्रधानमंत्री को इतनी सी भी समझ नहीं है।

मंडल कमीशन हमने लागू करवाया है। क्या नरेंद्र मोदी ने कभी मंडल

कमीशन और उसकी सिफारिशें पढ़ी है? मंडल कमीशन में 3,500 से अधिक पिछड़ी जातियों को आरक्षण मिलता है, जिसमें अन्य धर्मों की भी सैंकड़ों जातियों को आरक्षण मिलता है।"

उन्होंने आगे भाजपा को निशाने पर लेते हुए लिखा कि ये हमसे बड़े और असली ओबीसी नहीं हैं ना? हमसे ज्यादा गरीबों, पिछड़ों और दलितों की इनको समझ नहीं है। ये लोग बस एक-दूसरे को लड़ाते हैं।

लालू यादव ने आगे कहा कि बाबा साहेब के संविधान और जननायक कर्पूरी ठाकुर द्वारा दिए गए आरक्षण को खत्म करने की संघियों और भाजपाइयों की पुरानी ख्वाहिश और साजिश रही है। सन 2000 में एनडीए की भाजपाई सरकार ने तो बाकायदा "संविधान समीक्षा आयोग" ही गठित कर दिया था।उन्होंने कहा कि ये लोग संविधान को मानते ही नहीं, अगर संविधान को मानते तो नफरत फैलाने वाली विभाजनकारी भाषा का प्रयोग नहीं करते।

शेष पेज 08 पर

धार की चुनावी सभा से पीएम मोदी ने किया पलटवार

लालू यादव ने इंडी गठबंधन के इरादों पर लगा दी मुहर

धार (मध्य प्रदेश)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी धर्म के आधार पर मुसलमानों को आरक्षण देने को लेकर पहले से ही कांग्रेस पर हमलावर हैं। अब लालू यादव के बयान "मुसलमानों को आरक्षण मिलना चाहिए पूरा" से पीएम मोदी और हमलावर हो गए हैं।

पीएम मोदी ने मध्य प्रदेश के धार में चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए राजद प्रमुख लालू प्रसाद

यादव के बयान पर जवाब दिया है। उन्होंने कहा है कि लालू यादव ने इंडी गठबंधन के इरादों पर मुहर लगा दी।

शेष पेज 08 पर

गिरिडीह में अर्द्धसैनिक बलों से लदी बस पलटी, एक जवान की हुई मौत

- दर्जनाधिक घायल, दो जवानों को किया गया रांची एयरलिफ्ट

एजेंसियां, गिरिडीह

बगोदर थाना क्षेत्र के घाघरा कॉलेज के समीप मंगलवार को अर्द्धसैनिक बलों से लदी एक बस पलट गई। घटना में एक जवान की मौत हो गई है जबकि दर्जनाधिक जवान घायल हुए हैं। मृतक जवान की पहचान विकास भगत के रूप में हुई है। वह लोहरदगा के निवासी थे।

बताया जा रहा है कि बस गिरिडीह से गढ़वा जा रही थी, इसी दौरान यह हादसा हुआ। घटना के बाद

घायलों को इलाज के लिए बगोदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यहां से बेहतर इलाज के लिए पांच जवानों को धनबाद रेफर कर दिया गया। धनबाद से दो जवानों को एयरलिफ्ट कराकर रांची रिम्स रेफर कर दिया गया है। घटना की जानकारी मिलते ही एसपी दीपक कुमार शर्मा, एसडीपीओ धनंजय राम और बगोदर थाना प्रभारी सुख सागर सिंह सहित कइ अधिकारी घटनास्थल पहुंचे और राहत बचाव कार्य में जुट गए।

शेष पेज 08 पर

रामगढ़ में मतदाता जागरुकता को लेकर वॉकथॉन समेत अन्य कार्यक्रमों का हुआ आयोजन

मतदाताओं को मतदान करने के लिए किया गया आमंत्रित

- मतदाता जागरुकता संबंधित स्लोगनों के साथ बड़ी संख्या में हवा में छोड़े गए गुब्बारे

संवाददाता

रामगढ़ । लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के तहत 14 लोकसभा क्षेत्र हजारीबाग (रामगढ़) के लिए मतदान की तिथि 20 मई 2024 निर्धारित है। निर्वाचन के दौरान रामगढ़ जिले में प्रत्येक मतदाता द्वारा अपने मताधिकार का प्रयोग सुनिश्चित करने को लेकर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त रामगढ़ चंदन कुमार के द्वारा दिए गए निर्देश के आलोक में जिला प्रशासन रामगढ़ द्वारा विभिन्न मतदाता जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

इसी क्रम में मंगलवार को मतदाता जागरूकता के तहत जिले में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया इस दौरान सर्वप्रथम रामगढ़ शहर अंतर्गत थाना चौक से सुभाष चौक रामगढ़ तक वॉकथॉन वॉक फॉर डेमोक्रेसी का आयोजन किया गया। मौके पर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त चंदन कुमार, पुलिस अधीक्षक डॉ बिमल कुमार, उप विकास आयुक्त रॉबिन टोप्पो, अपर समाहर्ता गीतांजलि कुमारी, अनुमंडल पदाधिकारी आशीष गंगवार सहित अन्य स्तरीय वरीय अधिकारियों, अधिकारियों, कर्मियों, आंगनबाड़ी सेविकाओं सहायिकाओं, विभिन्न विद्यालयों के बच्चों, चैंबर ऑफ कॉमर्स के सदस्यों, सहित बड़ी संख्या में जिले वासियों ने वॉकथॉन में हिस्सा लिया। वॉकथॉन के दौरान मतदाता जागरूकता से संबंधित विभिन्न स्लोगन सहित अन्य रचनात्मक तरीके से लोगों को आगामी लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के दौरान अपने मताधिकार का प्रयोग करने, मतदान के महत्व आदि के प्रति जागरूक किया गया। वॉकथॉन संपन्न होने के उपरांत सुभाष चौक रामगढ़ के समीप सभी ने मतदाता जागरूकता के तहत स्वयं मतदान करने एवं अन्य लोगों को भी मतदान करने के प्रति जागरूक करने की शपथ ली।

मौके पर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त ने सभी को मतदान के महत्व के प्रति जागरुक करते हुए कहा कि अक्सर हम देखते हैं कि शहरी क्षेत्र में रहने वाले मतदाता सभी तरह से जागरूक होने के बावजूद मतदान के दिन अपने मताधिकार का प्रयोग नहीं करते हैं। हमारा वोट हमारा भविष्य तय करता है इसलिए यह बहुत जरूरी है की प्रत्येक नागरिक अपने मताधिकार का प्रयोग करें वहीं उन्होंने सभी से स्वयं मतदान करने एवं अपने आसपास रहने वाले अन्य लोगों को भी मतदान करने के प्रति जागरूक करने की अपील की।

इस दौरान पुलिस अधीक्षक रामगढ़ डॉ बिमल कुमार ने पहले मतदान फिर जलपान का नारा देते हुए सभी को लोकसभा आम निर्वाचन 2024 की शुभकामनाएं दी एवं सभी से निर्वाचन के दौरान 20 मई 2024 को अपने मताधिकार का प्रयोग जरूर करने की अपील की। मौके पर अनुमंडल पदाधिकारी आशीष गंगवार ने शहरी क्षेत्र के मतदाताओं को उनके मतदान के महत्व के प्रति जागरूक करने का कार्य किया वहीं उन्होंने सभी से स्वयं एवं अन्य लोगों को भी मतदान करने के प्रति जागरूक करने की अपील की। कार्यक्रम के दौरान जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त चंदन कुमार ने नई पहल करते हुए लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के तहत मतदाताओं को सांकेतिक रूप से निमंत्रण पत्र देकर मतदान करने के लिए आमंत्रित किया।वहीं, इन सब के अलावा कार्यक्रम के दौरान बड़ी संख्या में मतदाता जागरूकता से संबंधित संदेशों के साथ गुब्बारों को हवा में छोड़ते हुए सभी से आगामी लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के दौरान अपने मताधिकार का प्रयोग जरूर करने की अपील की गई। कार्यक्रम का संचालन उप निर्वाचन पदाधिकारी श्री रविंद्र कुमार गुप्ता के द्वारा किया गया वहीं उन्होंने कार्यक्रम के संचालन के साथ-साथ लोगों को निर्वाचन संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां एवं मतदान के प्रति जागरूक करने का भी कार्य किया।

गोद में बच्चा लेकर एसडीओ की पत्नी ने किया वॉक

वॉकथॉन में रामगढ़ के एसडीओ आशीष गंगवार और उनकी पत्नी अपने बच्चे के साथ शामिल हुए। उनको देखकर आम नागरिकों ने भी चुनाव के इस महापर्व की गंभीरता को समझा। पुलिस लाइन से सुभाष चौक की दूरी 1.6 किलोमीटर है। एसडीओ और उनकी पत्नी ने बच्चे को गोद में लेकर पैदल मार्च किया और लोगों से 20 मई को मतदान करने की अपील की।

लोगों में बांटा गया इनविटेशन कार्ड, दिलाई शपथ

वॉकाथन के बाद सुभाष चौक पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए लोगों के बीच डीसी चंदन कुमार और एसपी डॉ बिमल कुमार ने इनविटेशन कार्ड भी बांटा गया। इस इनविटेशन कार्ड में 20 मई को बूथ पर जाकर वोट करने की बात कही गई है। इसके अलावा सभी मतदाताओं को लोकतंत्र के इस महापर्व में अपनी भागीदारी निभाने के लिए शपथ दिलाई गई।

85 प्रतिशत वोट करने का रखा गया लक्ष्य

कार्यक्रम के दौरान डीसी चंदन कुमार ने कहा कि इस बार रामगढ़ जिला क्षेत्र में 85 प्रतिशत मतदान कराने का लक्ष्य रखा गया है। यह लक्ष्य तभी संभव है जब शहरी क्षेत्र में रहने वाला मतदाता घर से निकलकर बूथ तक पहुंचे। उन्होंने कहा कि पिछले चुनाव के मतदान प्रतिशत देखें तो ग्रामीण क्षेत्र में ज्यादा मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया है। उनके मुकाबले शहरी क्षेत्र के काफी कम मतदाताओं ने वोट डाले हैं। लेकिन इस बार इस उदासीनता को खत्म करना है। हर मतदाता वोट डाले और वह अपने आसपास के लोगों को वोट डालने के लिए प्रेरित भी करे। उन्होंने कहा कि इस बार दिन भर मतदान होना है। इसलिए आधे घंटे का समय निकालकर मतदान जरूर करें।

संक्षिप्त

डॉ संजीव कृष्ण जमुआर ने भाजपा से दिया इस्तीफा

रामगढ़। भारतीय जनता पार्टी के साथ वर्ष 2003 से जुड़े रहने वाले डॉ संजीव कृष्ण जमुआर ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। इस संबंध में उन्होंने कहा की मैं भाजपा से वर्ष 2003 में जुड़ा और पार्टी मजबूत बने इसका हमेशा प्रयास किया। उन्होंने बताया की वे लंबे समय तक विश्व हिन्दू परिषद से भी जुड़े रहे और विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित विश्व मंगल गौ ग्राम याता का मैं रामगढ़ में संयोजक था। साथ ही हनुमन शक्ति जागरण समिति में मैं प्रदेश सह मंत्री के पद पर योगदान दिया। डॉ जमुआर ने बताया की भारतीय जनता पार्टी में चिकित्सा प्रकोष्ठा का मैं जिला संयोजक रहा। वहीं, पार्टी के प्रबुद्ध प्रकोष्ठ में प्रदेश कार्य समिति सदस्य का दायित्व भी मैंने निष्ठापूर्वक निभाया। लेकिन वर्तमान समय में परिस्थिति ऐसी बन गयी है की पार्टी के साथ आगे बढ़ना संभव नही लग रहा है। इसलिए मैं भारतीय जनता पार्टी से इस्तीफा दे रहा हूं।

यूरोपीय टूर के लिए दो हॉकी खिलाड़ियों का चयन

खूंटी। यूरोपीय टूर के लिए भारतीय जूनियर वुमेंस हॉकी टीम में खूंटी जिले की दो खिलाड़ियों बिनिमा धान और संजना होरो के चयनित होने पर हॉकी खूंटी के अधिकारियों, सदस्यों और उनके प्रारंभिक प्रशिक्षक ने खुशी जाहिर करते हुए सभी खिलाड़ियों को बधाई दी है।

चुनाव को लेकर उत्पाद विभाग की ताबड़तोड़ कार्रवाई

ठोका 1.62 लाख का जुर्माना

- पूरे जिले में चल रहा छापेमारी अभियान, 107 अभियोग दर्ज : अजय गोंड

संवाददाता

रामगढ़ । लोकसभा चुनाव को लेकर एक तरफ जहां पुलिस प्रशासन अवैध शराब के खिलाफ अभियान चला रही है। वहीं उत्पाद विभाग भी ताबड़तोड़ कार्रवाई कर रहा है। सिर्फ आदर्श आचार संहिता लागू होने से अबतक 107 अभियोग दर्ज किया जा चुके हैं। इस मामले की जानकारी मंगलवार को सहायक उत्पाद आयुक्त अजय कुमार गोंड ने दी। उन्होंने बताया कि जिले में अवैध चुलाई शराब, जावा महुआ, देसी शराब और अवैध शराब के खिलाफ अभियान चल रहा है। सहायक उत्पाद आयुक्त अजय कुमार गोंड ने बताया कि छापेमारी के दौरान अवैध कारोबार में संलिप्त 30 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया है। इस दौरान 75 अभियुक्त फरार हुए हैं, जिनके खिलाफ अभियोग दर्ज है। उन सभी लोगों पर 1.62 लाख का जुमार्ना ठोका गया है।

1400 लीटर चुलाई शराब और 10 हजार किलो जावा महुआ नष्ट

सहायक उत्पाद आयुक्त ने बताया कि छापेमारी में उत्पाद विभाग को बड़ी सफलता भी मिली हैं। सिर्फ चुनाव के दौरान हुई कार्रवाई में 1407 लीटर अवैध चुलाई शराब, 10395 किलोग्राम जावा महुआ, 10 .395 लीटर देसी शराब, 469 .8 लीटर विदेशी शराब, 119 .650 लीटर बीयर जप्त किया गया है।

एमआरपी से अधिक शराब बिक्री और अवैध कारोबार की इस नंबर पर दें सूचना

सहायक उत्पाद आयुक्त ने बताया कि जिले में अभी भी छापेमारी अभियान चल रहा है। आम नागरिकों का भी दायित्व बनता है कि वह विभाग को कारोबारी के खिलाफ सूचना दें। उनकी गोपनीयता बनाई रखी जाएगी। उन्होंने चार मोबाइल नंबर सार्वजनिक किया है, जिस पर आम नागरिक फोन कर खुदरा शराब दुकान में एमआरपी से अधिक मूल्य पर शराब बिक्री करने, किसी भी स्थान पर शराब का अवैध भंडारण करने और अवैध बिक्री करने से संबंधित शिकायत की जा सकती है। 9431588327, 7677774961, 9006273990 और 8873531014 पर शिकायत करने की अपील की है।

हथियार की खरीद-बिक्री करते दो अपराधी रंगेहाथ गिरफ्तार

संवाददाता

खूंटी। पुलिस ने मंगलवार को तोरपा थाना क्षेत्र के कुल्डा जंगल में छापामारी कर दो अपराधियों को एक लोडेड देसी पिस्तौल और एक टाटा नेक्शन गाड़ी के साथ अवैध हथियारकातूस की खरीद-बिक्री करते रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपितों में नीतीश कुमार और अतीश राम शामिल हैं। इस आशय की जानकारी तोरपा के अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी क्रिस्टोफर क्रिकेटर ने मंगलवार को अपने कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में दी। उन्होंने बताया कि एसपी को सूचना मिली थी कि कुल्डा जंगल में कुछ अपराधकर्मी अवैध हथियारों की खरद-बिक्री और किसी आपराधिक घटना को अंजाम देने की योजना बना रहे हैं। सूचना के सत्यापन और कार्रवाई के लिए तोरपा के एसडीपीओ के नेतृत्व में छापामारी दाल का गठन किया गया। पुलिस टीम ने कुल्डा जंगल में छापामारी कर हथियार के साथ दोनों अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया। एसडीपीओ ने बताया कि आतीश राम का पुराना आपराधिक इतिहास रहा है। उसके खिलाफ 2021 और 2022 में विभिन्न धाराओं के तहत दो मामले दर्ज हैं। छापामारी टीम में एसडीपीओ क्रिस्टोफर केर-केट्टा, पुलिस इंस्पेक्टर अशोक कुमार सिंह, थाना प्रभारी प्रभात रंजन पांडेय, पुलिस अव निरीक्षक अमरेंद्र मंडल और आनंद कुमार पंडित, सहायक अवर निरीक्षक जयदीप मेहता, हवलदार रूबेन केरकेट्टा शामिल थे। दोनों के खिलाफ तारपा थाने में मामला दर्ज कर उन्हें न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया।

तोरपा प्रखंड में चला जनसंपर्क अभियान

खूंटी। झामुमो नेता सुदीप गुड़िया के नेतृत्व में तोरपा प्रखंण्ड के फटका, गुंम्पीला गौरबेड़ा उनुक्दा, सरगेला गांवों में जनसंपर्क अभियान चलाकर कांग्रेस प्रत्याशी कालीचरण मुंडा को विजयी बनाने की अपील ग्रामीणों से की।उन्होंने कहा कि भाजपा को विकास से मतलब नहीं है। भाजपा जाति, धर्म, संप्रदाय के नाम पर राजनीति करती है। भाजपा खूंटी में 45 साल से अधिक समय से प्रतिनिधित्व कर रही है, लेकिन क्षेत्र का कोई विकास नहीं हो सका है। इसके करण हैं भाजपा के सांसद अर्जुन मुंडा। केन्द्रीय मंत्री रहते हुए भी खूंटी लोकसभा क्षेत्र पिछड़ा रहा। महागठबंधन के प्रत्याशी कलीचरण मुंडा को भारी मतों से चुनाव जीतना है।

जिला परिषद सदस्य सोसंती कोनगाड़ी ने कहा कि महिलाओं पर अत्याचार पर चुप्पी साधनेवाली भाजपा सरकार को केंद्र से उखाड़ फेंकाना है।

प्रत्याशी मनीष जायसवाल ने विभिन्न समाजिक वर्गों के साथ की बैठक

संवाददाता

रामगढ़ । हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी मनीष जायसवाल लगातार लोगों के घर घर जाकर उनसे समर्थन मांग रहे हैं। इसी क्रम में 7 मई को उन्होंने 11 स्थानों का तूफानी दौरा कर जनसंपर्क अभियान चलाया। इस मौके पर उन्होंने लोगों से आगामी 20 मई को ईवीएम के क्रम संख्या 2 कमल फूल छाप पर बटन दबाकर अपना बहुमूल्य वोट देकर भाजपा को विजय बनाने का आग्रह किया । भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशी मनीष जायसवाल सुबह 8:00 बजे सर्वप्रथम गुरुद्वारा रोड पहुंचे । उसके उपरांत विकास नगर ,छोटकाकाना के बाद क्षत्रिय महासभा वार्ड नंबर 1 शास्त्री नगर पहुंचे । इसके बाद ब्राह्मण समाज के साथ बैठक कर उनसे समर्थन मांगा।, इसके बाद हरिजन समाज के साथ बैठक कर समर्थन मांगा । उसके बाद पतरातू बस्ती, कुशवाहा धर्मशाला, लायंस क्लब, चैंबर ऑफ कॉमर्स के सदस्यों के साथ बैठक कर उनसे समर्थन की अपील किया । मौके पर मुख्य रूप से हजारीबाग लोकसभा प्रभारी अभय सिंह, लोकसभा सह संयोजक रणंजय कुमार उर्फ कुंटू बाबू , जिला अध्यक्ष प्रवीण मेहता, उपाध्यक्ष राजू चतुर्वेदी, विधान सभा सह संयोजक विजय जायसवाल, रंजीत पांडे ,महामंत्री रंजन फौजी, मंडल अध्यक्ष सूर्यवंश श्रीवास्तव, ऋषिकेश सिंह ,पूर्व मंडल अध्यक्ष शिवकुमार महतो, मीडिया प्रभारी भीमसेन चौहान, राजीव रंजन , ब्रजेश पाठक, सत्यजीत सिंह ,शीतल सिंह जय किशोर ठाकुर, धीरज साहू, संतोष साव उपस्थित थे

शॉपिंग मॉल जा रहा था पूरा परिवार, तूफान में स्कॉर्पियो पर गिरा पेड़, बाल-बाल बची जान

संवाददाता

रामगढ़ । रामगढ़ शहर में मंगलवार की शाम अचानक मौसम ने करवट ली। तेज आंधी और तूफान के साथ बारिश हुई और पूरा मौसम सुहाना हो गया। लेकिन इसी बीच शॉपिंग करने निकला एक परिवार की गाड़ी पर बड़ा पेड़ गिर गया। पूरा परिवार स्कॉर्पियो में फंस गया। स्थानीय लोगों की मदद से उन लोगों की जान बच सकी। जानकारी के अनुसार कुजू के सीसीएल कर्मी रोहित रंजन चौधरी अपने पूरे परिवार के साथ रामगढ़ शहर के रिलायंस ट्रेंड मॉल में शॉपिंग करने जा रहे थे। इसी बीच उनकी स्कॉर्पियो जेएच 24 बी 2222 पर मॉल के पास ही एक बड़ा पेड़ गिर गया। पेड़ में फंसा हाईटेंशन बिजली का तार भी काफी नीचे तक आ गया था। लेकिन संयोग अच्छा रहा की गाड़ी को बिजली का तार छू नहीं सका, नहीं तो यह हादसा और बड़ा हो जाता।

आनन-फानन में स्थानीय लोग वहां जुटे और उन लोगों ने गाड़ी में फंसे लोगों को बाहर निकाला। बाद में पुलिस की सहायता से क्षतिग्रस्त स्कॉर्पियो को भी सड़क से हटाया गया।

13 मई को सुबह पांच बजे मतदान केंद्रों में पहुंच जाएं मतदानकर्मी: जिला निर्वाची पदाधिकारी

संवाददाता

खूंटी। लोकसभा आम चुनाव के मद्देनजर प्रशिक्षण कोषांग द्वारा खूंटी और तोरपा विधानसभा क्षेत्र के लिए मंगलवार का प्रतिनियुक्त पोलिंग अधिकारियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रशिक्षण में खूंटी और तोरपा विधानसभा क्षेत्र के लिए प्रतिनियुक्त 320 एवं 280 मतदानकर्मी शामिल हुए। यह उनका अंतिम दौर का प्रशिक्षण था। खूंटी विधानसभा क्षेत्र के मतदान कर्मियों के लिए बिरसा कालेज, खूंटी और तोरपा विधानसभा क्षेत्र के लिए मतदान कर्मियों के लिए लोयला इंटर कालेज, खूंटी में प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी है। प्रशिक्षण के दौरान मतदान से पूर्व, मतदान के दिन और मतदान के बाद की समस्त प्रक्रियाओं की विस्तार से जानकारी दी गई और उनके कार्य और दायित्वों से अवगत कराया गया। साथ ही आइएलएमएस एप्प के माध्यम से मतदान कर्मियों की कार्य दक्षता की जांच की गयी।

मौके पर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त लोकेश मिश्रा ने कहा कि विविध चरणों में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा आप सभी को निर्वाचन की तमाम प्रक्रियाओं से अवगत कराया गया है। उम्मीद है कि आप सभी अपने कार्य दक्ष होकर चुनाव कार्यों का सफल निष्पादन करेंगे। उन्होंने मतदान कर्मियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि डिस्पैच सेंटर से प्रस्थान करने से लेकर मतदान केंद्रों पर आपकी सुरक्षा के पुख्ता बंदोबस्त किया गया है। आप सभी निर्भीक होकर चुनाव पर्व में अपने कार्य और दायित्व का निर्वहन करेंगे। उन्होंने सभी मतदान कर्मियों को समय पर बिरसा मुंडा फुटबॉल स्टेडियम,बिरसा कॉलेज,खूंटी परिसर में बनाये जा रहे है डिस्पैच सेंटर पर पहुंचने का निर्देश दिया, ताकि मतदान कर्मियों को समयानुसार मतदान केंद्रों के लिए रवाना किया जा सके। उपायुक्त ने मतदानकर्मियो को निर्देशित किया कि मतदान के दिन पूर्वाह्न पांच बजे संबंधित मतदान केंद्र पर पहुंचकर मतदान आरंभ करने की प्रक्रिया शुरू करेंगे। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षण कोषांग के वरीय पदाधिकारी सह परियाजना निदेशक, आइटीडीए आलोक शिकारी कच्छप, प्रभारी वरीय पदाधिकारी सह जिला भू-अर्जन पदाधिकारी मो परवेज ने मतदान कर्मियों को सफल, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण मतदान संपन्न कराने से संबंधित विभिन्न बिंदुओं की बारीकियों से अगवत कराया।

शिक्षा के साथ जागरुकता से बदले पुरानी सोच और रहें बीमारियों से दूर:दीपा कुमारी

संवाददाता

रामगढ़ । कोयलांचल स्थित सरस्वती विद्या मंदिर रजरप्पा में सी.एस.आर. सीसीएल द्वारा मासिक धर्म के प्रति जागरुकता फैलाने के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

विद्यालय के प्रांगण में आयोजित इस कार्यक्रम में छात्राओं को मासिक धर्म की स्वच्छता, इससे जुड़े मिथकों और तथ्यों के बारे में शिक्षित किया गया। इस आयोजन में न केवल छात्राओं ने भाग लिया, बल्कि शिक्षिकाओं ने भी सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। कार्यक्रम की शुरूआत में, विद्यालय की आचार्या शुक्ला चौधरी ने मासिक धर्म के प्रति समाज में फैली गलतफहमियों को दूर करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, ₹शिक्षा का अर्थ केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं है, बल्कि व्यक्तिगत स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता भी है।

इस अवसर पर स्वास्थ्य विशेषज्ञ दीपा कुमारी ने मासिक धर्म से जुड़ी बुनियादी बातों और स्वच्छता के महत्व को समझाया। छात्राओं को सैनिटरी नैपकिन के उपयोग और निपटान के सही तरीके भी बताए गए।

इस कार्यक्रम का आयोजन सी.एस.आर. नोडल अधिकारी आशीष झा,ज्योति प्रकाश सिन्हा के निर्देशन में हुआ।इस अवसर पर सीसीएल द्वारा विद्यालय में नैपकिन वेंडिंग और निष्पादन मशीन लगाई गयी।प्राचार्य उमेश प्रसाद ने इस कार्यक्रम के लिए सीसीएल रजरप्पा का आभार प्रकट किया । कार्यक्रम को सफल बनाने में विद्यालय के आचार्या ममता कुमारी, अंकिता रानी, रिंकी, मालविका, गायत्री कुमारी, ललिता गिरी, पूनम सिंह, ज्योति राजहंस, आरती झा,डॉ गायत्री आदि की प्रमुख भूमिका रही।

संक्षिप्त

रांची में दो लोगों ने की खुदकुशी, जांच में जुटी पुलिस

रांची। सदर थाना क्षेत्र के अलग-अलग जगहों पर दो लोगों के खुदकुशी करने का मामला मंगलवार को प्रकाश में आया है। खुदकुशी का पहला मामला सदर थाना क्षेत्र के चुना भट्ठा में घटी है, जहां सिंकू पासवान (36) ने खुदकुशी कर ली। सिंकू पासवान रांची के लोअर बाजार थाना क्षेत्र का रहने वाला था । वह चुना भट्ठा स्थित अपने ससुराल आया हुआ था। परिजनों के अनुसार ससुराल में ही उसका अपनी पत्नी के साथ किसी बात को लेकर सोमवार की रात जमकर झगड़ा हुआ था। इस वजह से सिंकू पासवान ने खुदकुशी कर ली। पुलिस ने सूचना मिलने के बाद मंगलवार को सिंकू के शव पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया। जबकि दूसरा मामला सदर थाना क्षेत्र के भाभा नगर का है। विजय राम (56) ने अपने ही घर खुदकुशी कर ली। विजय राम रांची के एक डॉक्टर के यहां ड्राइवर के तौर पर काम किया करते थे। मामले की जानकारी मिलने पर सदर थाने की टीम मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया। विजय का तबीयत खराब रहने के कारण उसने खुदकुशी की।थाना प्रभारी कुलदीप ने बताया कि मंगलवार सुबह सदर थाना क्षेत्र में दो लोगों के अलग अलग स्थानों पर खुदकुशी की है।

चिरंजीवी स्कूल की बच्चों के लिए समर कैम्प का आयोजन

रांची : रांची के चिरंजीवी स्कूल की चारों शाखाओं के बच्चों के लिए चिरंजीवी प्ले स्कूल कुसुम विहार के प्रांगण में ग्रीष्म अवकाश के दौरान दस दिवसीय समर कैम्प का आयोजन किया जा रहा है। सुबह 7:00 से 11:40 बजे तक चलनेवाला यह कैम्प हर प्रकार से क्रियाकलाप पर आधारित होगा। इसमें बच्चे तरह-तरह की कलाएं सीखेंगे, जिससे उनमें छिपी प्रतिभा को निखरने का मौका मिलेगा तथा उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा। चिरंजीवी स्कूल के इस कैम्प का बच्चों को साल भर इंतजार रहता है, जहां बच्चे नये कौशल सीखते हैं। कैम्प में मैजिक शो, डांस, म्यूजिक, टैलेंट हंट, रैंप वॉक, क्विज कंम्पीटिशन, पॉट मेकिंग, कविता पाठ, कराटे, एक्सटेंपोर, फैशन शो, योगा जैसी अनेक गतिविधियां आयोजित की जायेंगी। हर एक बच्चे की प्रतिभा को निखारने के लिए, उनकी उम्र के हिसाब चार ग्रुप में विभाजित किया गया है। इसमें अलग-अलग गतिविधियां संचालित की जायेंगी और कैम्प के दौरान सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करनेवाले बच्चे को अंतिम दिन समर प्रिंस तथा समर प्रिंसेस का खिताब दिया जायेगा। कैम्प में बच्चों को ताजा खाना बना कर उपलब्ध कराया जायेगा। कैम्प 08 मई से 18 मई तक चिरंजीवी प्ले स्कूल, कुसुम विहार में चलेगा।

जदयू के पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष अशोक चौधरी निष्कासित

रांची : जदयू के पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष सह संथाल परगना प्रमंडल प्रभारी अशोक चौधरी को छह वर्ष के लिए निष्कासित कर दिया गया। चौधरी पर जदयू पार्टी के विरोध में बैठक बुलाने, प्रदेश नेतृत्व के खिलाफ बयान देने, पार्टी के अनुशासन को भंग करने और दल विरोधी गतिविधि में शामिल होने का आरोप है। इस संबंध में मंगलवार को जदयू के महासचिव सह मुख्यालय प्रभारी भगवान सिंह ने उनके निष्कासन से सम्बंधित पत्र जारी किया । इसकी सूचना जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष को भी दे दी गयी है।

रांची से चोरी किया ऑटो बक्सर से बरामद, तीन गिरफ्तार

रांची : अरगोड़ा थाना पुलिस ने चोरी के ऑटो को बिहार के बक्सर के नवाबाजार थाना क्षेत्र से बरामद करते हुए तीन चोर को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार चोरों में जितेन्द्र यादव, अरविंद कुमार यादव और शंकर कुमार यादव शामिल है। इनके पास से चोरी का ऑटो बरामद किया गया है। डीएसपी अमर कुमार पांडेय ने बताया कि सात जनवरी को राकेश शर्मा ने थाने में ऑटो चोरी होने का मामला दर्ज कराया था।

गांव, गरीब, किसान व युवा के लिए समर्पित है मोदी सरकार : संजय सेठ

संवाददाता

रांची : रांची के सांसद संजय सेठ ने इचागढ़ के विभिन्न क्षेत्र मे जनसंपर्क अभियान चलाया इस अवसर पर सांसद संजय सेठ ने कहा कहा गांव गरीब किसान युवा के लिए समर्पित है मोदी सरकार झारखंड की सरकार अखंड भ्रष्टाचार में लिप्त है गठबंधन की सरकार ने वादा किया था कि प्रत्येक साल 5 लाख युवाओं को नौकरी देंगे क्या हुआ नौकरी नहीं तो बेरोजगारी भत्ता देंगे उसका क्या हुआ। झारखंड के गठबंधन की सरकार ने यहां के गांव गरीब किसान युवा के साथ धोखा करने का काम किया है आज जिस प्रकार इंडिया गठबंधन के सरकार के एक मंत्री के अप्त सचिव के घर से जिस तरह रुपए बरामद हुए हैं यह झारखंड को फिर से शर्मसार किया है। झारखंड के लिए यह बहुत ही दुर्भाग्य की बात है झारखंड के मुख्यमंत्री जमीन घोटाले में जेल में है। उनके अधिकारी मनी लांड्री के केस में जेल में है। आज उनके मंत्री आलमगीर आलम के अप्त सचिव के यहां 30 करोड़ से अधिक नगदी बरामद होती है। श्री सेठ ने कहा मोदी की सरकार ने किसानों को साल में 6000 देती है झारखंड में रघुवर दास की सरकार थी तो किसानों को प्रति एकड़ 5000 दिया जाता था जैसे ही गठबंधन की सरकार आई इस स्कीम को तुरंत बंद कर दिया नरेंद्र मोदी ने गांव की महिलाओं के लिए शौचालय की व्यवस्था की

- झारखंड की सरकार अखंड भ्रष्टाचार में लिप्त
- 01 साल में 5 लाख नौकरी देने का वादा कर सत्ता में आयी कांग्रेस, झारखंड मुक्ति मोर्चा की सरकार क्या हुआ नौकरी का

प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत घर दिया ,महिला पहले लकड़ी पर खाना बनाती थी धुएं से मां बहन बीमार पड़ जाती थी मोदी जी ने गैस चूल्हा और सिलेंडर देकर उनके तकलीफ को दूर किया, देश में रोजगार के अवसर प्रदान किया, बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ को सशक्त किया। जनधन खाता हो या आयुष्मान कार्ड के तहत 5 लाख तक मुफ्त में इलाज अब मोदी जी ने एक बड़ा काम किया है 70 साल से ऊपर के लोगों को मुफ्त में इलाज यह देश में पहली बार होने जा रहा है। यह मोदी की गारंटी है मोदी है तो संभव है अब मोदी जी महिलाओं को सशक्त करने के लिए लखपतियां दीदी बना रहे हैं, महिलाओं को सशक्त करने के लिए 33 % आरक्षण की व्यवस्था प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने की कांग्रेस परिवारवाद की राजनीति करती है भाजपा सबको जोड़कर समाज के लिए कार्य करती है। झारखंड में लूट तंत्र की सरकार चल रही है झारखंड की सरकार ने यहां की गरीब जनता की जमीन लूटी, उनका हक छीना, सेना की जमीन लूटी, यहां के खनिज संपदा को लूट और तो और यहां के बालू तक को लूट कर अपनी तिजोरी भर ली वही एक और नरेंद्र मोदी गरीब के मसीहा है जिन्होंने अभी तक 25 करोड लोगों के जीवन में परिवर्तन लाया इसलिए झारखंड को बचाने के लिए नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाएं झारखंड में लोकतंत्र के नाम पर लूट तंत्र चल रहा है इंडिया गठबंधन ने राज्य की ऐसी हालत कर दी है कि हम विकास, रोजगार ,और भ्रष्टाचार ,मिटाने की कल्पना भी नहीं कर सकते। आज के इस अवसर पर हरे लाल महतो ,दिनेश कुमार ,मधु गोराई ,सारथी महतो, मदन सिंह सरदार ,कमलेश राम , फटीक चंद गोराई, ठाकुरदास महतो, विश्वनाथ उरांव, दिलीप महतो, देवाशीष राय, मनोज महतो, खुदी सिंह सरदार, अनीता पारित, मनोरंजन महतो, दिवाकर सिंह, विशाल चौधरी ,अनिल सिंह ,ठाकुरदास ,सहित सैकड़ो की संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

अमर बाउरी ने राहुल गांधी और आलमगीर आलम से पूछे सवाल

कांग्रेस विधायक दल के नेता उनकी सभा में क्यों नहीं दिखे?

संवाददाता

रांची। नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी ने कहा कि भाजपा विधायक दल का नेता होने के नाते मैं कांग्रेस विधायक दल के नेता आलमगीर आलम और राहुल गांधी से यह जानना चाहता हूं कि कांग्रेस विधायक दल के नेता आज उनकी सभा में क्यों नहीं दिखे? वे कहां छुपे हुए थे? बाउरी भाजपा के हरमू रोड स्थित मीडिया सेंटर में मंगलवार को संवाददाताओं को संबोधित कर रहे थे। बाउरी ने कहा कि झारखंड और झारखंडियों के लुटे हुए पैसे का जो नंगा नाच इस महा गठबंधन की सरकार में किया जा रहा है उससे पूरे झारखंड शर्मसार हो रहा है। पैसों की गड्डी का पहाड़ जिस तरह से झारखंड में मिल रहा है उससे कहा जा सकता है कि इसकी नींव कांग्रेस ने आजादी के बाद से ही रख दी थी। भ्रष्टाचार, तुष्टीकरण और परिवारवाद की जननी यह कांग्रेस पार्टी ही है, जो लगातार देश के संसाधनों को दीमक की तरह

खा कर खोखला कर रही है। यदि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पिछले 10 वर्षों से देश की बागडोर नहीं होती तो यह स्थिति और भी भयावह हो गयी होती।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि भ्रष्टाचार के आरोप में जेल में बंद मुख्यमंत्री, जो इन सभी के सरगना है, उन्होंने चुनाव को प्रभावित करने के लिए न सिर्फ ट्रांसफर-पोस्टिंग और टेंडर मैनेज के नाम पर पैसों की उगाही की, बल्कि अपने पसंद के अधिकारियों को भी चुनाव प्रभावित करने के लिए काम में लगा दिया है। बाउरी ने कहा कि पलामू में प्रधानमंत्री मोदी की जनसभा और रांची में आयोजित रोड शो में जिस तरह से जिला प्रशासन ने आमजन को सभा में सम्मिलित होने से रोका और मीडिया वालों के हाथों से माइक छीन ली है इससे साफ लगता है कि महागठबंधन की सरकार हर कीमत पर इस चुनाव को प्रभावित करने का मन बना चुकी है। राजद सुप्रीमो लालू यादव के बयान पर उन्होंने कहा कि इंडी एलाइंस का घोषणा पत्र मुस्लिम ध्रुवीकरण को बढ़ावा देने का काम कर रही है, जिसे देश की जनता कभी भी पूरी नहीं होने देगी।

रांची पुलिस ने उग्रवादियों के खिलाफ चलाया अभियान

रांची : रांची पुलिस ने बुढ़मू थाना क्षेत्र में प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन तृतीय सम्मेलन प्रस्तुति कमेटी(टीएसपीसी) के उग्रवादियों के जमावड़े की सूचना पर मंगलवार को छापेमारी की। पुलिस का भनक लगते ही उग्रवादी जंगल में भागने लगे। उग्रवादियों को पुलिस टीम के जरिये काफी दूर तक पीछा किया गया। लेकिन उग्रवादी घने जंगल एवं पहाड़ का लाभ उठाकर भागने में सफल रहे। पुलिस टीम ने सर्च के दौरान उग्रवादियों का एक लुटा हुआ अपाची बाइक बरामद किया है।

लोकसभा चुनाव में मतदाता पहचान पत्र बांटने के लिए कड़ी मशक्कत कर रहा डाक विभाग

संवाददाता

रांची : झारखंड में लोकसभा चुनाव के चौथे, पांचवें, छठे और सातवें चरण में मतदान होना है। इससे पहले सभी नए मतदाताओं तक मतदाता पहचान पत्र पहुंचाने की कवायद में डाक विभाग भी मशगूल है। विभागीय कर्मचारी नया वोटर आईडी कार्ड लोगों तक पहुंचाने के लिए दिन-रात मेहनत कर रहे हैं। इस संबंध में रांची के शहीद चौक स्थित डाक विभाग के कार्यालय में तैनात मुख्य डाकपाल एस गोराई ने बताया कि लोगों के घरों तक वोटर आईडी कार्ड पहुंचाने के लिए करीब 55 डाकिया काम कर रहे हैं जबकि 15 से 20 कर्मचारी कार्यालय में लगातार कार्यरत हैं। उन्होंने बताया कि पिछले छह महीने से यह काम लगातार चल रहा है। अब तक 15 से 20 लाख लोगों तक वोटर आईकार्ड पहुंचाने का काम किया गया है। साथ ही 25 मई से पहले रांची जिले के बचे हुए 55 से 60 हजार वोटर कार्ड मतदाताओं तक पहुंचाने का लक्ष्य पूरा कर लिया जाएगा। डाक विभाग के कर्मचारी नवनीत कुमार और नवीन कुमार का कहना था कि लोकतंत्र के इस महापर्व में प्रत्येक व्यक्ति को शामिल होना चाहिए। यदि एक व्यक्ति भी मताधिकार का प्रयोग नहीं कर पाता है तो इसका असर देश की सरकार बनाने पर पड़ेगा।

ईटकी प्रखंड के कुंडी पंचायत भवन में डालसा का डोर-टू-डोर कार्यक्रम

वादों के निस्तारण का सुलभ माध्यम है लोक अदालत : शिवानी

संवाददाता

रांची : डोर-टू-डोर कार्यक्रम को जारी रखते हुए ईटकी प्रखण्ड के कुंडी पंचायत भवन में 'विधिक सेवा आपके द्वार' कार्यक्रम का अयोजन किया गया। कार्यक्रम में एलएडीसीएस अधिवक्ता शिवानी सिंह, पीएलवी बेबी देवी, उमेश कुमार, रीना लिंडा, संगीता सिंह एवं राजा वर्मा, उपस्थित थे। अधिवक्ता, शिवानी सिंह ने नालसा के 10 स्कीमों के बारें में जानकारी दी। बाल-विवाह, दहेज प्रथा, डायन बिसाही, कन्या भ्रूण हत्या इत्यादि विषय के संबंध में न्याय प्राप्त करने हेतु उपाय के संबंध में जानकारी दी। ग्रामीणों को डालसा के तरफ से निःशुल्क विधिक सेवा प्राप्त करने के तरीकों के बारे में भी बतायी। जागरूकता कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बेबी देवी, सतीश एवं उमेश ने गरीब तबके के लोगों को वृद्धा पेंशन और मजदूर निबंधन कार्ड एवं उससे होनेवाले लाभ के बारे में जानकारी दी। अंत में पीएलवी घर-घर जाकर लोगों की समस्याओं को जाना और समस्याओं के निबटारा के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकार, रांची में आवेदन देने की बाते कहीं। सुश्री सिंह ने एमएसीटी वादों पर मुआवजा प्राप्त करने की जानकारी भी साझा की। ज्ञात हो कि दिनांक 08 जून को आयोजित होनेवाली मोटर वाहन दुर्घटना वादों से संबंधित विशेष लोक की जानकारी पीएलवी के द्वारा दी गयी।

सीसीएल में नवनियुक्त प्रबंधन प्रशिक्षुओं के लिए इंडक्शन प्रोग्राम का आयोजन

संवाददाता

रांची : मंगलवार को सीसीएल में प्रतिभा को निखारने और उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के साथ नवनियुक्त अधिकारीयों को कम्पनी के विविध कार्यो से परिचित कराने के उद्देश्य से मैनेजमेंट ट्रेनी इंडक्शन प्रोग्राम का आयोजन किया गया। अवसर विशेष पर सीसीएल निदेशक (वित्त) पवन कुमार मिश्रा, निदेशक (कार्मिक) हर्ष नाथ मिश्र ,निदेशक (तकनीकी/योजना एवं परियोजना) सतीश झा, निदेशक (तकनीकी/संचालन) हरीश दुहान, मुख्य सतर्कता अधिकारी पंकज कुमार,जीएम (एचआरडी) आर के पांडेय ,जीएम (अधिकारी स्थापना) एस के ठाकुर, जीएम (ऑपरेशन) मेराज अहमद और एचओडी (श्रमशक्ति) कविता गुप्ता एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र में निदेशकगणों ने प्रशिक्षुओं के लिए अमूल्य सलाह दिए एवं अपने कायार्नुभवों को साझा किया। आज कुल 12 प्रबंधन प्रशिक्षुओं ने कंपनी में अपने पेशेवर जीवन के यात्रा शुरू की। इनमे एक महिला खनन इंजीनियर भी शामिल थी जो कंपनी के कार्यबल में विविधता और समावेशिता को प्रदर्शित करता है। जीएम (एचआरडी) श्री आर के पांडेय ने कार्यक्रम के आरम्भ में सभी गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत किया। सत्र के दौरान, निदेशकगणों और मुख्य सतर्कता अधिकारी ने सौंपी गई भूमिकाओं को पूरा करने में समर्पण और ईमानदार प्रयास के महत्व को रेखांकित किया साथ ही प्रशिक्षुओं से अपने अनुभवों को समृद्ध करने के लिए वरीय अधिकारीयों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने का सलाह दिया। इस कार्यक्रम का आयोजन मानव संसाधन विकास विभाग एवं अधिकारी स्थापना विभाग द्वारा किया गया, जिससे प्रशिक्षुओं के लिए कोल इंडिया/सीसीएल में एक प्रभावशाली शुरूआत सुनिश्चित हो।

सैंकड़ों अल्पसंख्यकों ने प्रधानमंत्री से प्रभावित होकर भाजपा का थामा दामन

संवाददाता

रांची : रांची में लोकसभा से ठीक पहले सौकड़ो अल्पसंख्यकों ने भाजपा का दामन थामा, मंगलवार को मोहम्मद अनवर अपने समर्थकों के साथ भाजपा में शामिल हुआ। मोहम्मद अनवर का स्वागत रांची के विधायक सिपी सिंह ने पट्टा पहना कर किया। अरगोड़ा स्थित संजय सेठ के कार्यालय में सौकड़ो मुस्लिम सहित अन्य समुदायों के लोगों ने भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से प्रभावित हो कर भाजपा में शामिल हुआ। यह कार्यक्रम वरूण साहू के द्वारा करवाया गया। इस कार्यक्रम का संचालन जोनी वर्कर, और मो. रब्बानी, ने किया। शामिल होतें ही मोहम्मद अनवर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में देश दिन-प्रतिदिन प्रगति के पथ पर है। देश में सभी समुदायों को एक समान देखते, उनका हर योजना सभी के लिए बराबर है उन्होंने कहा कि सिर्फ देश ही नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हमारे प्रधानमंत्री कुशल नेतृत्व का परचम लहरा रहे हैं। मौके पर मो. रब्बानी, जोनी वर्कर राजा अंसारी, एस्टीया खान, रफीक अंसारी, अब्दुल खान, सेराज खान, समीम अंसारी, खलील खान, साकिब अंसारी, रुस्तम अंसारी,चेतन साहू,कुमार साहू, रविंद्र जायसवाल, पारस, नीमूल, कामाख्या, अजय, अविनाश, संजय संग कई लोगों ने भाजपा का दामन थामा।

छठे चरण का चुनाव, स्क्रूटनी में 22 की उम्मीदवारी रद्द

सातवें चरण के लिए नामांकन के पहले दिन तीन ने दाखिल किया पर्चा

- जब्ती का आंकड़ा 01 अरब से ऊपर जाकर 01 अरब 10 करोड़ 36 लाख हुआ

संवाददाता

रांची : मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने कहा है कि छठे चरण के चुनाव के लिए दाखिल नामांकन की स्क्रूटनी में 22 उम्मीदवारों का पर्चा रद्द हो गया है। सबसे अधिक 07 उम्मीदवारों का पर्चा गिरिडीह संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से रद्द हुआ है। यहां अब कुल 18 प्रत्याशी चुनाव मैदान में बचे हैं। धनबाद संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से 03 का पर्चा रद्द हुआ है। अब यहां कुल 25 उम्मीदवार बचे हैं। रांची संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से 06 लोगों का पर्चा खारिज हुआ है। यहां से अब 27 प्रत्याशी चुनाव मैदान में हैं। वहीं, जमशेदपुर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से भी 6 लोगों का पर्चा रद्द हुआ है। यहां अब 26 उम्मीदवार बचे हैं। इस चरण में नाम वापसी की अंतिम तारीख 09 मई है। सातवें चरण के चुनाव में नामांकन के पहले दिन कुल तीन प्रत्याशियों ने नामांकन का पर्चा दाखिल किया है। उसमें राजमहल (अनुसूचित जनजाति के लिए सुरक्षित) संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से एक नामांकन दाखिल किया गया है। गोड्डा संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से दो लोगों ने नामांकन पत्र भरा है। जबकि, दुमका (अनुसूचित जनजाति के लिए सुरक्षित) संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से पहले दिन एक भी नामांकन नहीं किया गया।

चुनाव की अधिसूचना जारी होने के बाद से झारखंड में सामान और नकदी की जब्ती का आंकड़ा एक अरब से ऊपर जाकर 01 अरब 10 करोड़ 36 लाख हो गया है।

100वां श्री सुंदरकांड श्री हनुमान चालीसा पाठ

संवाददाता

रांची : भूत पिशाच निकट नहीं आवे महावीर जब नाम सुनावे के सुरताल से हरमू रोड का श्री श्याम मंदिर गूंज रहा था। अवसर था 100 वा श्री सुंदरकांड श्री हनुमान चालीसा के संगीतमय पाठ का। श्री श्याम मित्र मंडल के द्वारा हरमू रोड के श्री श्याम मंदिर में प्रत्येक मंगलवार को होने वाला 100 वा कार्यक्रम आज धूमधाम से संपन्न हुआ। अमरनाथ टेकरीवाल इंदु देवी टेकरीवाल ने परिवार संग हनुमान जी महाराज की दिव्य अखंड पावन ज्योति प्रज्वलित करके केसरिया पेड़ा गुड़ चना फल का प्रसाद अर्पित कर परिवार के लिए खुशहाली की प्रार्थना की । मंडल के उपमंत्री अनिल नारनोली ने पूजन अनुष्ठान विधिवत संपन्न करवाया। श्रवण ढानढनिया ने चना प्रसाद की सेवा केसरिया पेड़ा सेवा श्रीमती पुष्पा देवी पोद्दार ने निवेदित की। अमरनाथ टेकरीवाल ने रामचरितमानस ग्रंथ व पाठ वाचको का चंदन वंदन किया । श्री गणेश वंदना करके हनुमान चालीसा का पाठ किया गया । पाठ वाचक मनीष सारस्वत ओम शर्मा ने अपने सहयोगियों के साथ ढोलक डफली झांझ करताल के सुरताल के साथ श्री सुंदरकांड का पाठ प्रारंभ किया। मंदिर परिसर में उपस्थित सैकड़ो भक्तों ने भक्ति भाव से सामूहिक रूप से पाठ किया। पाठ के मध्य में भजनों का गायन भी किया गया। बजरंगबली की जय जयकारों से हरमू रोड गूंज रहा था।

पाठ के समापन के बाद श्री हनुमान चालीसा का संगीतमय संकीर्तन करके महाआरती की गई । सभी भक्तजनों को केसरिया पेडा चना गुड़ फल व नारियल का प्रसाद वितरित किया गया । इस अवसर पर मंडल के अध्यक्ष सुरेश सरावगी श्रवण ढानढनिया कौशल चौधरी आदि उपस्थित थे।

अमावस्या महास्नान पर्व

श्री श्याम मंदिर हरमू रोड में खादूधाम की परंपरा के अनुसार बुधवार 8 मई को वैशाख माह के अमावस्या का स्नान कराया जाएगा । सुबह मंगल आरती के बाद मंदिर के आचार्य द्वारा विधि विधान से अमावस्या पर्व का स्नान कराया जाएगा । तत्पश्चात कोलकाता से मंगाए गए विभिन्न प्रकार के फूलों से बाबा श्याम को सजाकर पंचमेवा का भोग एवं नवीन पोशाक पहनाया जाएगा श्रृंगार आरती सुबह 8:30 बजे की जाएगी।

शनिवार को श्री श्याम भंडारा

11 मई शनिवार को हरमू रोड के श्री श्याम मंदिर में 111 वा श्री श्याम भंडारा सायं 5:00 बजे से होगा । मंडल के अध्यक्ष सुरेश सरावगी ने भक्तों का आमंत्रित किया है ।

परशुराम जयंती पर 10 मई को शोभा यात्रा निकालेगी मारवाड़ी ब्राह्मण सभा

संवाददाता

रांची। मारवाड़ी ब्राह्मण सभा भगवान श्री परशुराम जयंती पर 10 मई को विभिन्न आयोजन करेगी। ब्राह्मण सभा रांची में प्रातः 9 बजे सालासर मंदिर प्रांगण मे हवन व पूजन का आयोजन किया गया है। इसमें मुख्य यजमान योगेश सारस्वत सहपत्नी रहेंगे। आचार्य श्याम सुंदर भारद्वाज हवन पूजन सम्पन्न कराएंगे।

संस्था के अध्यक्ष रमेशचंद शर्मा और मंत्री किशनलाल शर्मा ने बताया कि परशुराम जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में 3 बजे से विशाल शोभा यात्रा निकाली जाएगी। इसमें 501 निशान ध्वजा के साथ भजन

मंडली, अनुपम झांकी, ढोल नगारा, बैंड बाजा संग नगर भ्रमण करेंगे।

शोभा यात्रा ब्राह्मण भवन से प्रस्थान कर कार्ट सराय रोड, ईस्ट मार्केट रोड, मारवाड़ी टोला, गांधी चौक, शहीद चौक, जैन मंदिर रोड, बडालाल स्ट्रीट, सेवा सदन पथ करते हुए पुनः ब्राह्मण भवन पहुंचेगी। इसके संयोजक अशोक पुरोहित व सुनील शर्मा, सह संयोजक नथमल शर्मा, अमित सारस्वत, कमल शर्मा 'कल्लू', मनीष शर्मा व चेतन शर्मा को मनोनीत किया गया है।

संयोजक अशोक पुरोहित व सुनील शर्मा ने बताया कि आयोजन को लेकर तैयारियां जोर शोर से चल रही है। उन्होंने कहा कि शाम 6.30 बजे शोभा यात्रा समापन आरती, सांय 7 बजे से प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण समारोह और शाम 7.30 बजे से श्री परशुरामजी जन्मोत्सव का सामूहिक प्रसाद वितरण का आयोजन किया गया है। निवर्तमान अध्यक्ष रविशंकर शर्मा ने बताया कि शोभायात्रा में समाज के गणमान्य, प्रबुद्धजन, राजनीतिक प्रतिनिधि, महिला बहने एवं बच्चे शामिल होंगे। उन्होंने समाज से अपील की कि वे इस पावन अवसर पर ज्यादा से ज्यादा संख्या में शामिल होकर समस्त आयोजन को सफल बनाये। शोभा यात्रा में विशेष रूप से देश का महापर्व लोकसभा चुनाव में शत प्रतिशत मतदान करने की अपील की जाएगी।

शोभायात्रा व समस्त आयोजन को सफल बनाने में अरुण जोशी, प्रदीप शर्मा, महेंद्र शर्मा,श्याम सुंदर गोवला, गुलाब शर्मा, ललित माटोलिया, विनय जोशी, अनिल शर्मा, धर्मचंद शर्मा, अमित शर्मा, मनोज शर्मा, पायल शर्मा, अनिता शर्मा, अमृता शर्मा सक्रिय रूप से लगे हुए हैं।

संक्षिप्त

धनबाद रेल मंडल ने चलाया टिकट चेकिंग अभियान

धनबाद : धनबाद मंडल द्वारा मंडल के विभिन्न खण्डों में बड़े स्तर पर टिकट चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में सोमवार 6 मई को मंडल के धनबाद, गोमो, कोडरमा, डाल्टनगंज, चोपन, बरकाकाना, सिंगरौली स्टेशनों में गहन टिकट चेकिंग अभियान चलाया गया। वही टिकट जांच की जानकारी अधिकारियों ने मंगलवार को दी। इस दौरान कुल 2016 यात्रियों को पकड़ा गया, जिसमें बिना टिकट यात्रा कर रहे यात्री, बिना उचित प्राधिकार के यात्रा करने वाले यात्री, बिना बुक किये गए सामान के साथ यात्रा कर रहे यात्रीगण शामिल थे। इस दौरान उनसे 11 लाख 37 हजार 590 रूपए जुर्माने के रूप में राशि प्राप्त की गई। चेकिंग अभियान में 150 टिकट चेकिंग कर्मियों को लगाया गया था। रेल अधिकारियों ने बताया कि चेकिंग टीमों द्वारा स्टेशनों एवं विभिन्न मेल/एक्स्प्रेस ट्रेनों में भी चेकिंग किया गया। मंडल रेल प्रबंधक के निर्देश पर टिकट चेकिंग अभियान चलाया गया।

चुनाव प्रशिक्षण के दौरान बिगड़ी तबीयत, रास्ते में मौत

पलामू : चुनाव प्रशिक्षण के लिए मेदिनीनगर शिक्षक की मौत हो गयी। हुसैनाबाद के महुदंड पंचायत अंतर्गत राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय के सहायक अध्यापक अवध किशोर राम की मौत हो गई। चुनाव प्रशिक्षण लेने के दौरान उनकी तबीयत खराब हुई थी। रिम्स ले जाने के दौरान उनकी मौत हो गई। शिक्षक ने बताया कि पत्र में उल्लेखित समयानुसार प्रशिक्षण स्थल पर पहुंचकर अवध किशोर राम अपना मतदान देने के लिए लंबी कतार में खड़े थे। तभी अचानक उल्टी होने के बाद वह अचेत होकर गिर पड़े। शिक्षकों ने परिजनों को सूचना दी, सहायक अध्यापक अवध किशोर राम की आकस्मिक मौत पर आंकलन सफल सहायक अध्यापक संघर्ष मोर्चा हुसैनाबाद ने गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा है कि चुनाव आयोग और जिला प्रशासन से परिवार के एक सदस्य को नौकरी व आश्रित को उचित मुआवजा देने की मांग की है। सहायक अध्यापक की आकस्मिक मौत पर हुसैनाबाद के बीईईओ रामनरेश राम ने गहरा दुःख प्रकट किया है।

मौसम ने बदला मिजाज गर्मी से मिली राहत

चरही : झारखंड में एक बार फिर मौसम का मिजाज बदल चुका है, जिसका असर मंगलवार को देर शाम देखने को मिला। मंगलवार देर शाम से चुरचू प्रखंड समेत कई जगहों में मूसलाधार बारिश शुरू हो गई वहीं ओलावृष्टि भी हुई, जिससे लोगों को प्रचंड गर्मी से राहत मिली है। लंबे समय से लोग गर्मी के कहर से परेशान थे। वहीं हीट वेव भी लोगों को खूब सता रहा था, लेकिन मंगलवार को मौसम ने करवट लिया है, और तेज धूप की जगह मूसलाधार बारिश हुई। चुरचू प्रखंड क्षेत्र के कई हिस्सों में बारिश शुरू हो गई है जिसे लोग राहत की सांस ले रहे हैं। लंबे समय से लोग गर्मी से परेशान थे। वहीं मौसम विभाग की ओर से 6 मई से मौसम में बदलाव की संभावना जताई गई थी, जिसका असर मंगलवार को देखने को मिला।

व्यवसायी से पांच लाख की रंगदारी, गोली मारने की धमकी

पलामू : जिले के छतरपुर नगर पंचायत अंतर्गत ठाकुरबाड़ी मंदिर के नजदीक छत्तरपुर निवासी व्यवसायी रितेश कुमार आनंद उर्फ राजा गुप्ता को जान से मारने की धमकी मिली है। खाटिन निवासी संतोष गुप्ता को गोली मारने का मामला अभी ठंडा भी नहीं हुआ था कि एक और व्यवसाई को जान से मारने की धमकी दी जा रही है। अज्ञात व्यक्ति द्वारा फोन पर यह धमकी दी गई है। व्यवसायी रितेश ने मंगलवार को बताया कि फोन पर धमकी देते हुए 5 लाख रुपए की रंगदारी मांगी गई है। नहीं देने पर शाम तक गोली मारने की चेतावनी दी गई है। इस मामले के लिए छत्तरपुर थाना में आवेदन देकर थाना प्रभारी से जानमाल की गुहार लगाई है। ठाकुरबाड़ी मंदिर बस स्टैंड के कपड़ा व्यवसायी रितेश कुमार आनंद ने अपने परिजनों पर धमकी दिलवाने के आरोप लगाया है।

भाकपा माले वाले आपसे लड़ेंगे, आपके लिए नहीं : अन्नपूर्णा

संवाददाता

कोडरमा : केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री और कोडरमा संसदीय क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी अन्नपूर्णा देवी ने कहा कि जनता को अराजक, हिंसक और मतलबपरस्त भाकपा माले से सावधान रहने की जरूरत है। एक वायरल वीडियो का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि भाकपा माले के गुंडे अपने प्रभाव क्षेत्र में आए दिन राहगीरों, छोटे दुकानदारों, वाहन चालकों आदि से अवैध वसूली करते हैं और इनकार करने पर मारपीट और गाली गलौज करते हैं। अभी तक तो इनकी अराजकता एक खास इलाके तक सीमित है लेकिन ये अपनी गुंडागर्दी का विस्तार पूरे कोडरमा लोकसभा क्षेत्र में करने का मंसूबा पाले बैठे हैं। झामुमो, कांग्रेस और राजद को इनकी गुंडागर्दी से फायदा है और भाकपा माले इन दलों के गठबंधन वाली सरकार की लूट में हिस्सेदार है। यही कारण है कि इन दिनों ये साथ साथ हैं। ये लुटेरा गठजोड़ झारखण्ड और खासकर कोडरमा लोकसभा क्षेत्र की शांतिप्रिय मेहनतकश जनता के लिए खतरनाक है। इस गठजोड़ के मंसूबे को किसी कीमत पर पूरा नहीं होने देना है। सतगांवा प्रखण्ड के विभिन्न गांवों में जनसंपर्क के क्रम में अन्नपूर्णा देवी ने ये बातें कहीं। अन्नपूर्णा देवी ने कहा कि कल पूरे देश ने देखा कि राज्य सरकार के एक मंत्री के पीएस के नौकर के घर से करीब 35 करोड़ रुपए मिले। लेकिन भाकपा माले प्रत्याशी या गठबंधन के किसी नेता के मुंह से एक शब्द नहीं निकला। यह चुप्पी सिद्ध करती है कि लूट के माल में सबका हिस्सा है। उन्होंने कहा कि भाकपा माले के लोग अपनी चोरी और नाकामी छिपाने के लिए हमेशा झूठ का सहारा लेते हैं। झारखण्ड के बच्चे बच्चे को पता है कि अभ्रक, ढिबरा, बालू और पत्थर का कारोबार राज्य का विषय है और हेमंत सरकार की उपेक्षा के कारण इन सबका वैध कारोबार संकट में हैं।

लोगों को यह भी पता है कि राज्य सरकार के संरक्षण में झामुमो, भाकपा माले, कांग्रेस और राजद के लोग धड़ल्ले से बालू, पत्थर, ढीबरा आदि का अवैध कारोबार कर रहे हैं। इसके बावजूद बेशर्मी के साथ इसके लिए केंद्र की मोदी सरकार को जिम्मेवार ठहराया जा रहा है।

लोग जागरूक हैं, साजिश - सियासत - सेवा - सरोकार सब कुछ समझते हैं। उन्हें पता है कि एक तरफ लुटेरों की जमात है जो जहां मौका मिलता है, जनता की गाढ़ी कमाई लूटकर अपनी तिजोरी भर लेता है। एससी, एसटी और ओबीसी के आरक्षण में सेंधमारी कर धर्म के आधार पर अपने वोट बैंक को आरक्षण देता है। दूसरी तरफ, चौकीदार है जो इन चोरों की काली कमाई पकड़कर इन्हें जेल भेज रहा है। लूट का माल इन्होंने अपने सीए के पास छिपाया हो, अपने पीएस के नौकर के घर रखा हो या अपने दलालों को दे रखा हो, सब पकड़ा जा रहा है। ये चौकीदार मुस्तैदी से संविधान, लोकतंत्र और आरक्षण की पहरेदारी कर रहा है। इसलिए मेरे सभी परिवारजन एक स्वर में कह रहे हैं कि कोडरमा को चोर नहीं, चौकीदार चाहिए।

अन्नपूर्णा देवी ने कहा कि भाजपा और इन चोरों की जमात के बीच के भारी फर्क को जनता समझ रही है। जनसंपर्क के दौरान सहज भाव से मेरे परिवारजन, मेरी माताएं - बहनें बताती हैं कि मोदी सरकार ने 10 साल में कितना कुछ बदल दिया। अब खुले में शौच नहीं जाना पड़ता, हर महीने निःशुल्क अनाज मिल जाता है, रसोई से धुंवा गायब हो गया है, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के जरिए घरेलू महिलाएं उद्यमी बन रही हैं, इलाज के लिए आयुष्मान है, स्वरोजगार के लिए मुद्रा और पीएम स्वनिधि है, खेती किसानी के लिए पीएम किसान है। ये सारी सुविधाएं पारदर्शी तरीके से क्रमवार लोगों को मिल रही है। जो थोड़ी बहुत बाधाएं हैं भी, वो कांग्रेस, राजद, झामुमो और भाकपा माले ने ही कमीशन खाने के लिए खड़ी की हैं।

08 जून को एमएसीटी केस को लेकर विशेष लोक अदालत का होगा आयोजन

संवाददाता

मेदिनीनगर : झालसा के दिशा निर्देश पर आठ जून को एम ए सी टी केस के निस्तारण को लेकर बिशेष लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा ।इसे सफल बनाने को लेकर पलामू के प्रधान जिला व सत्र न्यायाधीश नीरज कुमार श्रीवास्तव ने अपने वेश्म मे एम ए सी टी केस के अधिवक्ता व बीमा कंपनी के अधिवक्ताओं के साथ बैठक की।और उन्हें कई सुझाव दिए ।उन्होंने कहा कि एम ए सी टी केस को लेकर आहूत लोक अदालत में अधिक से अधिक मामले निस्तारण करने का लक्ष्य है। साथ ही अधिक संख्या में लोगों को इसके माध्यम से त्वरित लाभ मिले कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि अधिवक्ता गण अपने मुव्वकिल को मामले निस्तारण के प्रति जागरूक करे ।ताकि अधिक से अधिक एम ए सी टी के मामले लोक अदालत में निपटाए जा सके। उन्होंने बीमा कम्पनी व एम ए सीटी केस से जुड़े अधिवक्ता को एक सूची बनाकर देने को कहा ।उन्होंने कहा कि दोनों पक्ष को चाहे वे इन्सुरेंस के तरफ से काम करने वाले अधिवक्ता है या क्लेमेंट के अधिवक्ता दोनो मिल बैठकर मामले निस्तारण का एक रास्ता निकाले ताकि जल्द से जल्द क्लेमेंट को लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि जो भी पक्ष को कोई दिक्कत या समस्या हो तो जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव से मिल कर अपनी बात रखे ।बिदित हो कि पलामू जिले में एम ए सी टी के 292 केस न्यायालयों में लम्बित है ।पीडीजे ने अधिवक्ताओ से उम्मीद जताया हैं कि इसबार के एम ए सी टी के बिशेष लोक अदालत में अधिक से अधिक मामले निस्तारण में सहयोग करेंगे। बीमा कम्पनी व क्लेमेंट के अधिवक्ताओं ने भी पीडीजे को आश्वस्त किया है कि इस बार पूर्ब की अपेक्षा ज्यादा केस। एम ए सी टी के विशेष लोक अदालत में निपटारा कराने का प्रयास है। इस मौके पर डीजे प्रथम विनोद कुमार सिंह, पंचम अभिमन्यु कुमार, षष्टम राज कुमार मिश्रा,सप्तम स्वेता ढिंगरा , अष्टम आयशा खान, जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव अर्पित श्रीवास्तव, निबंधक कमल प्रकाश ,के अलावे बीमा कम्पनी के अधिवक्ता युदिष्ठिर गिरी, सुदेव कुमार दता,अधिवक्ता सी के मिश्रा, राजीव रंजन शलभ कुमार आदि लोग उपस्थित थे।

पलामू से जानेवाले 48 हज यात्रियों को लगा इंजेक्शन, यात्रा की तिथि जल्द होगी मुकर्रर

संवाददाता

पलामू : पलामू से मक्का मदीना हज के लिए जाने वाले 48 हज यात्रियों को मंगलवार को इंजेक्शन लगाया गया। इस सिलसिले में मेदिनीनगर शहर के छहमुहान स्थित जामा मस्जिद में शिविर का आयोजन किया गया। मौके पर इंजेक्शन देने के साथ साथ सभी को पोलियो ड्राप भी पिलाया गया। बता दें कि हज यात्रा की तिथि अभी मुकर्रर नहीं की गयी है। इससे पहले यात्रा को लेकर सभी जायरिनों को पूरी तरह से तैयार किया जा रहा है। इससे पहले गत 30 अप्रैल को जामा मस्जिद में ही शिविर लगाकर प्रशिक्षण दिया गया था। प्रशिक्षक अबू दर्दा, मौलाना नसीम, हासिम अंसारी, पेश इमाम मुफ्ती मोहम्मद शाहनवाज कासमी ने प्रशिक्षण में शामिल हज यात्रियों को हज के सारे रस्म अदा करने की विस्तृत जानकारी दी थी। हेल्थ जांच शिविर का नेतृत्व डा. एसके रवि ने किया। उनके साथ नौडीहा बाजार के चिकित्सा पदाधिकारी डा. रजी अहमद, चिकित्साकर्मी अभय कुमार दुबे, एएनएम मृदुला कुमारी, राजमणि कुमारी, कुमारी श्वेता सिंह आदि शामिल थे।

पलामू जिला हज कमेटी के हाजी सैय्यद शमीम अहमद, हाजी मोबिन अंसारी, महबूब आलम ने संयुक्त रूप से बताया कि इस वर्ष पलामू जिला से 48 लोग हज यात्रा पर जाएंगे। प्रशिक्षण के बाद हेल्थ जांच शिविर लगाकर सभी का चेकअप किया गया। जरूरी इंजेक्शन दिए गए। मक्का मदीना जाने के लिए सभी तैयार हैं। तिथि घोषित होते ही सभी को रवाना किया जाएगा।

प्रधानमंत्री के हाथों को मजबूत करने के लिए रागिनी ने भाजपा को वोट देने की अपील की

झरिया (धनबाद) : आगामी लोक सभा चुनाव को लेकर मंगलवार को भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य श्रीमती रागिनी सिंह ने भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में मतदान करने को लेकर झरिया के मोहरी बांध, तिलाई बनी, लोदना अंबेडकर चौक, खपड़ा धौड़ा, बाजार समेत लोदना के विभिन क्षेत्रों का सघन दौरा कर नुक्कड़ सभाएं की। वहीं, भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में मतदान कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों को और मजबूत कर देश के विकास रथ को आगे बढ़ाने में सहायक बनने की अपील की। इस दौरान स्थानीय महिलाओं एवं अन्य लोगों के बीच मोदी सरकार की उपलब्धियों एवं योजनाओं संबंधी पर्चे बांट कमल के निशान पर ज्यादा से ज्यादा मत देकर भाजपा को ऐतिहासिक जीत दिलाने का आह्वाहन किया। वहीं, स्थानीय महिलाओं ने श्रीमती सिंह को अपनी समस्याओं से अवगत कराया। जहां श्रीमती सिंह ने सभी मामलों पर वार्ता कर सुलझाने का आश्वाशन दिया। मौके पर लोदना मंडल अध्यक्ष राजा राम पासवान, शिबू निषाद, अनिता देवी, संजय महता, विक्की पासवान, पिंटू कुमार, राहुल कुमार, मंटू पासवान, निर्मला पासवान, नागेश्वर पासवान, सूरज यादव, रवि कांत पासवान, चंपा देवी समेत सैकड़ों की संख्या में स्थानीय ग्रामीण मौजूद रहे।

कैंडल जला कर, रंगोली बना कर मतदाताओं को किया जागरूक

धनबाद : सोमवार की संध्या धनबाद प्रखण्ड अन्तर्गत मुनीडीह बाजार के इंदिरा चौक में स्वीप कार्यक्रम के तहत मतदाताओं को जागरूक करने के लिए कैंडल जलाकर एवं रंगोली बनाकर आम नागरिकों को मतदान करने के लिए शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर ग्राम पंचायत दुबराजडीह एवं बरडुभी के मुखिया रमेश कुमार सिंह तथा मनोज कुमार सिंह, पंचायत समिति सदस्य सुधीर कुमार सिंह, राजकीय मध्य विद्यालय के प्रधानाचार्य चन्द्रदेव प्रसाद, सहायक शिक्षक राजु कुमार, बूथ संख्या 449 की बीएलओ शीला सिंह, बूथ संख्या 443 की उषा देवी, बूथ संख्या 442 की रेशमी देवी, ग्राम रोजगार सेवक इनायतुल्लाह, जेएसएलपीएस की स्नेह लता भारती के अलावा बड़ी संख्या में आम नागरिकों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

पुलिस ने किया सड़क लुटेरा गिरोह का उद्भेदन

संवाददाता

लातेहार : पुलिस अधीक्षक अंजनी अंजन ने एक प्रेसवार्ता कर बताया कि गुप्त सुचना मिलने पर अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी, बरवाडीह के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया। गठित टीम के द्वारा प्राप्त सूचना के आलोक में त्वरित कारवाई करते हुए संदिग्ध अभियुक्तो के घर पर छापामारी किया गया जिसमें अभियुक्त पप्पु कुमार सिंह उम्र 23 वर्ष पिता सरजु सिंह सा० गाड़ी (बगई टोला थाना छिपादोहर जिला लातेहार के घर से तीन भरठुआ बंदुक तथा अभियुक्त सोनल सिंह उर्फ बंसत सिंह उम्र 22 वर्ष पिता जितेन्द्र सिंह सा० चान्दो थाना चैनपुर जिला पलामु के वर्तमान पता ग्राम गाडी थाना छिपादोहर जिला लातेहार के बदन से एक देशी पिस्टल बरामद किया गया ।कहा कि उक्त दोनो अभियुक्त एवं उनके सहयोगियो के द्वारा डालटेनगंज- महुआडाड मुख्य पथ, लाभर से केड जाने वाले मार्ग, केचकी संगम मार्ग (बरवाडीह थाना) केचकी चेकनाका होते हिए दुबियाखाड़ जाने वाला मार्ग (बरवाडीह एवं सतबरवा थाना) पर रात्री में चलने वाले राहगीरो को हथियार का भय दिखाकर लुटपाट एवं छिनतई जैसी घटना को अंजाम दिया जाता था। छापामारी दल में पुअनि सह-थाना प्रभारी धीरज कुमार सिंह छिपादोहर थाना,पुअनि रितेश कुमार राव छिपादोहर थाना,पुअनि बिकाशेन्दु त्रिपाठी छिपादोहर थाना, पुअनि राजेश कुमार, छिपादोहर थाना तथा छिपादोहर थाना के रिजर्व गार्ड एवं आईआरबी 01 के सशस्त्र बल शामिल थे।

गिरफ्तार अभियुक्त का नाम

पप्पू कुमार सिंह(23 वर्ष) पिता सरजु सिंह सा० गाड़ी (बगई टोला) थाना छिपादोहर जिला लातेहार। सोनल सिंह उर्फ बंसत सिंह(22 वर्ष) पिता जितेन्द्र सिंह सा० चान्दो थाना चैनपुर जिला पलामु के वर्तमान पता ग्राम गाड़ी थाना छिपादोहर जिला लातेहार ।

जप्त सामान का विवरण

तीन भरठुवा देशी बंदुक, एक देशी पिस्टल।

टाटा स्टील ने की ओपन इनोवेशन प्रोग्राम 'मैटेरियलनेक्स्ट' के विजेताओं की घोषणा

विजेता टीम ने 'पर्यावरण के अनुकूल लचीला स्ट्रेन सेंसर' समाधान प्रस्तुत किया

प्रातः नागपुरी संवाददाता

जमशेदपुर। आईआईटी मद्रास रिसर्च पार्क से वर्जीनिया टेक इंडिया द्वारा पोषित और आईआईआईटीडीएम कांचीपुरम में विकसित की गई महिला-नेतृत्व वाली स्टार्ट-अप टीम 'करोटीमम इनोवेशन प्राइवेट लिमिटेड' को 3 मई, 2024 को जमशेदपुर में आयोजित फिनाले में 'टाटा स्टील मैटेरियलनेक्स्ट' के पांचवें संस्करण का विजेता घोषित किया गया।

डॉ. सनल के मोहनन और दिनेश कुमार की विजेता टीम को डॉ. चित्रा लेखा पी ने मार्गदर्शन प्रदान किया। टीम ने 'इको-फ्रेंडली फ्लेक्सिबल स्ट्रेन सेंसर' समाधान प्रस्तुत किया, जिसके लिए उन्हें 5 लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया गया। इसके अलावा जेएनसीएएसआर (बेंगलुरु) की टीम 'पीजीईसी थर्मोइलेक्ट्रिक्स' ने प्रथम उपविजेता का स्थान हासिल किया। टीम के सदस्यों सुश्री वैशाली तनेजा और रिद्धिमॉय पाठक को डॉ. कनिष्क बिस्वास द्वारा मार्गदर्शन दिया गया। उन्हें 2.5 लाख रुपये का नकद पुरस्कार मिला। उसने 'फोनन-ग्लास इलेक्ट्रॉन-क्रिस्टल जैसी थर्मोइलेक्ट्रिक सामग्री' का प्रदर्शन किया। आईआईटी मद्रास की टीम 'माइनर' जिसने 'स्वेट-फ्री पीपीई जैकेट' प्रस्तुत किया और दूसरे स्थान पर रही। उन्हें 1 लाख रुपये का नकद पुरस्कार मिला।

ग्रैंड ज्यूरी में टाटा स्टील के टेक्नोलॉजी एंड रिसर्च एंड डेवलपमेंट के वाइस प्रेसिडेंट डॉ देबाशीष भट्टाचार्य, टाटा स्टील के टीक्यूएम, ग्रुप स्ट्रेटेजिक प्रोक्योरमेंट एंड सप्लाई चेन के वाइस प्रेसिडेंट पीयूष गुप्ता, टाटा स्टील के आयरन मेकिंग के वाइस प्रेसिडेंट उत्तम सिंह, एनआईटी जमशेदपुर के निदेशक प्रो गौतम सूत्रधार, आईआईटी दिल्ली के प्रो सुधासत्व बसु और आईआईटी खड़गपुर के प्रो सुमन चक्रवर्ती शामिल थे।

आईआईएम अहमदाबाद के प्रो अनिल कुमार गुप्ता (पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित, सीएसआईआर भटनागर फेलो, संस्थापक - हनी बी नेटवर्क, नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन) ने 'सतत औद्योगिक विकास के लिए खुले नवाचारों के उपयोगः विघटन के लिए विविधता' पर व्याख्यान दिया।

टाटा स्टीडल के वाइस प्रेसिडेंट (टेक्नोलॉजी एंड रिसर्च एंड डेवलपमेंट) डॉ. देबाशीष भट्टाचार्जी ने कहा, ह्यजिस तरह हम अपने विजेताओं की सराहना करते हैं और मटेरियलनेक्स्ट 5.0 की सफलता का जश्न मनाते हैं, ऐसे में भारत में इनोवेशन इकोसिस्टम को बढ़ावा देने में इस कार्यक्रम की भूमिका को उजागर करना आवश्यक है। नवाचार ऐसे वातावरण में पनपता है जहां विचार मिलते हैं और अवसर उभरते हैं।

मटेरियलनेक्स्ट डीप-टेक स्टार्टअप्स और इनोवेटर्स को फलने-फूलने के लिए एक मंच प्रदान करता है, जिसमें टाटा स्टील प्रौद्योगिकी अपनाने का समर्थन करता है। यह तो बस शुरूआत है; इन विचारों को पोषित करने के लिए निरंतर प्रयास महत्वपूर्ण हैं। साथ मिलकर, हम अपने देश को तकनीकी नेतृत्व की ओर ले जा सकते हैं। सभी विजेताओं को बधाई और सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद ।ह्

नकद पुरस्कारों के अलावा दोनों ट्रैक से विजेता और उपविजेता टीमों को इवेंट के बाद मेंटरशिप और विकास के अगले स्तर के लिए अनुदान (यदि लागू हो) दिया जाता है। शीर्ष 8 में शेष पांच टीमों को उनके अभिनव समाधान और विचारों का प्रदर्शन करने के लिए 25,000 रुपये का नकद पुरस्कार दिया गया। मैटीरियलनेक्स्ट के पांचवें संस्करण में भारत भर के 54 संस्थानों से 186 अभिनव विचार प्राप्त हुए। प्रस्ताव चार प्रौद्योगिकी थीम क्षेत्रों - एनर्जी मटेरियल, सस्टेनेबल मटेरियल, एडवांस कंपोजिट और फंक्शनल मटेरियल में 'शोध' या 'स्टार्ट-अप' ट्रैक के माध्यम से आमंत्रित किए गए थे। मूल्यांकन के 2 दौर के बाद सर्वश्रेष्ठ 18 आइडियाज का चयन किया गया। अवधारणा की प्रामाणिकता को विकसित करने के लिए मार्गदर्शन के साथ-साथ छोटे राजस्व व्यय के साथ 2 महीने के लिए समर्थन दिया गया। प्री-फाइनल राउंड के माध्यम से, शीर्ष-8 टीम का चयन किया गया और 3 मई, 2024 को ग्रैंड फि नाले के साथ इसका समापन हुआ।

संक्षिप्त

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की सभा 10 को

बोकारो । धनबाद लोकसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी ढुल्लू महतो के पक्ष में केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह आगामी 10 मई को बोकारो में जनसभा को संबोधित करेंगे। उक्त जानकारी देते हुए बोकारो के विधायक बिरंची नारायण ने बताया कि 10 मई को बोकारो के सेक्टर 2 सी स्थित दुर्गा पूजा मैदान में केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह धनबाद लोकसभा भाजपा प्रत्याशी ढुल्लू महतो के पक्ष में विशाल जनसभा को संबोधित करेंगे। बोकारो विधायक ने कहा कि कुशल संगठनकर्ता, प्रखर वक्ता, केंद्रीय रक्षा मंत्री सह- पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ सिंह के आगमन को लेकर कार्यकर्ताओं में खासा उत्साह है। उनकी सभा को सुनने के लिए क्षेत्र की जनता भी उत्साहित है। बोकारो विधायक बिरंची नारायण के आवासीय कार्यालय में जिला भाजपा अध्यक्ष जयदेव राय की अध्यक्षता में मंगलवार को केंद्रीय रक्षा मंत्री के आगमन को लेकर तैयारी बैठक हुई, जिसमें लोकसभा के सह-संयोजक रोहित लाल सिंह, शरद महतो, शशिभूषण ओझा मुकुल, कमलेश राय, संजय त्यागी, वीरभद्र प्रसाद सिंह, इंद्र कुमार झा, माथुर मंडल, विनय किशोर, मनोज सिंह, अनिल सिंह, अभय कुमार गोलू, राजू गुप्ता सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

पुस्तक मकालात-ए-महफूज का लोकार्पण

जमशेदपुर। करीम सिटी कॉलेज (मानगो कैंपस) की सांस्कृतिक तथा साहित्यिक संस्था 'फलक' (फोरम फॉर एक्टिविटीज इन लिटरेचर, आर्ट एंड कल्चर) के तत्वाधान में साहित्यकार एंव उर्दू के प्राध्यापक सैयद महफूज आलम की पुस्तक मकालात-ए-महफूज का विमोचन समारोह आयोजित हुआ। कॉलेज के मल्टीपरपस हॉल में सजाई गई। सभा की अध्यक्षता सैयद शमीम अहमद मदनी (ट्रस्टी अल-कबीर वेलफेयर ट्रस्ट) ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में डॉ मोहम्मद जकरिया (सेक्रेटरी करीम सिटी कॉलेज एवं एजुकेशन डायरेक्टर, करीम्स ट्रस्ट) शामिल हुए। कार्यक्रम का संचालन प्रो गौहर अजीज ने किया। संचालक ने बताया कि यह पुस्तक समीक्षात्मक तथा आलोचनात्मक लेखों का संग्रह है जो कोलकाता से प्रकाशित हुआ है। हिंदी उर्दू के प्रसिद्ध कहानीकार डॉ अख्तर आजाद तथा कोलकाता से आए हुए अतिथि अशरफ अहमद जाफरी ने पुस्तक की समीक्षा प्रस्तुत की।

आंधी और ओलावृष्टि से पेटरवार और गोमिया में कई घर क्षतिग्रस्त

संवाददाता

बोकारो । जिले के गोमिया और पेटरवार प्रखंडों में तेज आंधी और ओलावृष्टि के कारण दर्जनों लोगों के घर क्षतिग्रस्त हो गए। खपरैल मकान और एस्बेस्टस शीट वाले घरों की छत टूट गई।

पेटरवार में चुट्टे पंचायत के खरना, सेवई गांव में सोमवार को ओला वृष्टि और तेज हवा से कई घरों के एसबेस्टस सीट टूट गया। इससे खरना गावं के तुरी टोला मे गीता देवी पति तुलसी रविदास, पार्वती देवी सोनिया देवी पति दशरथ तुरी, मालती देवी पति करू रविदास, रीना देवी, धनेश्वरी देवी, सुकरी देवी पति लेदू तुरी, रेशमी देवी पति रामेश्वर रविदास, दिनेश तुरी, कोलेश्वर तुरी, वहीं सेवई गावं के आशा देवी पति राजू करमाली,

अनीता देवी पति गोपाल महतो के घर की एसबेस्टस शीट ओला-वृष्टि से बड़े-बड़े छेद हो गया, जिससे पानी आने से घर में रहना मुश्किल हो जाएगा। वहीं, चैता मियां, गीता देवी का खपरैल मकान भरभरा कर गिर गया। इस घटना की सूचना चुट्टे के समाजसेवी नरेश तुरी ने बीडीओ महादेव कुमार महतो को दी। इस पर बीडीओ ने आश्वासन देते हुए कहा कि आवेदन दें कार्रवाई होगी।

सोमवार व मंगलवार को ओले एवं आंधी के साथ जोरदार बारिश में जिसे क्षेत्र में पेड़ पौधे सहित कच्चा मकान क्षतिग्रस्त हुए।

वहीं, पेटरवार प्रखंड के चांपी, मायापुर, खेतको सहित कई पंचायतों में भी कच्चे मकान में लगा एसबेस्टस शीट, खपरैल घर तेज बारिश के साथ बड़े-बड़े ओले गिरने से लगभग 300 घरों के सीट व खपरे टूटकर काफी क्षतिग्रस्त हो गए। इसको लेकर मंगलवार को चांपी पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि सीताराम मुर्मू ने क्षतिग्रस्त हुए घरों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने बताया कि चांपी पंचायत में लगभग 300 घरों में एस्बेस्टस शीट एवं खपरैल टूट कर क्षतिग्रस्त हो गया है।

महिला को सांप ने डंसा, पांच घंटे झाड़फूंक में बिता दिए, हो गई मौत

संवाददाता

बोकारो । जिले के पेटरवार थाना क्षेत्र अंतर्गत पतकी पंचायत स्थित गांव रांगामाटी टोला सोहनडीह में सांप के डंसने से एक महिला की मौत हो गई। घटना सुबह करीब 6 बजे की बताई जा रही है। जानकारी के अनुसार पंचायत के स्व. मुटर गंझू की पत्नी शोहबा देवी (50) सुबह उठने के बाद जैसे ही खाना बनाने के लिए किचन में घुसी। घर में मौजूद काले रंग के एक सांप ने उसे डंस लिया। ग्रामीणों के अनुसार वह गेहुअन सांप था। सांप के डंसने पर महिला जोर से चिल्लाई तो परिजन पहुंचे और पूछताछ की। इस दौरान सांप भाग गया। इसके बाद महिला को डाक्टर के पास या अस्पताल के जाने की बजाय लोगो ने घर पर ही महिला की झाड़-फूंक शुरू करा दी। इसके लिए गांव के ही कथित ओझा को बुलाया गया था। झाड़-फूंक करते-करते लगभग पांच घंटे बीत गए। इस बीच महिला की स्थिति और बिगड़ने लगी। अंततः महिला की नाजुक हालत को देखते हुए परिजन महिला को लेकर आईईएल थाना क्षेत्र स्थित अस्पताल ले जाने लगे, लेकिन अस्पताल पहुंचने के पहले ही महिला की मौत रास्ते में ही हो गई। मामले की जानकारी मिलने पर पेटरवार पुलिस दलबल के साथ पीड़ित के घर पहुंची और पूरे घटनाक्रम की जानकारी ली। पूछताछ के बाद पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराया और परिजनों को सौंप दिया। सर्पदंश से हुई मृत्यु को लेकर अंचल अधिकारी अशोक राम ने कहा कि आपदा प्रबंधन के तहत मृतक के परिजनों को चार लाख रुपए मुआवजा दिया जाएगा। वहीं घटना के बाद परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। बता दें कि कि महिला के पति की मौत कुछ वर्ष पहले ही हो चुकी है।

केंद्रीय विद्यालय में अभिभावकों संग प्राचार्य व शिक्षकों की बैठक

संवाददाता

बोकारो थर्मल । बोकारो थर्मल स्थित केंद्रीय विद्यालय में मंगलवार को बारहवीं के विद्यार्थियों उनके अभिभावकों संग स्कूल के प्राचार्य एवं शिक्षकों की बैठक आयोजित की गई।

बैठक की अध्यक्षता स्कूल के प्राचार्य डॉ बीआर डे ने करते हुए अनुशासन, एकेडेमिक उत्कृष्टता, पाठ्यगामी क्रियाकलाप, नैतिक शिक्षा, कक्षा उपस्थिति, अभिभावकों, शिक्षकों, विद्यालय व समाज की भूमिका पर विस्तृत व सारगर्भित संबोधन किया। बैठक में सभी पक्षों पर खुलकर विचार विमर्श किया गया। प्राचार्य ने सभी को आश्वासन दिया कि संपूर्ण विद्यालय परिवार उनके बच्चों के

समुचित व सर्वांगीण विकास हेतु दृढ़ संकल्पित है। उन्होने विद्यार्थियों के समुचित व सर्वांगीण विकास हेतु कार्य योजना प्रस्तुत की। तत्पश्चात विषयवार शिक्षकों ने अपने-अपने विषय से संबंधित विचार व्यक्त किए। कक्षाध्यापकों ने अप्रैल माह में आयोजित मासिक परीक्षा परिणाम का विश्लेषण प्रस्तुत किया एवं एकेडमिक सुधार हेतु लिए गए निर्णय की जानकारी दी। बैठक में उक्त विषय पर बहुत से अभिभावकों ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए। विद्यार्थियों ने भी अपने अनुभव व समस्याओं को सभी के साथ साझा किया।

बोकारो स्टील प्लांट के डीएनडब्लू विभाग के केबल टनल में अग्नि सुरक्षा का पुख्ता प्रबंध

संवाददाता

बोकारो । बोकारो स्टील प्लांट के डीएनडब्लू विभाग के मेन स्टेप डाउन सब स्टेशन के बेसमेंट और उससे जुड़े केबल टनल में फायर रीटार्डेन्ट डोर और फायर बैरियर पैनल का उद्घाटन अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन तथा अतिरिक्त प्रभार संकार्य) राजन प्रसाद ने किया।

इस मौके पर मुख्य महाप्रबंधक (अनुरक्षण) पी के बैसाखिया, मुख्य महाप्रबंधक (सुरक्षा एवं अग्निशमन सेवाएं) बी पी सरतापे, मुख्य महाप्रबंधक (डीएनडब्लू) एन भाटिया, वितरण तंत्र विभाग, सुरक्षा अभियन्त्रण विभाग, सीईडी, अग्नि सेवाएं व अन्य विभागों के

पदाधिकारी एवं कर्मचारी शामिल थे। पावर सप्लाई का वितरण केबल के माध्यम से समस्त विभागों को किया जाता है, जिसे सुचारू रूप से वितरित करने के लिए प्लांट के सभी विभागों को एचटी केबुल नेटवर्क से जोड़ा गया है। अग्नि रोधक द्वार की उपयोगिता तब होती है, जब किसी कारण केबल टनल में आग लग जाती है। अग्नि रोधक द्वार आग को एक कमपार्टमेंट से दूसरे कमपार्टमेंट में जाने से रोकती है। अग्नि रोधक पैनल केबल के आग को आगे बढने से रोकती है, जिससे जान माल का नुकसान कम से कम होता है और प्लांट को सुचारू रूप से चलाने में मदद मिलती है।

डीएनडब्लू विभाग के अग्नि सुरक्षा के प्रबंधन के संदर्भ में दिलीप कुमार गोंड, महाप्रबंधक (डीएनडब्लू) ने बताया कि केबल टनल में अग्नि सुरक्षा के लिए और भी कदम उठाए जा रहे हैं तथा इसके लिए अग्नि रोधक द्वार और अग्नि अवरोधक पैनल जैसे उपकरणों का उपयोग किया जा रहा है।

स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य में बोकारो रोटरी ने लगाया स्वास्थ्य जांच शिविर

संवाददाता

बोकारो । विश्व स्वास्थ्य दिवस पर रोटरी क्लब बोकारो ने अपने 11वां निःशुल्क चिकित्सा जांच शिविर लक्ष्मी मार्केट में आयोजित किया। पारस अस्पताल, रांची के सहयोग से आयोजित इस शिविर में कुल 55 लोगों के बीपी, शुगर, वजन और ऊंचाई आदि की जांच की गई। टीम का नेतृत्व पारस अस्पताल रांची के डॉ एसके ओझा, प्रबंधक शशि आनंद, मीना और शंकर ने किया। अध्यक्ष ने इस तरह की नियमित जांच पर जोर दिया, क्योंकि यह जांच गंभीर जटिलताओं को रोकने में मदद करती हैं। क्लब हर महीने इस तरह के शिविरों का आयोजन करता रहा है और इस से कई वंचित व्यक्तियों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से गंभीर समस्याओं से निपटने में मदद मिली है।

अध्यक्ष ने पारस अस्पताल की टीम और न्यू श्री दुर्गा मेडिकल के

मालिक चिराग राज को धन्यवाद दिया। रोटरी क्लब से अध्यक्ष घनश्याम दास, रो. अशोक तनेजा, रो. (डॉ) अनिल त्रेहन, रो. अशोक केडिया, रो. (डॉ) आर.एन. प्रधान ने सक्रिय सहयोग दिया। मंगलवार को क्लब द्वारा दो दिवसीय नेत्र एवं दंत जांच शिविर का केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1 में समापन हुआ। नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. मनोज कुमार और उनके सहायक बजरंगी कुमार और डॉ. शिवम त्रिपाठी द्वारा नेत्र जांच और दंत जांच जारी रहा। दोनों दिन मिलाकर कक्षा 9 से 12 तक के करीब 500 से ज्यादा छात्र एवं छात्राओं की जांच की गई। जिन छात्रों को समस्या थी, उन्हें क्रमशः डॉ. कुणाल और डॉ. शिवम के क्लीनिक में जाने की सलाह दी गई। अध्यक्ष घनश्याम दास ने प्रधानाचार्य मनोज कुमार को उनके समग्र सहयोग और आतिथ्य के लिए धन्यवाद दिया। अध्यक्ष ने आगे जोर देकर कहा कि इस तरह के जांच शिविर समस्याओं का जल्द पता लगाने में मदद करते हैं और बाद में होने वाली जटिलताओं से बचा जा सकता है। रोटरी क्लब से घनश्याम दास, डॉ प्रधान, डॉ. अनिल त्रेहान, अशोक तनेजा एवं अशोक केडिया शिविर में उपस्थित थे।

वाराणसी से कोलकाता एक्सप्रेस वे के निर्माण को लेकर कैंप कोर्ट का आयोजन

संवाददाता

गोमिया । गोमिया प्रखंड मुख्यालय के सभाकक्ष में मंगलवार को भारतमाला परियोजना फेज टू वाराणसी से कोलकाता एक्सप्रेस वे के निर्माण को लेकर गोमिया अंचल में प्रभावित चार मौजा के लिए अंचलाधिकारी प्रदीप कुमार महतो के नेतृत्व में कैंप कोर्ट का आयोजन किया गया।

इस कैंप कोर्ट में चार मौजा अंतर्गत बारीदारी, इस हरदागढा, महुआटांड, बड़की पुन्नू के संबंधित रैयत ग्रामीण भूमि अधिग्रहण के एवज में अपनी मुआवजा राशि लेने पहुंचे। इसमें जिन रैयतों को अभी तक मुआवजा की राशि नहीं मिली है, उनकी भूमि के दस्तावेजों की जांच के बाद ऑन द स्पॉट मुआवजा राशि का भुगतान किया जाएगा। इस कैंप में मुख्य रूप से बोकारो जिला भू-अर्जन पदाधिकारी द्वारिका बैठा, रामगढ़ जिला के एनएचएआई महेश कुमार, लाईजनिंग ऑफिसर

मनीष पांडेय, नितिन कुमार मौजूद थे। मौके पर भू-अर्जन पदाधिकारी ने कहा कि भारतमाला परियोजना फेज 2 का निर्माण कार्य गोमिया अंचल में बरसात से पूर्व चालू हो जाएगा। इस कैंप कोर्ट में भूमि अधिग्रहण के एवज में रैयतों की लगान रसीद, वंशावली, खतियान, भूमि स्वामी प्रमाण पत्र, बॉन्ड पेपर, आधार कार्ड, बैंक पासबुक की छाया प्रति लेकर मुआवजा राशि का भुगतान ऑन द स्पॉट होगा। इस दौरान भू अर्जन पदाधिकारी से कई रैयत ग्रामीणों ने अपनी भूमि संबंधी विवादित मामलों से अवगत कराया। इसपर भू अर्जन पदाधिकारी ने कहा कि मुआवजा की राशि लेने के लिए आवश्यक दस्तावेज समेत भूमि स्वामी प्रमाण पत्र जरुरी है।

चिन्मय विद्यालय ने मतदाता जागरुकता अभियान चलाकर मतदान प्रतिशत बढ़ाने को किया प्रेरित

संवाददाता

बोकारो । स्थानीय चिन्मय विद्यालय में मंगलवार को मतदाता जागरुकता अभियान आयोजित कर शिक्षकों ने मतदान करने एवं मतदान प्रतिशत बढ़ाने का संकल्प लिया। बच्चे भविष्य के नागरिक हैं और उनके मतदान से ही भविष्य की सरकारें बनेंगी तथा देश का भविष्य बनेगा। इसी संकल्प के साथ मतदान के महत्व समझाने तथा इसके प्रति जागरुकता उत्पन्न करने हेतु विद्यालय में कई कार्यक्रम अयोजित किए गए।

इन सभी कार्यक्रमों में बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। मतदान के महत्व को समझा और संकल्प लिया कि जब वे मतदान के अधिकारी होंगे, तब निश्चित ही सभी अपने मताधिकार का प्रयोग कर देश के नीति-निर्धारण में अपना

योगदान देंगें और वर्तमान में अपने माता-पिता, सगे-संबधियों एवं पड़ोसियों को मताधिकार का प्रयोग करने के लिए आग्रह करेंगे, ताकि मत प्रतिशत बढ़े। देश का लोकतंत्र मजबूत बने और सही निर्णय लेने वाली सरकारें बनें। इस अभियान के तहत नारा लेखन, पोस्टर मेकिंग, भाषण, नुक्कड़-नाटक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और बैनर बनाकर मतदाताओं में वोट के प्रति चेतना उत्पन्न करने और उन्हें जागरुक बनाने को लेकर शपथ ली गई।

प्राचार्य सूरज शर्मा ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम के आयोजन से छात्र भविष्य में एक जागरुक नागरिक बनेंगे और राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देंगे। प्राचार्य ने इस प्रकार के अद्भुत कार्यक्रम के लिए सभी सदस्यों को धन्यवाद दिया। विद्यालय की ओर से व्हाट्सएप ग्रुप के जरिये सभी अभिभावकों एवं कर्मियों को मतदान में भाग लेने के लिए संदेश भेजा जाएगा तथा विद्यालय स्तर पर इलेक्टोरल लिटरेसी क्लब की स्थापना की गयी, जिसका उद्देश्य-भविष्य के मतदाताओं को तैयार करना एवं उन्हें एक जागरुक नागरिक बनाना होगा। स्वामिनी संयुक्तानंद सरस्वती, आचार्या, चिन्मय मिशन बोकारो, विश्वरूप मुखोपाध्याय, अध्यक्ष, चिन्मय विद्यालय, महेश त्रिपाठी, सचिव, चिन्मय विद्यालय, आरएन मल्लिक, कोषाध्यक्ष, चिन्मय विद्यालय, सूरज शर्मा, प्राचार्य, नरमेन्द्र कुमार उप-प्राचार्य, ने मतदाता जागरुकता अभियान कार्यक्रम सुनियोजित ढ़ग से संपन्न करने के लिए बच्चों, शिक्षकों व अभिभावकों की प्रशंसा की। डॉ. रोशन शर्मा एवं शिक्षकों ने कार्यक्रम के संचालन में अहम भूमिका निभाई।

35 लाख रुपए का गांजा जब्त, एक गिरफ्तार

घाटशिला। चाकुलिया थाना क्षेत्र के भोंडोसोल स्थित टीकाराम सोरेन के घर से पुलिस ने अभियान चलाकर 66।9 किलोग्राम गांजा जप्त किया है। जब्त गांजा का बाजार में अनुमानित मूल्य लगभग 35 लाख रुपए बाताया जा रहा है। उक्त आशय की जानकारी मंगलवार को संवाददाता सम्मेलन के दौरान वरीय पुलिस अधीक्षक कौशल किशोर ने दी। उन्होंने बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि चाकुलिया थाना क्षेत्र के एक घर में बड़े पैमाने में गांजा की खरीद बिक्री की जा रही है। इस सूचना के बाद सीडीपीओ अजीत कुमार कुजूर के नेतृत्व में पुलिस टीम का गठन कर सोमवार की रात छापामारी अभियान संचालित किया गया। इस छापामारी अभियान के दौरान पुलिस ने भोंडोशोल स्थित टीकाराम सोरेन के घर से 32 पैकेट गांजा को बरामद किया। बरामद गांजा का वजन 66।9 किलोग्राम है।

वोटर जागरुकता को लेकर स्कूल ने चलाया जागरुकता अभियान

संवाददाता

बोकारो थर्मल । बोकारो थर्मल अंतर्गत सीसीएल गोविंदपुर स्थित इंडियन स्कूल ऑफ लर्निंग में मंगलवार को वर्ग नवम एवं दसवीं के स्कूली बच्चों, शिक्षकों एवं प्राचार्य ने जागरुकता अभियान चलाया। लोकसभा चुनाव में वोट का प्रतिशत बढ़ाने तथा ज्यादा से ज्यादा मतदाताओं को अपने सभी कार्य को छोड़कर पहले मतदान करने फिर जलपान करने को लेकर स्कूली बच्चों ने बैनरों एवं पोस्टरों के साथ अभियान में शामिल हुए। मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत रैली निकालकर अनिवार्य रूप से अपने मत का प्रयोग करने के लिए स्कूली बच्चों द्वारा मतदान का अधिकार के बारे में बताया गया। मौके पर प्राचार्य मनीष आनंद द्विवेदी ने कहा कि लोकसभा चुनाव में सभी वोटरों को आवश्यक रूप से मतदान करना होगा, क्योंकि आपका मत ही आपका भविष्य तय करता है। वोटर जब अपने वोट के अधिकार का प्रयोग करेंगे, तभी सही लोग चुनकर आते हैं और तभी विकास की नयी गाथा लिखी जाती है। कहा कि जागरुकता अभियान मतदान के लिए लोगों को उत्साहित करने के लिए चलाया गया है। मौके पर स्कूल के शिक्षकों में आरएस राम, डालिया डे, बुल्टी, सुनीता सिंह, शाहीन परवीन, अमित कुमार, मिहिर झा, अरविंद कुमार सिंह, अश्विनी, अनुराधा, प्रतिमा, मीनाक्षी, प्रमिता सहित सभी शिक्षक मौजूद थे।

अमेरिकी बैंक क्यों हो रहे दिवालिया?

प्रहलाद सबनानी

पूंजीवाद पर आधारित आर्थिक नीतियां अमेरिका में बैंकिंग क्षेत्र में उत्पन्न समस्याओं का हल नहीं निकाल पा रही हैं। अब तो अमेरिकी अर्थशास्त्री भी मानने लगे हैं कि आर्थिक समस्याओं के संदर्भ में साम्यवाद के बाद पूंजीवाद भी असफल होता दिखाई दे रहा है एवं आज विश्व को एक नए आर्थिक मॉडल की आवश्यकता है। इन अमेरिकी अर्थशास्त्रियों का स्पष्ट इशारा भारत की ओर है क्योंकि इस बीच भारतीय आर्थिक दर्शन पर आधारित मॉडल भारत में आर्थिक समस्याओं को हल करने में सफल रहा है।

अमेरिका में वर्ष 2023 में 3 बैंक (सिलिकन वैली बैंक, सिगनेचर बैंक, फर्स्ट रिपब्लिक बैंक) डूब गए थे एवं वर्ष 2024 में भी एक बैंक (रिपब्लिक फर्स्ट बैंक) डूब गया है। अमेरिकी अर्थव्यवस्था में अमेरिकी केंद्रीय बैंक, यूएस फेडरल रिजर्व, द्वारा ब्याज दरों में की गई वृद्धि के चलते बैंकों के असफल होने की यह परेशानी बहुत बढ़ गई है।

सिलिकन वैली बैंक ने कई तकनीकी स्टार्ट अप एवं उद्यमी पूंजी फर्म को ऋण प्रदान किया था। इस बैंक के पास वर्ष 2022 के अंत में 20,900 करोड़ अमेरिकी डॉलर की सम्पत्तियां थी और यह अमेरिका के बड़े आकार के बैंकों में गिना जाता था और हाल ही के समय में डूबने वाले बैंकों में दूसरा सबसे बड़ा बैंक माना जा रहा है। इसी प्रकार, सिगनेचर बैंक ने न्यूयॉर्क कानूनी फर्म एवं अचल सम्पत्ति कम्पनियों को ऋण सुविधाएं प्रदान कर रखी थीं। इस बैंक के पास वर्ष 2022 के अंत में 11,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक की सम्पत्ति थी और अमेरिका में हाल ही के समय में डूबने वाले बड़े बैंकों में चौथे स्थान पर आता है। 31 जनवरी 2024 तक के आंकड़ों के अनुसार, रिपब्लिक फर्स्ट बैंक की कुल सम्पत्तियां 600 करोड़ अमेरिकी डॉलर एवं जमाराशि 400 करोड़ अमेरिकी डॉलर थीं। न्यू जर्सी, पेनसिल्वेनिया और न्यूयॉर्क में बैंक की 32 शाखाएं थीं जिन्हें अब फुल्टन बैंक की शाखाओं के रूप में जाना जाएगा क्योंकि फुल्टन बैंक ने इस बैंक की सम्पत्तियों एवं जमाराशि को खरीद लिया है।

पीयू रिसर्च संस्थान के अनुसार, चार शताब्दी पूर्व, वर्ष 1980 एवं वर्ष 1995 के बीच अमेरिका में 2,900 बैंक असफल हुए थे। इन बैंकों के पास संयुक्त रूप से 2.2 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर की सम्पत्ति थी। इसी प्रकार, वर्ष 2007 से वर्ष 2014 के बीच अमेरिका में 500 बैंक, जिनकी कुल सम्पत्ति 95,900 करोड़ अमेरिकी डॉलर थी, असफल हो गए थे। ऐसा कहा जाता है कि विशेष परिस्थितियों को छोड़कर अमेरिका में सामान्यतः बैंक असफल नहीं होते हैं। परंतु, इस सम्बंध में अमेरिकी रिकार्ड कुछ और ही कहानी कह रहा है। वर्ष 1941 से वर्ष 1979 के बीच, अमेरिका में औसतन 5.3 बैंक प्रतिवर्ष असफल हुए हैं। वर्ष 1996 से वर्ष 2006 के बीच औसतन 4.3 बैंक प्रतिवर्ष असफल हुए हैं एवं वर्ष 2015 से वर्ष 2022 के

बीच औसतन 3.6 बैंक प्रतिवर्ष असफल हुए हैं। वर्ष 2022 में अमेरिकी बैंकों को 62,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर का नुक्सान हुआ था। इसके पूर्व, वर्ष 1921 से वर्ष 1929 के बीच अमेरिका में औसतन 635 बैंक प्रतिवर्ष असफल हुए हैं। यह अधिकतर छोटे आकार के बैंक एवं ग्रामीण बैंक थे और यह एक ही शाखा वाले बैंक थे। अमेरिका में आई भारी मंदी के दौरान वर्ष 1930 से वर्ष 1933 के बीच 9,000 से अधिक बैंक असफल हुए थे। इनमें कई बड़े आकार के शहरों में कार्यरत बैंक भी शामिल थे और उस समय इन बैंकों में जमाकताओं की भारी भरकम राशि डूब गई थी। वर्ष 1934 से वर्ष 1940 के बीच अमेरिका में औसतन 50.7 बैंक प्रतिवर्ष बंद किए गए थे। अमेरिका में इतनी भारी मात्रा में बैंकों के असफल होने के कारणों में मुख्य रूप से शामिल है कि वहां छोटे छोटे बैंकों की संख्या बहुत अधिक होना है। बैंकों के ग्राहक बहुत पढ़े लिखे और समझदार हैं। बैंक में आई छोटी से छोटी परेशानी में भी वे बैंक से तुरंत अपनी जमाराशि को निकालने पहुंच जाते हैं, जबकि बैंक द्वारा इस राशि से खड़ी की गई सम्पत्ति को रोकड़ में परिवर्तित करने में कुछ समय लगता है। इस बीच बैंक यदि जमाकर्ता को जमाराशि का भुगतान करने में असफल रहता है तो उसे दिवालिया घोषित कर दिया जाता है और इस प्रकार बैंक असफल हो जाता है। कई बार बैंकों द्वारा किए गए निवेश (सम्पत्ति) की बाजार में कीमत भी कम हो जाती है, इससे भी बैंकें अपने जमाकताओं को जमाराशि का भुगतान करने में असफल हो जाते हैं। अभी हाल ही में अमेरिका में मुद्रा स्फीति की दर को नियंत्रित करने के उद्देश्य से ब्याज दरों में लगातार बढ़ौतरी की गई है, जिससे इन बैकों द्वारा अमेरिकी बांड में किये गए निवेश की बाजार में कीमत अत्यधिक कम हो गई है। अब इन बैंकों को बांड में निवेश की बाजार कीमत कम होने के स्तर तक प्रावधान करने को कहा गया है और यह राशि इन बैकों के पास उपलब्ध ही नहीं है, जिसके चलते भी यह बैंक असफल हो रहे हैं। एक सर्वे में यह बताया गया है कि आने वाले समय में अमेरिका में 190 अन्य बैंकों के असफल होने का खतरा मंडरा रहा है क्योंकि ब्याज दरों के बढ़ने से ऋण की मांग बहुत कम हो गई है। विभिन्न कम्पनियों ने अपने विस्तार की योजनाओं को रोक दिया है, इससे निर्माण की गतिविधियों में कमी आई है। अमेरिकी केंद्रीय बैंक, फेडरल रिजर्व, का पूरा ध्यान केवल मुद्रा स्फीति को कम करने पर है एवं अमेरिकी अर्थव्यवस्था में विकास दर को नियंत्रित करने के प्रयास किए जा रहे हैं ताकि अमेरिकी अर्थव्यवस्था में उत्पादों की मांग कम हो और मुद्रा स्फीति को नियंत्रण में लाया जा सके। इसके चलते कई कम्पनियां अपने कर्मचारियों की छंटनी कर रही है एवं देश में युवा वर्ग बेरोजगार हो रहा है।

पूंजीवाद पर आधारित आर्थिक नीतियां अमेरिका में बैंकिंग क्षेत्र में उत्पन्न समस्याओं का हल नहीं निकाल पा रही हैं। अब तो अमेरिकी अर्थशास्त्री भी मानने लगे हैं कि आर्थिक समस्याओं के संदर्भ में साम्यवाद के बाद पूंजीवाद भी असफल होता दिखाई दे रहा है एवं आज विश्व को एक नए आर्थिक मॉडल की आवश्यकता है। इन अमेरिकी अर्थशास्त्रियों का स्पष्ट इशारा भारत की ओर है क्योंकि इस बीच भारतीय आर्थिक दर्शन पर आधारित मॉडल भारत में आर्थिक समस्याओं को हल करने में सफल रहा है। अमेरिका में बैकों के असफल होने की समस्या मुख्यतः मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करने के उद्देश्य से ब्याज दरों में की गई वृद्धि के कारण उत्पन्न हुई हैं। दरअसल, मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करने के उद्देश्य से उत्पादों की मांग को कम करने के लिए ब्याज दरों में वृद्धि करने के स्थान पर बाजार में उत्पादों की उपलब्धता बढ़ाई जानी चाहिए ताकि इन उत्पादों की कीमत को कम रखा जा सके। प्राचीन भारत में उत्पादों की उपलब्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता था, जिसके कारण मुद्रा स्फीति की समस्या भारत में कभी रही ही नहीं है। बल्कि भारत में उत्पादों की प्रचुरता के चलते समय समय पर उत्पादों की कीमतें कम होती रही हैं। ग्रामीण इलाकों की मंडियों में आसपास ग्रामों में निवास करने वाले ग्रामीण व्यापारी एवं उत्पादक अपने उत्पादों को बेचने हेतु एकत्रित होते थे, सायंकाल तक यदि उनके उत्पाद नहीं बिक पाते थे तो वे इन उत्पादों को कम दामों पर बेचना प्रारम्भ कर देते थे ताकि गांव जाने के पूर्व उनके समस्त उत्पाद बिक जाएं एवं उन्हें इन उत्पादों को अपने गांव वापिस नहीं ले जाना पड़े। इस प्रकार भी विभिन्न उत्पादों की भारतीय मंडियों में मांग से अधिक आपूर्ति बनी रहती थी। अतः उत्पादों की कमी के स्थान पर उत्पादों की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता पर ध्यान दिया जाता था, इससे प्राचीन भारतीय ग्रंथों में मुद्रा स्फीति का जिक्र ही नहीं मिलता है। दूसरे, पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में आर्थिक मॉडल एवं नियमों को बहुत जटिल बना दिया गया है। इससे भी कई प्रकार की आर्थिक समस्याएं खड़ी हो रही है जिसका हल विकसित देश नहीं निकाल पा रहे हैं।

संपादकीय

सहभागी और सक्रिय अदालतें

सर्वोच्च न्यायालय ने आपराधिक मामलों की सुनवाई में अदालतों को सहभागिता-सक्रियता का निर्देश दिया है। कहा है कि अदालतें गवाहों, खास कर गुमराह हुए गवाहों, के बयान दर्ज करने वाला टेप-रिकार्डर भर नहीं हैं। दरअसल, यह पैसिवनेस है, जो दोतरफा मार करती है। पहले तो सरकारी वकील ऐसे गवाहों के प्रति ढीले पड़ जाते हैं। वे उससे जरूरी सवाल भी नहीं करते जिनसे कि उसके मुकरने की सटीक वजह मालूम होती। कोई भी आपराधिक मुकदमा गुमराह गवाहों की बदौलत जीता जाता है। इसमें सरकारी वकील, जो अभियोजन पक्ष के होते हैं, वे अपने पैने सवालों से सच उगलवा सकते हैं, पर वे इन सवालों को जानबूझ कर टाल जाते हैं। उनका यह कतराना भी बिका हुआ होता है, जबकि उन्हें सरकार से मोटी पगार मिलती है। इस स्थिति में बदलाव के लिए सरकारी वकीलों के पदों को वकील की राजनीतिक निष्ठा के आधार पर नहीं, उसकी पेशेवर सक्षमता के अनुसार भरा जाना चाहिए। योग्यता और नैतिक निष्ठा सबसे जरूरी आस्पेक्ट है। गलत और अक्षम वकीलों के चयन से मुकदमा जरूरी स्टेज पर कमजोर होने लगता है। दोषी मुकदमा जीत जाता है। पीड़ित को कभी भरोसा ही नहीं होता कि उसकी सुनवाई निष्पक्ष व पारदर्शी तरीके से होगी, उसे अंततः न्याय मिलेगा। यहां सबसे बड़ी क्षति न्यायाधीशों की अ-सक्रियता से होती है, जब वे अपनी भूमिका को गवाहों के बयान दर्ज करने तक सीमित कर अ-सहभागी हो जाते हैं। यह दोहरा घाटा है। इससे न्याय के उस प्राथमिक सिद्धांत का खंडन हो जाता है, जिसे सुलभ कराने के लिए न्यायपालिका का गठन हुआ है। इससे बचने के लिए सर्वोच्च न्यायालय अदालतों से गवाहों से जिरही होने की ताकीद करती है ताकि सच का खुलासा हो सके। मुकदमे पर रोशनी पड़े। पीड़ितों को न्याय मिले। यह बिल्कुल वाजिब ताकीद है। प्रायः देखा गया है कि बड़े से बड़ा कांड, यहां तक कि नरसंहार मामलों में भी गवाहों के मुकरने और अदालतों के जिरही न होने से दोषी छूटते रहे हैं। इससे न्याय व्यवस्था की भारी किरकिरी होती रही है। सर्वोच्च न्यायालय के ताजा निर्देश में इस नासूर हो चुकी स्थिति की एक बुनियादी पड़ताल है। अदालतों को सक्रिय होना है। इस अंदाज में कि अपराध का दूसरा पहलू सामने आ सके क्योंकि ह्यकोई अपराध आखिर में एक व्यक्ति के विरु द्ध ही नहीं, समाज के विरु द्ध भी होता है।ह्न क्या यह न्यायिक सक्रियता का आगाज है? नहीं, इसकी अपनी सीमा है पर यह कई बार न्याय व जन हित में लाजिमी है।

चिंतन-मनन

व्यापारी के बेटे

एक व्यापारी के दो पुत्र थे। मरने से पहले उसने अपनी संपत्ति दोनों बेटों में बराबर-बराबर बांट दी। एक पुत्र ने अपने व्यापार को काफी बढ़ाया। वह अत्यंत संपन्न होकर समाज के प्रतिष्ठत लोगों में गिना जाने लगा। जबकि दूसरे को व्यापार में घाटा हो गया और उसके परिवार को दो जून की रोटी जुटाने में भी अत्यंत तकलीफें उठानी पड़ीं। अपने भाई की तरक्की और अपनी दुर्दशा देखकर दूसरा भाई एक संत के आश्रम में पहुंचा और बोला, महाराज, मुझे लगता है कि ईश्वर केवल कल्पना है और यदि उसका अस्तित्व कहीं है भी तो वह पक्षपाती है। क्या वह भी पक्षपात करता है? मैं और मेरे भाई दोनों एक ही पिता की संतान हैं। पिता ने दोनों को बराबर हिस्सा दिया। लेकिन वह लगातार तरक्की कर रहा है और मैं रसातल की ओर जा रहा हूं। भला ऐसा क्यों?

उसकी बात सुनकर संत उसे अपने साथ एक बगीचे में ले गए और बोले, देखो, वहां एक कोने में गन्ना बोया हुआ है, दूसरे कोने में चिरायता है, एक ओर चमेली के फूल अपनी सुगंध बिखेर रहे हैं तो दूसरी ओर गुलाब के पौधों पर फूलों के साथ कांटे भी नजर आ रहे हैं । इनकी इस भिन्नता के लिए इन्हें पैदा करने वाली जमीन दोषी या पक्षपाती नहीं है। जैसा बीज बोया गया है वैसा ही फल मिला है। सुख-दुख और उन्नति-अवनति के लिए ईश्वर जिम्मेदार नहीं बल्कि स्वयं मनुष्य जिम्मेदार है। उसके कर्म और संस्कार जिम्मेदार हैं। तुम्हारे भाई ने मेहनत और योग्यता से अपने काम को संभाला तो उसकी उन्नति होती गई, इसके विपरीत तुमने आलस्य और भोग-विलास में अपना समय व्यतीत किया तो तुम्हारा धन धीरे-धीरे खत्म होता गया। तुमने मेहनत की ही कब थी जो ईश्वर को दोष दे रहे हो। जैसा कर्म तुमने किया है वैसा ही फल पाया है। ह सुनकर दूसरे पुत्र की आंखें खुल गईं। वह अपनी गलती सुधारने का निश्चय कर वहां से चला आया।

मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें

संजय गोस्वामी

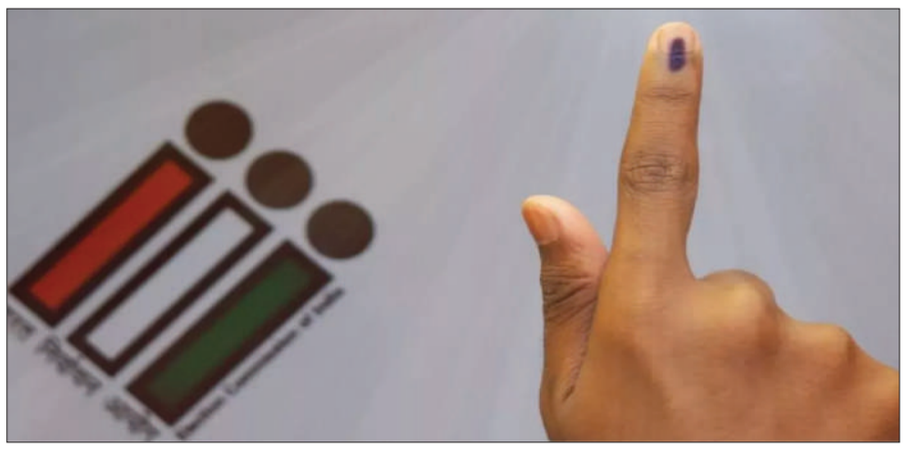

देश में पहला लोकसभा चुनाव 25 अक्टूबर 1951 से लेकर 21 फरवरी 1952 तक चला था। उस समय पूरे देश में चुनाव कराया एक जटिल प्रक्रिया थी। सबकुल नया भी था। भारत के पहले चुनाव आयुक्त सुकुमार सेन थे। चुनाव आयोग के पास बड़ी जिम्मेदारी थी। देश का पहला आम चुनाव 68 चरणों में कराया गया था। पहले इलेक्शन कमिशन ने तय किया था कि वोटिंग 1952 के फरवरी और मार्च महीने में होगी। लेकिन हिमाचल प्रदेश की चिनी तहसील के लोगों को अक्टूबर 1951 में ही मौका मिल गया, क्योंकि सर्दियों में बर्फबारी के चलते यह इलाका बाकी जगहों से कट जाता है। देश के पहले लोकसभा चुनाव में 401 निर्वाचन क्षेत्रों की कुल 489 सीटों के लिए मतदान हुआ था। तब बैलेट पेपर पर चुनाव हुआ करता था।संविधान हमें वोट देने का अधिकार देता है, जो एक मौलिक अधिकार है जिसका प्रयोग भारत के सभी नागरिकों को करना चाहिए। मतदान प्रतिशत में गिरावट को रोकने के लिए वर्तमान राजनीतिक रुझानों और प्रणालियों में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। मतदान करते समय सतर्क रहना और सोच-समझकर निर्णय लेना महत्वपूर्ण है। हाल के चुनावों के नतीजों में मतदाता मतदान में कमी देखी गई है, जिससे यह सुनिश्चित करने के लिए व्यापक बदलावों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है कि मतदाताओं को सरकार में एक सच्चा प्रतिनिधि मिले। भारत में लोकसभा चुनाव 19 अप्रैल से शुरू होकर और 1 एक जून तक वोटिंग होगी। सात फेज में इलेक्शन होंगे और 4 जून को नतीजे आएंगे। लेकिन ये बात भी गौर करने वाली है कि इस बार लोकसभा चुनाव के लिए मतदान की प्रक्रिया 44 दिनों में पूरी होगी जो 1951-52 के पहले ससंदीय चुनाव के बाद मतदान की सबसे लंबी अवधि होगी। बता दें कि पहले चुनाव में वोटिंग 4 महीने से अधिक समय तक चली थी। इस बार निर्वाचन आयोग द्वारा चुनाव की घोषणा से लेकर मतगणना होने तक तक चुनाव प्रक्रिया कुल 82 दिनों में पूरी होगी। मतदान न केवल एक अधिकार है बल्कि एक कर्तव्य भी है जो हमारे देश के भविष्य को आकार देने में मदद करता है। इसमें सरकारों को बदलने, देश को बेहतर बनाने और सामाजिक परिवर्तन लाने की शक्ति है। मतदान करके, हम उन प्रतिनिधियों को चुनते हैं जो हमारे देश पर शासन करते हैं, इसलिए हमारे देश के विकास के लिए सभी नागरिकों के लिए इस प्रक्रिया में भाग लेना महत्वपूर्ण है। मतदान हमें उस प्रकार की सरकार में अपनी बात कहने का अधिकार देता है जो हम चाहते हैं और देश की प्रगति में योगदान करते हैं। यह हमें महिलाओं, बच्चों और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के अधिकारों की वकालत करने में भी सक्षम बनाता है। स्कूलों और कॉलेजों में जागरूकता अभियान छात्रों को लोकतंत्र में मतदान के महत्व के बारे में शिक्षित करते हैं। सभी के लिए जरूरी है कि वे अपने मताधिकार का प्रयोग करें और देश के विकास में अपना योगदान दें।

'राहुल गांधी, आसान नहीं रायबरेली की डगर...'

कांग्रेस नेता राहुल गांधी उत्तर प्रदेश की अमेठी लोकसभा सीट से चुनाव न लड़ पाने की हिम्मत के बाद आखिर परम्परागत रायबरेली से नामांकन दाखिल कर दिया। यह बात सही है कि राहुल गांधी के अमेठी छोड़ने के बाद कांग्रेस राजनीति में कोई ठोस सन्देश देने में सफल नहीं हो रही थी, जिसके कारण कांग्रेस के कई नेता अमेठी के बारे में बोलने से किनारा करने लगे थे। अब राहुल गांधी अपने दादा फिरोज खान, दादी इंदिरा गांधी और मां सोनिया गांधी की विरासत को बचाने के लिए मैदान में आ गए हैं। यहां सवाल यह नहीं हैं कि राहुल गांधी और उनकी कांग्रेस ने रायबरेली को क्यों चुना, बल्कि सवाल यह है कि राहुल गांधी ने अमेठी को क्यों छोड़ा।

क्या वास्तव में राहुल गांधी को फिर से अपनी पराजय का डर लगने लगा था? अगर यह सही है तो फिर ऐसा क्यों है कि राहुल गांधी हर बार अपने लिए सुरक्षित स्थान की तलाश क्यों करते हैं। उल्लेखनीय है कि जब कांग्रेस नेता राहुल गांधी को अमेठी में अपनी जमीन खिसकती दिखाई दी, तब उन्होंने एकदम सुरक्षित लगने वाली सीट केरल की वायनाड को चुना। वहां से चुनाव जीते जरूर, लेकिन अमेठी की हार कांग्रेस परिवार की हार थी, जिसे कांग्रेस आज तक भुला नहीं पाई है। ऐसे में कांग्रेस द्वारा राहुल गांधी को अमेठी से चुनाव लड़ाना खतरे से खाली नहीं था।

कांग्रेस की ओर से राहुल गांधी के नामांकन जमा करने के समय जिस प्रकार से बड़े नेताओं का जमघट लगा, वह भले ही जनता में प्रभाव डालने के लिए किया हो, लेकिन इससे यह भी राजनीतिक सन्देश सुनाई दे रहा है कि अब रायबरेली की सीट भी कांग्रेस के लिए आसान नहीं है। यह इसलिए भी कहा जा सकता है कि वहां लगभग सभी बड़े नेता उपस्थित हुए। यहां तक कि प्रियंका गांधी वाड्रा के पति रोबर्ट वाड्रा भी कांग्रेस के विरासती राजनेता के तौर पर उपस्थित हुए।

ऐसे में एक सवाल यह भी आता है कि एक ही परिवार के चार व्यक्तियों को कांग्रेस के बड़े नेताओं के रूप में प्रचारित करना निसंदेह कांग्रेस पर परिवारवादी होने को ही प्रमाणित करता है। जिस परिवारवाद के आरोप के कारण कांग्रेस असहज हो जाती है, आज कांग्रेस ने फिर से उसी रास्ते पर कदम बढ़ाने को अपनी नियति मान लिया है। हालांकि कांग्रेस ने आनन-फानन में राहुल गांधी को रायबरेली से उम्मीदवार बनाकर यह तो सन्देश दिया ही है कि भारत में रायबरेली ही राहुल गांधी के लिए सबसे सुरक्षित लोकसभा सीट है। यहां कांग्रेस का परम्परागत मतदाता है, वहीं यह क्षेत्र नेहरू-गांधी परिवार की विरासत भी है।

कहा जाता है कि दुनिया का कोई भी व्यक्ति अगर अपनी विरासत को विस्मृत कर देता है, तो उसे नए सिरे से अपनी जमीन तैयार करनी पड़ती है। और अगर विरासत के आधार पर अपने कदम बढ़ाता है तो उसकी आधी राह आसान हो जाती है। राहुल गांधी के सामने तमाम सवाल होने के बाद भी ऐसा लगता है कि उन्होंने अपनी आधी बाधा को पार कर लिया है। रायबरेली को कांग्रेस का गढ़ इसलिए भी माना जाता है कि क्योंकि यहां से इंदिरा गांधी के पति फिरोज खान दो बार सांसद रहे, उसके बाद इंदिरा गांधी भी सांसद रहीं। अब पिछले पांच बार से सोनिया गांधी लोकसभा का चुनाव जीती हैं।

मजेदार बात यह भी है कि वर्ष 1977 के आम चुनाव में जनता लहर में इंदिरा गांधी को भी पराजय का दंश भोगना पड़ा। उसके बाद एक बार भाजपा ने भी परचम लहराया है। इसलिए यह कहा जाना कि रायबरेली में कांग्रेस आसानी से विजय प्राप्त करेगी, कठिन ही है। आज कांग्रेस की स्थिति देखकर यह भी कहने में गुरेज नहीं होना चाहिए कि आज की कांग्रेस के पास इंदिरा गांधी जैसा नेता नहीं है। जब इंदिरा गांधी चुनाव हार सकती हैं, तब आज तो कांग्रेस की स्थिति बहुत कमजोर है। ऐसा तो तब हुआ, जब उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी का कोई अस्तित्व नहीं था, इसलिए कांग्रेस उत्तर प्रदेश में अच्छी खासी जीत हासिल करती थी। लेकिन अब उत्तर प्रदेश का राजनीतिक परिदृश्य बदला हुआ है। अब कांग्रेस के पास पहले जैसा वोट बैंक भी नहीं है, हालांकि इस चुनाव में सपा का समर्थन कांग्रेस के पास है, इसलिए चुनाव में सपा के कार्यकर्ता भी राहुल का प्रचार करेंगे, ऐसे में निश्चित ही कांग्रेस का वजूद बढ़ेगा ही, यह तय है, लेकिन कितना बढ़ेगा, यह कहने में जल्दबाजी ही होगी।

वर्तमान में कांग्रेस के लिए यह पेचीदा सवाल ही था कि कांग्रेस की ओर से अमेठी और रायबरेली से किसको उम्मीदवार घोषित किया जाए, क्योंकि इन दोनों सीटों पर प्रथम तो गांधी परिवार का पुख्ता दावा बनता था। इसलिए दोनों क्षेत्रों में से किसी एक से प्रियंका वाड्रा को चुनाव मैदान में उतारने की कवायद भी की जा रही थी, लेकिन प्रियंका को इस बार चुनाव लड़ने से दूर कर दिया। लेकिन सवाल यह भी उठ रहा है कि क्या राहुल गांधी के रायबरेली से उम्मीदवार बनाए जाने के बाद कांग्रेस अमेठी के चुनाव को गंभीरता से लेगी, क्योंकि अब कांग्रेस का पूरा जोर राहुल गांधी को जिताने में लगेगा।

राहुल गांधी को जिताना कांग्रेस की मजबूरी है, क्योंकि अब राहुल गांधी ही नहीं, पूरी कांग्रेस की साख दांव पर लगी है। अगर कांग्रेस रायबरेली से चुनाव हारती है तो देश में कांग्रेस के बारे में गलत सन्देश जाएगा। यहां पर एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह भी आ रहा है कि राहुल गांधी द्वारा पिछले चुनाव में भी दो स्थानों से चुनाव लड़े थे, जिसमें अमेठी में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। अब वायनाड से उम्मीदवारी के बाद रायबरेली की रुख करके फिर से संदेह को जन्म दिया है। ऐसा लग रहा है कि इस बार वायनाड का चुनाव बहुत ही टक्कर का माना जा रहा है। कुछ खबरें तो राहुल गांधी के हारने तक की बात कह रही हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि इसलिए ही राहुल गांधी को फिर से दो स्थानों से चुनाव लड़ाया जा रहा है। राहुल गांधी का उत्तर प्रदेश से चुनाव लड़ना कोई नया नहीं है, वे अमेठी से भी चुनाव लड़ चुके हैं। इसलिए उनके नाम का जादू कोई नया प्रभाव छोड़ेगा, यह पूरी तरह विश्वास के साथ नहीं कहा जा सकता।

- सुरेश हिंदुस्तानी (लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

ये है दुनिया का सबसे खतरनाक पेड़, फल की जगह उगते हैं ग्रेनेड

दुनिया में कई तरह के पेड़-पौधे हैं. कई पेड़ अपनी खासियत की वजह से जाने जाते हैं. किसी पेड़ के अंदर कई लीटर पानी जमा हो सकता है तो कुछ पेड़ सालभर फल देते हैं. भगवान हर पेड़ को जिंदा रहने के लिए कई गुण भी देता है. वैसे तो दुनिया के ज्यादातर पेड़ धरती को ऑक्सीजन देते हैं. ऐसे में इंसानों के लिए ये पेड़ किसी वरदान से कम नहीं हैं. लेकिन आज हम आपको एक ऐसे पेड़ के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसे दुनिया का सबसे खतरनाक ट्री कहा जाता है. इस पेड़ से इंसान जितना दूर रहे, उसके लिए उतना ही उतना ही अच्छा होता है.

पेड़ों से भी क्या डरना! आप यही सोच रहे होंगे लेकिन एक पेड़ ऐसा है जिससे डरना ही पड़ेगा। इस पेड़ का नाम है सैंडबॉक्स ट्री। यह सबसे खतरनाक और डरावना पेड़ है जो कि दक्षिण अमेरिका के अमेज़न जंगल में पाया जा सकता है। इस पेड़ को देखते ही आप पहले तो चौंक जाएंगे क्योंकि इसके तने पर शंकु के आकार के ढेर सारे कांटे होते हैं। इतना ही नहीं इस पेड़ पर कद्दू के आकार के फल उगते हैं लेकिन कमाल की बात तो यह है कि जब यह फल पक जाते हैं तो जोरदार आवाज़ के साथ बम की तरह फट जाते हैं। फल 150 मील प्रति घंटे की गति से फूटता है और 60 फीट की दूरी तक इसके बीज तेजी से फैलते हैं। इस तरह के विस्फोट के कारण इसे डाइनामाइट ट्री के नाम से भी जाना जाता है, जिसकी लंबाई 100 फीट तक हो सकती है।

हम बात कर रहे हैं सैंड बॉक्स ट्री की. इसे पोसमवुड, मंकी नो क्लाइंब, या जाबिलो के नाम से भी जाना जाता है. ये मूल रूप से नार्थ और साउथ अमेरिका के ट्रॉपिकल रीजंस में पाया जाता है. इसके अलावा ये पेड़ अमेजन के रेनफॉरेस्ट में भी पाया जाता है. लेकिन इस पेड़ को दुनिया का सबसे खतरनाक पेड़ कहा जाता है. इसकी वजह है इस पेड़ में लगने वाला फल. जी हां, इस पेड़ में लगने वाला फल नेचुरल ग्रेनेड है.

इतना खतरनाक है ये पेड़

सैंडबॉक्स को दुनिया के सबसे खतरनाक पेड़ में शामिल किया जाता है. ये पेड़ साठ मीटर तक लंबा हो सकता है. साथ ही इसकी पत्तियां साठ सेंटीमीटर तक बड़ी हो सकती हैं. इस पेड़ में दो तरह के फूल लगते हैं. मेल फ्लावर्स पेड़ के लंबे कांटों में उगते हैं जबकि फीमेल फ्लावर्स इसकी पत्तियों में. इस पेड़ के तने लंबे, नुकीले कांटों से भरे होते हैं जिससे जहर निकलता है. लेकिन इस पेड़ की यूएसपी है इसके फल.

ग्रेनेड की तरह करते हैं ब्लास्ट

इस पेड़ में कद्दू के आकार के फल लगते हैं. ये तीन से पांच सेंटीमीटर तक बड़े होते हैं. यही फल पेड़ का सबसे खतरनाक अंग है. दरअसल, ये फल किसी ग्रेनेड की तरह फूट जाता है. इस धमाके से इसके बीज काफी दूर-दूर तक फ़ैल जाते हैं. लेकिन जिस स्पीड से इसके बीज गिरते हैं, वो इंसान की बॉडी में छेद भी कर सकता है. इस वजह से पेड़ को काफी खतरनाक माना जाता है. लोगों को इससे दूर रहने की सलाह दी जाती है.

रेलवे स्टेशन वो जगह है जहां आप कभी न कभी जरूर गए होंगे, सालों से यात्रा में रेलवे स्टेशन बेहद अहम भूमिका निभाते नजर आए हैं।

ये हैं दुनिया के सबसे पुराने रेलवे स्टेशन

दुनिया भर में कई खूबसूरत रेलवे स्टेशन मौजूद हैं। कुछ अपनी बनावट और इतिहास को लेकर चर्चित हैं, तो कुछ अपनी आलीशान सुविधाओं के लिए जाने जाते हैं। सालों ये रेलवे स्टेशन लोगों की सेवा करते आ रहे हैं, यही वजह है कि आज दुनिया भर में लगभग हर जगह रेलवे की सुविधा उपलब्ध है। हालांकि रेलवे का इतिहास 50 या 100 साल नहीं बल्कि उससे भी पुराना है, ऐसे में रेलवे के साथ-साथ रेलवे स्टेशन की कहानी भी उतनी ही पुरानी है। हम आपको दुनिया के सबसे पुराने रेलवे स्टेशनों के बारे में बताएंगे, जिन्हें कई सालों पहले तैयार किया गया था। आइए जानते हैं इन पुराने रेलवे स्टेशनों के बारे में

लिवरपूल रोड स्टेशन, इंग्लैंड

लिवरपूल रोड स्टेशन की स्थापना 15 सितंबर 1830 में हुई। बता दें कि इस स्टेशन को दुनिया का सबसे पुराना स्टेशन माना जाता है. हालांकि साल 1975 के बाद यह स्टेशन अब लोगों को सेवाएं नहीं देता है, मगर इस स्टेशन को आज भी पूरी तरह से संरक्षित रखा गया है। साल 1930 में लिवर रोड स्टेशन को लिवरपूल और मैनचेस्टर रेलवे के हिस्से के रूप में तैयार किया गया था, जो कि दुनिया भर में भाप से चलने वाला इंटर-यूब्रान रेलवे था। आज ये ऐतिहासिक इमारत विज्ञान और उद्योग संग्रहालय का हिस्सा है।

ब्रॉड ग्रीन रेलवे स्टेशन

इस रेलवे स्टेशन को भी 15 सितंबर 1830 में बनाया गया था। इस स्टेशन को भी लिवरपूल और मैनचेस्टर रोड स्टेशन के साथ तैयार किया गया था। बता दें कि 1830 से लेकर अभी तक यह रेलवे स्टेशन लोगों को अपनी सुविधाएं देता आ रहा है। इस कारण इसे दुनिया के सबसे पुराने स्टेशनों की लिस्ट में शामिल किया गया है।

हेक्सहम रेलवे स्टेशन

यह दुनिया का तीसरा सबसे पुराना स्टेशन हैं, लेकिन अब तक सेवा देने वाले स्टेशनों में यह दूसरे स्थान पर आता है। बता दें कि इस स्टेशन को साल 1935 में खोला गया था, जो कि टाइन वैली लाइन पर मौजूद है। हालांकि समय के साथ इस रेलवे स्टेशन का आकार छोटा होता जा रहा है। हाल ही में इस स्टेशन को दोबारा से रीवाइव करने के प्रयास किए गए हैं।

डेप्टफोर्ड रेलवे स्टेशन

डेप्टफोर्ड रेलवे स्टेशन दुनिया के सबसे पुराने स्टेशनों में से चौथे स्थान पर आता है। हालांकि इस स्टेशन ने लंदन के इतिहास में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। माना जाता है कि यह शहर का सबसे पुराना ऑपरेटिंग ट्रेन स्टेशन है। बता दें कि इस स्टेशन की शुरुआत साल 1836 में हुई थी। 1915 से 1926 के लिए इस स्टेशन को बंद कर दिया गया था और इसके साथ ही स्टेशन की पुरानी इमारत को ध्वस्त कर दिया गया था। इसके बाद इस स्टेशन को दोबारा बनाया गया था, हालांकि इस बिल्डिंग को दोबारा साल 2011 में एक बार फिर से स्थापित किया गया।

लंदन ब्रिज रेलवे स्टेशन

इल शानदार ब्रिज स्टेशन को इंग्लैंड की राजधानी शहर के मुख्य भार में तैयार किया गया था। जिस कारण ये दुनिया का सबसे पुराना ऑपरेटिंग ट्रेन स्टेशन है। बता दें कि इस रेलवे स्टेशन को साल 1836 में तैयार किया गया था, हालांकि समय के साथ इस रेलवे स्टेशन का आधुनिकीकरण कई बार किया गया। इतना ही नहीं साल 2009 से लेकर 2017 के बीच इस रेलवे स्टेशन के दोबारा निर्माण के लिए करीब 1.25 बिलियन डॉलर का पैसा खर्च किया गया। जिसके साथ यह स्टेशन दुनिया के पुराने स्टेशनों की लिस्ट में शामिल किया गया।

लीवरपूल लाइम स्ट्रीट स्टेशन

इंग्लैंड में स्थित लीवरपूल लाइम स्टेशन की शुरुआत साल 1936 में की थी। इसे दुनिया का सबसे पुराना स्टील-ऑपरेटिंग ग्रैंड टर्मिनस मेन लाइन स्टेशन माना जाता है। बता दें कि इस रेलवे स्टेशन पर लकड़ी का शेड हुआ करता था, जिस वजह से समय-समय पर इसे तोड़कर दोबारा तैयार किया जाता था।

युस्टन रेलवे स्टेशन

इस रेलवे स्टेशन की शुरुआत साल 1837 में की थी, लेकिन पूर्ण रूप से इस स्टेशन की शुरुआत 1960 में की गई। बता दें कि यह रेलवे स्टेशन वेस्ट कोस्ट मेन लाइन के लिवरपूल लाइम स्ट्रीट , मैनचेस्टर पिकाडिली, एडिनबर्ग वेवर्ली और ग्लासगो सेंट्रल के दक्षिण टर्मिनस के रूप में कार्य करता है। माना जाता है कि यह यूरोप के भव्य रेलवे स्टेशनों में से एक था, लेकिन इसके बावजूद भी साल 1960 के दौर में इसकी इमारत को तोड़कर दोबारा तैयार किया गया।

तुर्की में पानी के नीचे मिला रहस्यमयी महल! 3 हजार साल पुरानी सभ्यता का मंदिर

क्या आपको पता है कि द्वारिका के अतिरिक्त कई अन्य महल भी हैं जो इस समय पानी के अंदर समा गए हैं. एक ऐसे ही 3 हजार वर्ष पुराने महल को तुर्की में ढूंढा गया था. पुरातत्वविदों को खुदाई के दौरान एक झील में 3,000 साल पुराने महल के अवशेष मिले हैं.

तुर्की के पूर्वी वान प्रांत में पुरातत्वविदों ने लेक वैन में पानी के भीतर खुदाई के दौरान 3,000 साल पुराने उरारतु महल के खंडहरों की खोज की थी. तुर्की की सबसे बड़ी और मध्य पूर्व की दूसरी सबसे बड़ी झील की गहराई में मिला यह प्राचीन महल काफी हद तक अच्छी हालत में है. झील में मिले महल के अवशेष एक मुख्य महल से सम्बंधित हैं जो पूर्वी वान प्रांत के गुरपिनार जिले के पहाड़ों के बीच स्थित 8,200 फीट की ऊंचाई पर स्थित है. वहां, टीम को प्राचीन दीवारें, पानी के भंडारण के लिए एक कुंड, और आगे जमीन के भीतर, कुछ चीनी मिट्टी के टुकड़े भी मिले. अब वान झील का वर्तमान जल स्तर कथित तौर पर उरारतु सभ्यता के दौरान की तुलना में कई सौ मीटर अधिक है. विशेषज्ञों के अनुसार झील के आसपास रहने वाली सभ्यताओं ने बड़े गांव और बस्तियां बसाईं, जब झील का जल स्तर कम था, लेकिन फिर से बढ़ने के बाद उन्हें क्षेत्र छोड़ना पड़ा होगा. अनुसंधान यह निर्धारित नहीं कर सका कि महल की कितनी दीवारें पानी में दबी हुई हैं, लेकिन पानी के ऊपर लगभग तीन से चार मीटर दिखाई देती हैं.

अपने अद्वितीय ऐतिहासिक मूल्य के कारण पानी के नीचे के खंडहरों से हजारों पर्यटकों को आकर्षित करने की उम्मीद जताई जा रही है. लेक वैन तुर्की की सबसे बड़ी झील है और मध्य पूर्व में दूसरी सबसे बड़ी झील है. यह दुनिया की सबसे बड़ी सोडियम वाटर झील भी है. झील ईरान के साथ सीमा के पास पूर्वी अनातोलियन क्षेत्र के ऊंचे मैदानों पर स्थित है. यह वैन प्रांत के पास माउंट नेम्रुट के ज्वालामुखी विस्फोट के कारण बने क्रेटर द्वारा बनाई गई थी.

इसी सभ्यता का एक 2,800 साल पुराना ओपन एरिया मंदिर भी उरारतु काल का खोजा गया है. माना जाता है कि इसका उपयोग दक्षिण-पश्चिमी भाग में धार्मिक समारोहों में किया जाता था. उरारटियन कई देवताओं को पूजते थे इसलिए संभावना है कि अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियों को क्षेत्र में अलग-अलग जगहों पर रखा गया हो. फिलहाल पुरातत्वविदों का मानना है कि यहां युद्ध के देवता के नाम पर समारोह आयोजित किये जाते थे.

क्या आपको मालूम है इन भारतीय शहरों के नाम पर विदेशों में भी हैं शहर

भारत में आपको एक ही शहर के नाम दूसरे राज्यों में भी सुनने को मिल जाते होंगे, लेकिन क्या आपने कभी ये सुना है कि भारतीय शहरों के नाम पर विदेशों में भी शहर हैं। जी हां, विदेशों में कई जगहें ऐसी हैं जिनका नाम भारतीय शहरों के नाम पर रखा गया है। दिल्ली और पटना इसी के उदहारण है, जिनका नाम आपको विदेशों में भी मिल जाएगा। भारत के कुछ ऐसे शहर जिनके नाम के विदेशों में भी शहर है। तो चलिए जानते हैं-

लखनऊ – उत्तर प्रदेश की राजधानी, जिसे नवाबों का शहर भी कहा जाता है, लेकिन क्या आपको मालूम है कि अमेरिका में भी एक शहर का नाम है लखनऊ। जी हां, अमेरिका में भी लखनऊ है जिसे कैसल इन द क्लाउड्स के भी नाम से जाना जाता है।

पटना – बिहार की राजधानी पटना, लेकिन क्या आपको मालूम है इस पटना के अलावा भी एक और पटना स्कॉटलैंड देश में है। जी हां, स्कॉटलैंड के ईस्ट एरीशायर में एक शहर है जिसका भी नाम पटना है। कहा जाता है कि जब स्कॉटलैंड में ईस्ट इंडिया कंपनी के लोग भारत से वापिस लौटे तो उन्होंने अपने शहर में इसी पटना के नाम पर एक शहर बसा लिया।

कोलकाता – ब्रिटिश काल में इसे कलकत्ता के नाम से जाना जाता था, जिसे अब कोलकाता के नाम से जाना जाता है। ये शहर ब्रिटिश काल में भारत की राजधानी भी रही है। एक कोलकाता अमेरिका में भी है, जिसे कोटा टाउन और इंडियाना के नाम से भी जाना जाता है।

हैदराबाद – हैदराबाद भारत के प्रमुख शहरों में से एक और तेलंगाना की राजधानी है, लेकिन क्या आपको मालूम है पाकिस्तान में भी एक हैदराबाद है। जी हां, पाकिस्तान के सिंध प्रांत में एक शहर है जिसका नाम हैदराबाद है।

ठाणे – महाराष्ट्र के ठाणे का नाम आपने ज़रूर सुना होगा। दूसरा ठाणे शहर ऑस्ट्रेलिया में है। ऑस्ट्रेलिया के क्वींसलैंड शहर में है ये दूसरा ठाणे।

कोच्चि – भारत में कोच्चि को कोचीन के नाम से भी जाना जाता है। ये शहर प्रमुख रूप से बंदरगाह यानि पोर्ट के लिए भी भारत में जाना जाता है। यहां ऐसे कई बंदरगाह है जहां विदेशों से भी कंटेनर आते हैं, लेकिन आपको मालूम है जापान में भी एक कोचीन है, जो एक आइलैंड पर बसा हुआ है।

संक्षिप्त

गोपालगंजः दोस्तों ने युवक को घर बुला कर चाकू मार की हत्या, दरवाजे पर फेंका शव

फुलवरिया (गोपालगंज)। श्रीपुर थाने के साहूचक गांव में सोमवार की देर शाम एक युवक को घर से बुलाकर चाकू से हमला कर उसकी हत्या कर दी गयी। मृतक के दोस्तों पर परिजनों ने हत्या का आरोप लगाया है। मृतक की पहचान राकेश कुमार यादव के रूप में की गयी है, जो विजयमल यादव का 25 वर्षीय पुत्र था। मंगलवार की सुबह बंशी बतरहां बाजार में आक्रोशित परिजनों ने सड़क को जाम कर दिया। शव को रखकर मीरगंज-भोरे पथ को जाम किया और आरोपितों की गिरफ्तारी की मांग की।

व्यवसायी से मांगी गयी रंगदारी, दो गिरफ्तार

थावे (गोपालगंज)। सेंट्रल जेल मुजफ्फरपुर में बंद मुन्ना मिश्रा के नाम पर जेल से रंगदारी मांगने की खबर मिलते ही पुलिस अलर्ट हो गयी। आभूषण व्यवसायी से रंगदारी मांगने के मामले में थावे थाने में प्राथमिकी दर्ज कर पुलिस ने 24 घंटे के अंदर दोनों अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया है। वहीं, रंगदारी कांड का खुलासा भी कर दिया है। गिरफ्तार अपराधियों की पहचान नागमणि चौबे और पवन मिश्रा के रूप में किया गया है। पूछताछ के बाद अपराधियों को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया।

सोते समय महिला की गला दबाकर हत्या

सिकटा (पचं)। गोपालपुर थानाक्षेत्र के पुरैनिया डीह में भूमि विवाद में देर रात एक वृद्ध महिला की गला दबाकर हत्या कर दी गई है। उसकी पहचान पुरैनिया डीह के स्व रामा भगत की पत्नी सुगिया देवी (70) के रूप में की गई है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने महिला के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। थानाध्यक्ष राजन कुमार ने बताया कि सुगिया देवी व साहदेव राम के बीच वर्षों पहले से जमीन को लेकर विवाद चल रहा है। इसे लेकर सोमवार को सुबह में भी दोनों पक्षों के बीच झगड़ा हुआ था।

पूर्णिया : सड़क हादसे में बचीं बीमा भारती

भवानीपुर (पूर्णिया)। पूर्णिया लोकसभा सीट से राजद प्रत्याशी बीमा भारती सड़क हादसे में बाल-बाल बच गयीं। मंगलवार की दोपहर बीमा भारती अपने गांव भिट्ठा से पूर्णिया जा रही थी। इसी दौरान भवानीपुर रायपुरा-अकबरपुर कुशहा मुख्यमार्ग के कुशाहा गांव में जेसीबी ने बीमा भारती के वाहन में ठोकर मार दी।

एके 47 की रिकवरी में कुणाल सिंह दोषी करार

मोतिहारी। पिपराकोठी के कुड़िया गांव से एके 47 के साथ गिरफ्तार कुख्यात कुणाल सिंह को कोर्ट ने दोषी करार दे दिया है। अगली तारीख पर उसे सजा सुनाई जायेगी। 15 मार्च 2023 को पुलिस ने कुड़िया स्थित उसके घर पर छापेमारी उसे गिरफ्तार किया था। उसके घर से एके 47, एक विदेशी पिस्टल, 25 कारतूस, दो मैगजीन, छह वॉकी टॉकी व विदेशी पिस्टल की 20 गोली बरामद हुई थी। कुणाल पर बेतिया न्यायालय परिसर में शातिर बबलू दूबे की हत्या, कल्याणपुर में पुलिस के साथ मुठभेड़, पिपरा में मुखिया पति व उसके पुत्र की हत्या सहित रंगदारी व लूट के एक दर्जन से अधिक मामले जिले के विभिन्न थानों में दर्ज हैं।

शराब माफियाओं ने उत्पाद विभाग की टीम पर किया हमला, ड्राइवर की कर दी हत्या

संवाददाता,मुंगेर

धरहरा प्रखंड के दशरथी बहियार में शराब तस्करों के खिलाफ छापेमारी करने गयी उत्पाद थाने की टीम पर मंगलवार की अहले सुबह शराब माफियाओं ने हमला कर दिया। साथ ही उत्पाद थाने का वाहन चला रहे प्राइवेट ड्राइवर को कुएं में धकेल दिया, जिससे उसकी मौत हो गयी। मृत चालक कोतवाली थाना क्षेत्र के घसियार मुहल्ला निवासी सुबोध चौधरी का पुत्र राकेश चौधरी था। इससे परिजन व मुहल्लेवाले आक्रोशित हो गये। सदर अस्पताल मार्ग में उत्पाद विभाग की टीम पर पथराव किया और शव को कब्जे में ले लिया। इसके बाद शव को सड़क पर रख कर जाम कर दिया। जानकारी के

शव के साथ सड़क पर बैठे आक्रोशित परिजन व मुहल्ले के लोग।

अनुसार, उत्पाद थाना मुंगेर की टीम मंगलवार की अहले सुबह चार बजे धरहरा प्रखंड के दशरथी गांव में छापेमारी करने पहुंची। जहां से बाइक सवार दो शराब तस्करों को देसी शराब के साथ गिरफ्तार किया। पूछताछ के आधार पर फिर टीम दशरथी गांव में छापेमारी करने पहुंची, जहां पर शराब तस्करों ने हमला कर दिया। इस दौरान उत्पाद पुलिसकर्मी इधर-उधर भागने लगे। इसी दौरान प्राइवेट चालक राकेश को शराब माफियाओं ने पकड़ लिया और पास के बड़े कुएं में उसे फेंक दिया। इससे उसकी मौत हो गयी। इधर सूचना पर उत्पाद विभाग की पुलिस और धरहरा पुलिस मौके पर पहुंची और कुएं का पानी पंपिंग सेट से निकाल कर शव को बाहर निकाला। उत्पाद विभाग की टीम चालक के शव को लेकर सदर अस्पताल आ रही थी। इसी दौरान आक्रोशित भीड़ ने पुलिस टीम को रोक लिया और शव की मांगने लगे। पुलिस ने शव नहीं सौंपा तो आक्रोशितों ने पथराव शुरू कर दिया। इसमें विभागीय गाड़ी क्षतिग्रस्त हो गयी। भीड़ के हमले से पुलिस इधर-उधर हुई, तो भीड़ वाहन से शव निकाल लिया और सीधे कटघर स्थित उत्पाद थाना पहुंची। भीड़ ने उत्पाद थाने पर भी पथराव किया। इसमें खिड़की का शीशा टूट गया।

फेरे पूरे नहीं होने पर 10वें दिन दुल्हन पहुंच गई थाने

पटना। एक नई नवेली दुल्हन बनी लड़की ने पुलिस थाने में अरजी लगाई है कि उसके फेरे पूरे कराए जाएं। दुल्हन के मुताबिक बारात आई और स्टेज पर वरमाला के बाद दूल्हा मंडप में सात फेरे लेने भी पहुंचा था, लेकिन रुकावट आ गई और 10 दिन बीत जाने के बाद भी वो फेरे पूरे नहीं हो सके, जिस कारण वह अधूरी दुल्हन बनी बैठी है। यह फेरों की अजीब कहानी बिहार के आरा की बताई गई है।

जानकारी अनुसार जिले के रामपुर गांव में बीते 28 अप्रैल को एक बारात लड़की को ब्याहने के लिए पास के गांव से आई थी। द्वाराचार से लेकर जयमाला तक हर्षोल्लास से संपन्न हो गया। अब जबकि मंडप में फेरों का समय आया तो दुल्हन के चाचा और दूल्हे के भाई के बीच किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया। विवाद इतना बढ़ा कि लड़के पक्ष और लड़की पक्ष के बीच हाथापाई हो गई। यह देख मंडप में बैठा दूल्हा बगैर फेरे लिए ही अधूरी रस्मों के बीच उठकर वापस चला गया। ऐसे में सभी ने बहुत समझाया लेकिन कोई मान मनुहार काम नहीं आई। इसके दूसरे दिन 29 अप्रैल को रिश्ता तय करवाने वालों ने मध्यस्थता कर दूल्हे पक्ष को मनाने की कोशिश की। हुआ यह कि लड़के के घरवाले तो मान गए और गांव के ही नजदीक बाबा मठिया मंदिर में विवाह की बची रस्में पूरी करने के लिए वो पहुंच भी गए, लेकिन यहां पर दूल्हा नहीं पहुंचा। इसके बाद थक-हारकर दुल्हन के परिजन थाने पहुंचे हैं, जहां उन्होंने पुलिस से मदद की गुहार लगाई है। दुल्हन ने भी थाना प्रभारी से बिनती की है कि उसकी शादी की अधूरी रस्मों को पूरा करवा दें, ताकि वो पूरी दुल्हन बन अपने ससुराल जा सके।

पिता ही निकला बेटी का हत्यारा

पूर्वी चंपारण। जिले के बिजधरी ओपी क्षेत्र के सत्तरघाट पुल के पास हत्या कर फेंके गए लड़की के शव के मामले का पुलिस ने उदभेदन कर लिया है।इस मामले में पुलिस ने लड़की के पिता समेत तीन को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपितो में केसरिया थाना क्षेत्र के सोबैया गांव के लड़की के पिता प्रभुवन दास, लड़की के भाई चंद्रमोहन उर्फ़ अजय व मुजफ्फरपुर जिला के साहेबगंज थाना क्षेत्र के मनाईन गांव का आशुतोष कुमार उर्फ़ मुनिक शामिल है। चकिया डीएसपी सत्येंद्र कुमार सिंह ने बताया कि बीते 27 अप्रैल को बिजधरी ओपी अंतर्गत गंडक नदी पर बने सत्तरघाट पुल के तेरह नम्बर पाया के समीप बोरा में बंद एक लड़की एक शव पुलिस ने बरामद किया था। जिसके बाद एसपी कांतेश कुमार मिश्र के निर्देश पर टीम का गठन किया गया। टीम ने लड़की की पहचान केसरिया थाना के सौबैया गांव निवासी 22 वर्षीय काजल कुमारी के रूप में करते हुए मामले का वैज्ञानिक अनुसंधान शुरू किया। अनुसंधान के दौरान यह सामने आया कि लड़की पिता और परिजनो ने मिलकर लड़की की हत्या कर साक्ष्य छुपाने की नीयत से शव को सत्तरघाट पुल के नीचे फेक दिया था। उन्होंने बताया कि हत्या का कारण प्रेम प्रसंग में लड़की द्वारा एक बार घर से भाग जाना सहित अन्य पारिवारिक कारण बताया जा रहा है। जिसकाअनुसंन्धान किया जा रहा है।

सीएम नीतीश कुमार,राबड़ी देवी सहित 11 नव निर्वाचित एमएलसी ने ली शपथ

पटना। बिहार विधान परिषद के सभापति देवेश चन्द्र ठाकुर ने मंगलवार को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी सहित 11 नव निर्वाचित एमएलसी को शपथ दिलायी। बिहार विधान परिषद के द्विवार्षिक निर्वाचन-2024 में विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से नव निर्वाचित 11 सदस्यों ने विधान परिषद के सभागार में सादे समारोह में शपथ ली। इसमें जदयू से मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, खालीद अनवर, भाजपा से मंत्री मंगल पांडे, अनामिका सिंह, लाल मोहन गुप्ता, राजद से राबड़ी देवी, अब्दुल बारी सिद्दिकी, डॉ. उर्मिला ठाकुर, सैयद फैसल अली, हम से मंत्री संतोष कुमार सुमन एवं भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माले) की शशि यादव को शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत में बिहार विधान परिषद के सचिव अखिलेश कुमार झा ने निर्वाचन अधिसूचना एवं राज्यपाल द्वारा बिहार विधान परिषद के सभापति देवेश चंद्र ठाकुर को शपथ दिलाने संबंधी

गजट अधिसूचना पढ़ी।

शपथ ग्रहण समारोह में विधानसभा अध्यक्ष नंदकिशोर यादव, उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा, संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी, सुमित सिंह, मुख्य सचेतक सत्तारूढ़ दल संजय कुमार सिंह, सदस्यगण अवधेश नारायण सिंह, रामवचन राय, विरेन्द्र नारायण यादव, संजीव कुमार सिंह, रविन्द्र प्रसाद सिंह, नवल किशोर यादव, रेखा कुमारी, अनिल कुमार, राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

पेज एक का शेष

भाजपा ने जल...

जल, जंगल और जमीन पर पहला अधिकार आदिवासियों का है। कांग्रेस इस अधिकार को किसी भी कीमत पर खत्म होने नहीं देगी। वो आपको वनवासी कहते हैं और सारे जंगल और जमीन अडाणी, अंबानी को दे रहे हैं। एक दिन जंगल खत्म हो जायेंगे तो आपको कहेंगे जाओ भीख मांगो।

आदिवासियों से होती है बदसलूकी : राहुल गांधी ने कहा कि आदिवासियों के मुंह में पेशाब कर दिया जाता है लेकिन मीडिया वाले उसे नहीं दिखाते। मीडिया वाले दिखायेंगे कि अडानी की शादी में किसने किस तरह की घड़ी पहनी है और किस तरह के कपड़े पहने हैं। कोई भी मीडिया देश के असल मुद्दों पर चर्चा नहीं करती है। मीडिया भाजपा वालों से सवाल नहीं पूछती है। यह भी लोकतंत्र के लिए खतरे का सबब है। इससे सावधान रहने की जरूरत है।

हम सभी मिलकर हेमंत सोरेन को जेल से निकालेंगे : राहुल गांधी ने कहा कि एक साजिश के तहत झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री को जेल में डाल दिया गया है लेकिन किसी को चिंता करने की जरूरत नहीं है। हम सभी मिलकर उन्हें जेल से निकालेंगे। उन्होंने कहा कि कल्पना सोरेन, चम्पाई सोरेन और झारखंड के तमाम आदिवासी हेमंत सोरेन के साथ खड़े हैं।

देश के हर बेरोजगार को सरकारी नौकरी दी जाएगी : राहुल गांधी ने कहा कि देश में नौकरी की कमी नहीं है। देश के हर बेरोजगार को सरकारी नौकरी दी जायेगी। साथ ही कहा कि कांग्रेस पार्टी देश के तमाम किसानों का कर्ज माफ करेगी। कानूनी रूप से एमएसपी देगी। उन्होंने कहा कि सरकारी संस्थानों और गैर सरकारी संस्थानों में ठेकेदारी पर बहाली प्रथा को खत्म किया जायेगा। सभी को परमानेंट नौकरी दी जायेगी। साथ ही कहा कि ठेकेदारी प्रथा की नौकरी से देश के युवाओं का भविष्य खराब हो रहा है।

सभा में कांग्रेस के झारखंड प्रभारी गुलाम अहमद मीर, मंत्री बन्ना गुप्ता, मंत्री सत्यानंद भोक्ता, कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर, कल्पना सोरेन, विधायक निरल पुर्ति, विधायक सुखराम उरांव और प्रत्याशी जोबा माझी सहित अन्य मौजूद थे।

वोट की चोट...

मुख्यमंत्री मंगलवार को गुमला जिले के बसिया के कोनबीर एनएचपीसी मैदान में जनसभा को संबोधित कर रहे थे।चंपाई ने कहा कि 2014 से पूरे देश में झूठ की खेती हो रही है। भाजपा ने झारखंड में सबसे ज्यादा शासन किया, लेकिन झारखंड को अलग दिशा में ले गए। उन्होंने कहा कि झारखंड में पिछड़ेपन की जिम्मेदार भाजपा है। रोजगार और आदिवासी मूलवासी कल्याण की बात नहीं करते। दस साल से केवल जुमलेबाजी हो रही है। उन्होंने लोगों से अपील की कि पांच साल में मिला मौका नहीं गंवाना है। भाजपा को सत्ता से बेदखल करना है।

चंपाई ने कहा कि डबल इंजन की सरकार ने प्राइमरी स्कूल बंद किए। गांव के बच्चों की शिक्षा प्रभावित हुई। इनकी मंशा आदिवासी कल्याण की नहीं है। भाजपा यहां का इतिहास मिटाना चाहती है। जंगल के भीतर भी योजना पहुंची। सर्वजन पेंशन स्कीम हम लाए। ये भाजपा वाले झारखंड को आगे बढ़ाना कभी नहीं सोचे। केवल खनिज का व्यापार किया। पूंजीपतियों को सब सौंप दिया। झारखंड खुद अपने पैरों पर खड़ा होगा। चंपाई ने कहा कि राहुल गांधी युवा सम्राट हैं। चुनाव संविधान बचाने के लिए है। लोकतंत्र को बचाने के लिए है। तानाशाही को मिटाना है। तानाशाही की वजह से ही हेमंत सोरेन जेल में हैं। हमें मजबूती से संघर्ष करना है। हमने अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ लड़ाई की। हमें सुखदेव और कालीचरण को विजयी बनाना है। झारखंड की सभी 14 सीटों पर जीत हासिल करनी है।

लोकसभा चुनाव : तीसरे...

राज्य चुनाव अधिकारियों के अनुसार, मुर्शिदाबाद में सबसे अधिक 76.49 प्रतिशत मतदान हुआ, उसके बाद मालदाहा दक्षिण (73.68 प्रतिशत), मालदाहा उत्तर (73.30 प्रतिशत), और जंगीपुर (72.13 प्रतिशत) का स्थान रहा। टीएमसी, बीजेपी और कांग्रेस-सीपीआई (एम) गठबंधन ने चुनावी हिंसा, मतदाताओं को डराने-धमकाने और पोल एजेंटों पर हमले से संबंधित अलग-अलग शिकायतें दर्ज कराईं। चुनाव आयोग को सुबह 9 बजे तक 182 शिकायतें मिलीं, जिनमें से अधिकांश मुर्शिदाबाद और जंगीपुर निर्वाचन क्षेत्रों से थीं।मुर्शिदाबाद सीट पर वाम-कांग्रेस गठबंधन के उम्मीदवार मोहम्मद सलीम ने दावा किया कि उन्होंने निर्वाचन क्षेत्र के रबीनगर इलाके में एक "फर्जी बूथ एजेंट" को पकड़ लिया। कथित टीएमसी गुंडों द्वारा सीपीआई (एम) के बूथ एजेंटों को परेशान करने के आरोपों के बाद जब सलीम ने एक बूथ में प्रवेश करने की कोशिश की तो उन्हें "वापस जाओ" के नारों का सामना करना पड़ा। सलीम ने कहा, "टीएमसी ने पूरे निर्वाचन क्षेत्र में आतंक का राज कायम कर दिया है। चुनाव आयोग को कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए।"

सीट के करीमपुर इलाके में कुछ बूथों के बाहर टीएमसी और सीपीआई (एम) समर्थकों के बीच झड़प की खबर है। डोमकोल इलाके से टीएमसी और कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच झड़प की खबर है। भाजपा उम्मीदवार धनजॉय घोष को जंगीपुर क्षेत्र में टीएमसी कार्यकर्ताओं के विरोध का सामना करना पड़ा क्योंकि उन्होंने निर्वाचन क्षेत्र के कुछ बूथों में प्रवेश करने की कोशिश की। धनंजय घोष और टीएमसी ब्लॉक अध्यक्ष गौतम घोष के बीच हाथापाई हो गई, दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर मतदाताओं को डराने-धमकाने का आरोप लगाया।

मालदा दक्षिण सीट के इंग्लिशबाजार इलाके में बीजेपी ने टीएमसी पर अपने बूथ एजेंटों की पिटाई का आरोप लगाया, इसी तरह की शिकायतें कांग्रेस ने मालदा के रतुआ इलाके से राज्य की सत्तारूढ़ पार्टी के खिलाफ दर्ज कराईं। कुछ क्षेत्रों में, टीएमसी कार्यकर्ताओं ने यह आरोप लगाते हुए विरोध प्रदर्शन किया कि केंद्रीय बल मालदाहा उत्तर निर्वाचन क्षेत्र के बूथों पर मतदाताओं को "डराने" में भाजपा कार्यकर्ताओं की सहायता कर रहे थे।

उत्तर प्रदेश में आगरा में 51.53 प्रतिशत, आँवला में 54.73 प्रतिशत, बदायूँ में 52.77 प्रतिशत, बरेली में 54.21 प्रतिशत, एटा में 57.07 प्रतिशत, फ़तेहपुर सीकरी में 54.93 प्रतिशत, फ़िरोज़ाबाद में 56.27 प्रतिशत, हाथरस में 53.54 प्रतिशत, मैनपुरी में 55.88 प्रतिशत मतदान हुआ। प्रतिशत और संभल 61.10 प्रतिशत।

बदायूं में धोरणपुर के ग्रामीणों ने कथित तौर पर सड़क की मांग पूरी न होने के विरोध में मतदान का बहिष्कार किया। जिला मजिस्ट्रेट मनोज कुमार ने कहा कि मामला उनके संज्ञान में आया है और एक उप-विभागीय मजिस्ट्रेट (एसडीएम) को गांव भेजा गया है। फ़िरोज़ाबाद के तीन गांवों - नगला जवाहर, नीम खेरिया और नगला उमर - में एक भी वोट नहीं डाला गया क्योंकि ग्रामीणों ने अपनी समस्याओं पर प्रशासन का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की।

मंत्री आलमगीर आलम...

इस दौरान ईडी को करीब 30 करोड़ रुपये कैश मिले हैं। जानकारी के अनुसार संजीव लाल और जहांगीर आलम से रात भर ईडी के अधिकारियों ने पूछताछ की। पूछताछ के बाद ईडी ने दोनों पर बड़ा एक्शन लेते हुए धन शोधन निवारण अधिनियम के तहत गिरफ्तार कर लिया।

कैसे शुरू हुआ था मामला : बीते साल 2023 के फरवरी में विभाग के चीफ इंजीनियर वीरेंद्र के। राम को 10 हजार रुपये के रिश्वत से मामला शुरू हुआ था। जिसको लेकर वीरेंद्र राम को गिरफ्तार किया गया था। जिसके बाद मामले की शिकायत ईडी में करने के बाद जब विभाग में हो रहे भ्रष्टाचार के तार खुलने लगे तो मंत्री आलमगीर आलम के पीएस संजीव लाल और उसके सहयोगी जहांगीर आलम पर ईडी की नजर पड़ी।

कौन हैं मंत्री आलमगीर आलम : झारखंड सरकार के ग्रामीण विकास और संसदीय कार्य मंत्री आलमगीर आलम वर्तमान समय में पाकुड़ विधानसभा से विधायक हैं। साल 2000 में आलम पहली बार विधानसभा पहुंचे थे। जिसके बाद वो साल 2004, 2014 और 2019 में विधायक बने। सरपंच से राजनीति की शुरुआत करने वाले आलमगीर आलम साल 2006 से 2009 तक झारखंड विधानसभा के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

मंत्री ने सवाल का नहीं दिया जवाब : ईडी की रेड के बाद जब मीडिया ने आलमगीर आलम से मामले के बारे में पूछा, तो उन्होंने ये कहते हुए कुछ कहने से मना किया कि अभी कार्रवाई चल रही है। कार्रवाई पूरी होने तक कोई भी टिप्पणी करना ठीक नहीं है। वैसे भी संजीव लाल मेरे से पहले दो और मंत्रियों का पीएस रहा है।

रांची में पेड़ से...

घायलों में उदित मरांडी (साहिबगंज), आशा मुर्मू (गोड्डा) एवं झुनकी देवी (हेसल अनगड़ा) शामिल हैं। कार (जेएच 05 सी डब्ल्यू 6264) में सवार तीनों युवक सुरक्षित हैं। सोनू एवं झुनकी देवी खेलगांव स्थित ओरियंट क्राफ्ट कंपनी में काम कर स्कूटी (जेएच 01एफजे 7333) से घर लौट रहे थे। वहीं सीआईटी के छात्र उदित मरांडी, आशा मुर्मू एवं ज्योति भारती बाइक से सीआईटी लौट रहे थे। कार सवार पुरुलिया जा रहे थे। जैसे ही तीनों वाहन सिलवे टाटी बस्ती पहुंचे। विशाल गुलमोहर का पेड़ उन पर गिर गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने तत्काल घायलों को स्थानीय अस्पताल पहुंचाया, जहां से उनकी स्थिति को देखते हुए रिम्स रेफर कर दिया। पुलिस ने हाइड्रा की मदद से पेड़ को सड़क से किनारे कर आवागमन सामान्य कराया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया एवं दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को जब्त कर लिया गया है।

इधर झारखंड के पलामू जिले में वज्रपात की अलग-अलग घटनाओं में तीन की मौत हो गयी। मोहम्मदगंज थाना क्षेत्र में एक बच्ची एवं एक किशोर की मौत हुई, जबकि पांकी थाना क्षेत्र में एक बच्चे की मौत की खबर है। जिले के मोहम्मदगंज अंचल अंतर्गत कोल्हुआ सोनबरसा पंचायत के गाजीबिहरा गांव के लेमुआटीकर टोला निवासी बिनोद पासवान की पुत्री साक्षी कुमारी (4) की मौत मंगलवार की शाम वज्रपात से गम्भीर घायल होने के बाद हुसैनाबाद अनुमंडलीय अस्पताल ले जाने के दौरान रास्ते में हो गई। वह अपने घर के बाहर खेल रही थी।

दूसरी घटना इसी थाना क्षेत्र के गोलापत्थर टोला निवासी कमेश रजवार के रिश्तेदार के पुत्र बसंत रजवार (13) की मौत मंगलवार की शाम वज्रपात में गम्भीर रूप से घायल होने के बाद इलाज के लिए ले जाने के क्रम में रास्ते मे हो गई।

किशोर गढ़वा जिलान्तर्गत मझिआंव थाना क्षेत्र के मोरबे भरत पहाड़ी निवासी जोखन रजवार का पुत्र था। वह अपने फूफा के घर गोलापत्थर आया था। जानकारी के अनुसार वह स्मार्टफोन मोबाइल से घर से बाहर बात कर रहा था, तभी वज्रपात की चपेट में आ गया।तीसरी घटना पांकी प्रखंड के डेमा गांव में हुई। यहां वज्रपात से एक 13 वर्षीय बच्चे की मौत हो गयी। गांव में मातम छाया हुआ है। किशोरी की पहचान की जा रही है।

झामुमो ने चमरा....

हालांकि, चमरा चुनावी मैदान में डटे रहे और अपना नामांकन वापस नहीं लिया। चमरा के इस रूख ने पार्टी की परेशानी बढ़ा दी थी। बताते चलें कि, शेयरिंग के तहत यह सीट कांग्रेस के खाते में गई है और महागठबंधन के प्रत्याशी के तौर पर यहां से सुखदेव भगत चुनाव लड़ रहे हैं। इस सीट पर चमरा का उन्हीं से मुकाबला होगा।

पहले भी इस सीट पर किस्म त आजमा चुके हैं चमरा : लोहरदगा लोकसभा सीट आदिवासी बहुल क्षेत्र है। यहां की पहाड़ियों में बड़ी संख्यास में आदिवासियों का निवास है। चमरा लिंडा इस क्षेत्र में मजबूत पकड़ रखते हैं। उनका अपना वोट बैंक भी है।

चमरा लिंडा साल 2004, 2009 और 2014 के लोकसभा के चुनाव में इस सीट पर किस्म2त आजमा चुके हैं। भले ही वह तीनों बार चुनाव हारे, लेकिन दो बार एक लाख से अधिक मत प्राप्त कर अपनी ताकत का अहसास कराया। ऐसे में इस सीट से उनके चुनाव लड़ने से सबसे अधिक नुकसान कांग्रेस पार्टी को ही भुगतना पड़ सकता है।

मुसलमानों को मिलना...

इसके साथ उन्होंने एक वीडियो भी पोस्ट किया।बता दें कि, इससे पहले लालू यादव ने मुसलमानों को पूरा आरक्षण देने की वकालत की थी। पटना में पत्रकारों के सवाल पर लालू यादव ने कहा था कि जनता समझ गई है भाजपा को, मुसलमानों को आरक्षण मिलना चाहिए। लालू यादव के इस बयान के बाद भाजपा के नेता राजद समेत इंडिया गठबंधन पर हमलावर हो गए।

लालू यादव ने...

ये लोग एससी, एसटी और ओबीसी को मिला पूरा आरक्षण मुसलमानों को देना चाहते हैं।

नरेंद्र मोदी ने कहा, "आज कांग्रेस के एक बड़े साथी ने इंडी गठबंधन के इरादों पर मुहर लगा दी। उनके एक नेता जो चारा खाने के कारण जेल में हैं। जो पशुओं का चारा खा गए। अदालत ने जिनको सजा दी है।

सुप्रीम कोर्ट तक सबने माना है कि इन्होंने भ्रष्टाचार किया है। ऐसे उनके साथी और उनकी बेशर्मी देखो। वो अभी जमानत पर तबीयत के कारण बाहर आए हैं। जेल में कैद थे, कैदी हैं, गुनहगार हैं, अदालत ने उनको गुनहगार बना दिया है।"

पीएम ने कहा, "आपके गांव में भी अगर कोई जेल में छह महीने सजा काटकर आता है, तो गांव वाले उससे दूर रहते हैं। ये कांग्रेस वाले इतने गिर चुके हैं कि उनको माथे पर बिठाकर नाच रहे हैं। उन्होंने कहा मुसलमानों को आरक्षण मिलना चाहिए। सिर्फ आरक्षण नहीं मिलना चाहिए। वो कहते हैं कि पूरा का पूरा आरक्षण मुसलमानों को मिलना चाहिए। इसका मतलब क्या हुआ। यानी एससी, एसटी, ओबीसी समाज को जितना आरक्षण मिला है, वो छीनकर ये लोग पूरा का पूरा आरक्षण मुसलमानों को देना चाहते हैं।" उन्होंने कहा, "आखिर ये लोग ऐसा क्यों कर रहे हैं। क्योंकि यही वोट बैंक उसी के सहारे वो अपनी सांस गिन रहे हैं। बाकी तो उनका सब खत्म हो गया है। कुछ नहीं बचा है। मोदी तो इतने दिनों से सिर्फ यही कह रहा था कि ये आपके हक में से कुछ हिस्सा काटकर धर्म के आधार पर बांट देंगे, लेकिन इनकी साजिश तो और गहरी है।ये लोग अब डंके की चोट पर कह रहे है, जिस दिन वोटिंग हो रही है, उस दिन कह रहे हैं, एससी, एसटी, ओबीसी का पूरा आरक्षण ये मुस्लिम समाज को देना चाहते हैं।"बताते चलें कि, आरक्षण को लेकर किए गए सवाल के जवाब में लालू यादव ने कहा, "मुसलमानों को आरक्षण मिलना चाहिए पूरा।" प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी धर्म के आधार पर मुसलमानों को आरक्षण देने को लेकर पहले से ही कांग्रेस पर हमलावर हैं। लालू यादव के इस बयान से उनके हमले तेज हो गए हैं।

गिरिडीह में अर्द्धसैनिक...

बताया जाता है कि एसएसटी टुरिस्ट बस एसएसबी जवानों को लेकर गिरिडीह से गढ़वा लेकर जा रही थी। बस की तेज रफ्तार होने के कारण बगोदरडीह के झरीपुल के पास हाइवे पर बस असंतुलित होकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई। घटना में एक जवान की मौत हो गयी।

कैसे हुआ हादसा : बताया गया कि शिखर ट्रेवल्स नामक बस जीटी रोड़ डुमरी की तरफ से बगोदर की ओर जा रही थी। इसी दौरान बस एक बाइक सवार को बचाने के क्रम में असंतुलित होकर डिवाइडर में चढ़ गयी और बस का टायर फटने से सीधे सड़क पर जाकर पलट गयी। इस घटना में बस में सवार एक पुलिस जवान की मौके पर ही मौत हो गयी। वहीं बस में सवार 12 जवान घायल हो गए। बताया जाता हैं कि बस में कुल 40 जवान सवार थे।

राहत व बचाव में जुटे ग्रामीण : घटना के बाद स्थानीय लोगों की भीड़ घटनास्थल पर जुट गयी। वहीं सूचना पाकर बगोदर पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। बगोदर पुलिस ने ग्रामीणों के सहयोग से सभी घायल जवानों को इलाज के लिए बगोदर ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया। जहां चिकित्सक ने गम्भीर रूप से घायल चार जवानों को प्राथमिक उवचार कर बेहतर इलाज के लिए धनबाद पीएमसीएच रेफर कर दिया। वही अन्य मामूली रूप से घायल जवानों का इलाज बगोदर अस्पताल में किया जा रहा है।

बगोदर अस्पताल पहुंचे एसपी, घायलों का जाना कुशलक्षेम :इधर घटना की सूचना मिलने के बाद गिरिडीह एसपी दीपक शर्मा बगोदर अस्पताल पहुंचे और घायलो का हाल जाना। साथ ही गभीर रूप से घायलों को बेहतर इलाज के लिए धनबाद भेजने में सहयोग किया। घटना को लेकर बगोदर अस्पताल में घायल जवानों को देखने के लिए लोगों की भीड़ जुटी हुई थी।

संक्षिप्त

आकाश आनंद को नेशनल कोऑर्डिनेटर पद से मायावती ने हटाया, उत्तराधिकारी भी नहीं रहेंगे

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो मायावती ने नेशनल कोऑर्डिनेटर एवं अपना उतराधिकारी आकाश आनन्द को सभी पदों से हटा दिया है। यह जानकारी स्वयं बसपा सुप्रीमो मायावती ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स से मंगलवार की देर रात साझा की। उन्होंने कहा है कि पार्टी में अन्य लोगों को बढ़ाने के साथ ही आकाश आनन्द को नेशनल कोऑर्डिनेटर व अपना उत्तराधिकारी घोषित किया, किन्तु पार्टी व मूवमेंट के व्यापक हित में पूर्ण परिपक्वता आने तक अभी उन्हें इन दोनों अहम जिम्मेदारियों से अलग किया जा रहा है। उन्होंने कहा है कि विदित है कि बीएसपी एक पार्टी के साथ ही बाबा साहेब डॉ भीमराव अम्बेडकर के आत्म सम्मान व स्वाभिमान तथा सामाजिक परिवर्तन का भी मूवेमेन्ट है, जिसके लिए श्री कांशीराम जी व मैं खुद भी अपनी पूरी जिंदगी समर्पित की है और इसे गति देने के लिए नई पीढ़ी को भी तैयार किया जा रहा है। बसपा सुप्रीमो ने अपने संदेश में यह भी लिखा है कि आकाश आनंद के पिता आनंद कुमार पार्टी व मूवमेंट में अपनी जिम्मेदारी पहले की तरह ही निभाते रहेंगे। वह बीएसपी का नेतृत्व पार्टी व मूवमेंट के हित में एवं बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर के कारवां को आगे बढ़ाने में हर प्रकार का त्याग व कुर्बानी देने से पीछे नहीं हटने वाले हैं।

दुश्मनों से भी रिश्ते सुधारेंगे : पुतिन

मॉस्को। व्लादिमीर पुतिन 5वीं बार रूस के राष्ट्रपति बन गए हैं। मॉस्को के ग्रैंड क्रेमलिन पैलेस में पुतिन ने 33 शब्दों में शपथ ली। यह वही जगह है, जहां रूस के जार परिवार के 3 राजाओं (एलेक्जेंडर 2, एलेक्जेंडर 3 और निकोलस 2) की ताजपोशी हुई थी। शपथ के बाद पुतिन ने कहा कि हम और मजबूत होंगे। हम उन देशों के साथ अपने रिश्ते मजबूत करेंगे जो हमें दुश्मन समझते हैं। मैं जनता का विश्वास बनाए रखने के लिए हरसंभव कोशिश करूंगा। रूस में 15-17 मार्च को हुए चुनाव में पुतिन को 88 प्रतिशत वोट मिले थे। उनके विरोधी निकोले खारितोनोव को सिर्फ 4 प्रतिशत वोट मिले थे। रूस में हुए पुतिन के शपथ ग्रहण समारोह का अमेरिका, ब्रिटेन और कई यूरोपीय देशों ने बहिष्कार किया है। पुतिन ने इससे पहले साल 2000 में पहली बार राष्ट्रपति पद की शपथ ली थी। इसके बाद से 2004, 2012 और 2018 में भी वे राष्ट्रपति बन चुके हैं।

भाजपा में शामिल हुईं राधिका खेड़ा

रायपुर। कांग्रेस छोडने के बाद राधिका खेड़ा भाजपा में शामिल हो गई हैं। उन्होंने दिल्ली में एक्टर शेखर सुमन के साथ भाजपा की सदस्यता ली है। छत्तीसगढ़ में विवाद के बाद 5 मई को राधिका ने कांग्रेस से इस्तीफा दिया था। इसके बाद सोमवार को उन्होंने सुशील आनंद शुक्ला समेत कई बड़े नेताओं पर गंभीर आरोप लगाए थे। सोमवार देर शाम सुशील आनंद शुक्ला ने भी उन्हें मानहानि का नोटिस भेज दिया है। राधिका खेड़ा ने कहा कि, राहुल गांधी की यात्रा के दौरान मुझे सुशील आनंद शुक्ला ने शराब ऑफर की। भूपेश बघेल ने कहा छत्तीसगढ़ छोड़ दो। राजीव भवन में मुझे बंद किया गया, मैं चीखती-चिल्लाती, गुहार लगाती रही। मुझे गालियां दी गईं। मैंने ये बात सचिन पायलट, भूपेश बघेल और जयराम रमेश को बताई, लेकिन कुछ नहीं हुआ।

मनीष सिसोदिया की न्यायिक हिरासत अवधि बढ़ी

नई दिल्ली। दिल्ली के राऊज एवेन्यू कोर्ट ने दिल्ली आबकारी घोटाला के सीबीआई से जुड़े मामले में दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया की न्यायिक हिरासत 15 मई तक बढ़ा दी। आज सिसोदिया की न्यायिक हिरासत खत्म हो रही थी। उन्हें वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट ने सीबीआई के मामले में सिसोदिया को 24 अप्रैल को आज तक की न्यायिक हिरासत में भेजा था। ईडी ने इस मामले में मनीष सिसोदिया को नौ मार्च 2023 को पूछताछ के बाद तिहाड़ जेल से गिरफ्तार किया था। सिसोदिया को सीबीआई ने 26 फरवरी 2023 को गिरफ्तार किया था।

चंद्रबाबू की जमानत के खिलाफ सुनवाई टली

नई दिल्ली। आंध्र प्रदेश के पूर्व सीएम और टीडीपी चीफ चंद्रबाबू नायडू को हाईकोर्ट से मिली जमानत के खिलाफ मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई टल गई। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि वह इस मामले को 10 हफ्ते बाद सुनेगी। यह याचिका आंध्र प्रदेश सरकार की तरफ से दाखिल की गई है। नायडू को स्किल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन घोटाला मामले में 9 सितंबर को गिरफ्तार किया गया था। 31 अक्टूबर को स्किल डेवलपमेंट घोटाले में आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट ने उन्हें मेडिकल ग्राउंड पर अंतरिम जमानत दी थी। तब वे राजमुंदरी जेल से करीब 53 दिन बाद बाहर आए थे। 20 नवंबर को हाईकोर्ट ने उन्हें रेगुलर बेल दे दी। नायडू के खिलाफ आंध्र प्रदेश की जांच एजेंसियों ने पांच अलग-अलग मामलों में जांच चल रही है। इसके बाद आंध्र प्रदेश सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में अपील करते हुए हाईकोर्ट के फैसले को रद्द करने के निर्देश की मांग की थी। सरकार ने कहा है कि नायडू एक प्रभावशाली व्यक्ति हैं। वे एक सरकारी कर्मचारी सहित अपने दो प्रमुख सहयोगी पहले ही देश से भागने की व्यवस्था कर चुके हैं।

धाराशिव जिले में शिवसेना के दोनों गुटों में झड़प, ठाकरे गुट के कार्यकर्ता की मौत

मुंबई। धाराशिव जिले के भूम तहसील में स्थित पाठसांगवी इलाके में मंगलवार को मतदान के दौरान शिवसेना के दोनों गुटों के बीच जोरदार झड़प हुई। इसी दौरान शिंदे गुट की शिवसेना के कार्यकर्ताओं ने उद्धव ठाकरे गुट के कार्यकर्ताओं पर चाकू व अन्य धारदार हथियार से हमला कर दिया। इस घटना उद्धव ठाकरे गुट के शिवसेना के एक कार्यकर्ता की मौत हो गई, जबकि 6 कार्यकर्ता घायल हो गए। इस घटना के बाद पाठसांगवी मतदान केंद्र पर सुरक्षा बढ़ा दी गई है। पाठसांगवी मतदान केंद्र के बाहर मतदाताओं की वोटिंग के लिए कतार लगी हुई थी। इसी दौरान शिंदे गुट के गौरव उर्फ लाल्या अप्पा नाइकानवरे (उम्र 23) और ठाकरे गुट के समाधान नानासाहेब पाटिल (उम्र 27) भी मतदान केंद्र के बाहर अपने कार्यकर्ताओं सहित आ गए। इन दोनों के बीच आपस में विवाद शुरू हुआ और शिंदे गुट गौरव ने ठाकरे गुट के समाधान पाटिल पर चाकू से हमला कर दिया। इसके बाद दोनों गुटों के बीच मारपीट हुई। मौके पर उपस्थित पुलिस ने तत्काल गौरव को गिरफ्तार कर लिया। इस घटना में घायल ठाकरे गुट के कार्यकर्ताओं को नजदीकी अस्पताल में भर्ती करवाया गया है।

नौकरी गंवाने वाले शिक्षकों और गैर-शिक्षण कर्मियों को शीर्ष अदालत से मिली राहत

सुप्रीम कोर्ट ने 25,753 नियुक्तियां रद्द करने के फैसले पर लगायी अंतरिम रोक

- अगली सुनवाई 16 जुलाई को होगी

एजेंसियां,नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को कलकत्ता हाइकोर्ट के उस आदेश पर रोक लगा दी, जिसमें राज्य के सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में स्कूल सेवा आयोग (एसएससी) द्वारा की गयी 25,753 शिक्षकों और गैर-शिक्षण कर्मचारियों की नियुक्ति को अमान्य कर दिया गया था। प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने हालांकि, सीबीआइ को अपनी जांच जारी रखने और राज्य मंत्रिमंडल के सदस्यों की भी जांच करने की अनुमति दी। हालांकि, शीर्ष अदालत ने केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआइ) से कहा कि वह जांच के दौरान किसी संदिग्ध को गिरफ्तार करने जैसी कोई जल्दबाजी भरी कार्रवाई न करे।

शीर्ष अदालत ने नियुक्ति घोटाले के मामले में राज्य सरकार को जमकर फटकार लगायी। खंडपीठ ने कहा कि यह एक सुनियोजित धोखाधड़ी है। इससे लोगों का भरोसा उठ जायेगा। सुप्रीम कोर्ट ने पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई की, जिसमें 25,753 शिक्षकों और गैर शिक्षण कर्मियों की नियुक्तियों को रद्द करने के हाइकोर्ट के फैसले को चुनौती दी गयी है।

कोर्ट ने नियुक्ति प्रक्रिया को सुनियोजित धोखाधड़ी करार देते हुए कहा कि 25,753 शिक्षकों और गैर-शिक्षण कर्मचारियों की नियुक्ति से संबंधित डिजिटल रिकॉर्ड बनाये रखना अधिकारियों का कर्तव्य है। सुप्रीम कोर्ट ने मामले में नौकरी गंवाने वाले लोगों को अंतरिम राहत दी है। हालांकि, कोर्ट ने साफ किया कि यह सिर्फ अंतरिम रोक है। अगर सुप्रीम कोर्ट आगे चलकर किसी शख्स की नियुक्ति को गैरकानूनी पाता है, तो उसे अपना वेतन वापस करना होगा। कोर्ट ने कहा कि स्कूल सेवा आयोग (एसएससी) यदि योग्य व अयोग्य उम्मीदवारों की सूची अलग-अलग कर सकता है तो पूरे पैनल को रद्द करना ठीक नहीं होगा। इस संबंध में सुप्रीम कोर्ट ने एसएससी को विस्तृत रिपोर्ट जमा करने का आदेश दिया।

सुप्रीम कोर्ट ने साफ कर दिया कि सीबीआइ अभी इस मामले में जांच जारी रख सकती है, पर अभी कोई गिरफ्तारी जैसी दंडात्मक कार्रवाई इस जांच के आधार पर नहीं हो पायेगी। शीर्ष अदालत अब इस मामले में 16 जुलाई को सुनवाई करेगा।

गौरतलब है कि करीब 26 हजार शिक्षकों व गैर-शिक्षक कर्मियों की नौकरी रद्द करने के कलकत्ता हाइकोर्ट के आदेश के खिलाफ राज्य सरकार, स्कूल सेवा आयोग व पश्चिम बंगाल माध्यमिक शिक्षा पर्षद ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है। 2016 की इन नियुक्तियों को भ्रष्टाचार के चलते कलकत्ता हाइकोर्ट ने रद्द करते हुए शिक्षकों को 12 प्रतिशत ब्याज के साथ पूरा वेतन लौटाने का आदेश दिया था, जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने फिलहाल रोक लगा दी है।

कोर्ट के फैसले पर मैं बहुत खुश हूं : ममता

कोलकाता। सुप्रीम कोर्ट ने कलकत्ता हाई कोर्ट के उस फैसले पर रोक लगा दी है जिसमें राज्य में अवैध तरीके से नियुक्त हुए 25 हजार 453 शिक्षकों की नौकरी रद्द करने का आदेश दिया गया था। ममता बनर्जी ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर खुशी जाहिर की है। उन्होंने इसे न्याय की जीत करार दिया है। ममता बनर्जी ने माइक्रोब्लॉगिंग साइट एक्स पर लिखा है, "मैं देश के सर्वोच्च न्यायालय से न्याय पाकर बहुत खुश और मानसिक रूप से तनावमुक्त महसूस कर रही हूं। पूरे शिक्षक समुदाय को बधाई और भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय के प्रति मेरी विनम्र श्रद्धांजलि।

नेपाल: संसद के बजट सत्र को लेकर हुई सर्वदलीय बैठक बेनतीजा

काठमांडू। संसद के बजट सत्र को सुचारु रूप से चलाने को लेकर आज हुई सर्वदलीय बैठक बिना किसी नतीजे के समाप्त हो गई। बजट सत्र के दौरान संसद की कार्यवाही सुचारू रूप से चले, इस पर सत्तारूढ़ और विपक्षी दलों के बीच कोई सहमति नहीं बन सकी। प्रतिनिधि सभा के स्पीकर देवराज घिमिरे ने आज प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल प्रचण्ड सहित सभी दल के शीर्ष नेताओं की बैठक बुलाई थी। इस बैठक में आगामी बजट सत्र को लेकर दलों के बीच सहमति जुटाने का आग्रह किया गया था लेकिन विपक्षी दलों ने सत्ता पक्ष के कारण सहमति नहीं हो पाने का आरोप लगाया है। प्रमुख प्रतिपक्षी दल नेपाली कांग्रेस के अध्यक्ष शेरबहादुर देउवा ने बताया कि सहकारी घोटाले की जांच को लेकर सरकार और सत्ता पक्ष के दलों की गम्भीरता नजर नहीं आई। उन्होंने कहा कि हम अपनी मांग पर अभी भी अड़े हैं कि गृहमंत्री रवि लामिछाने के खिलाफ लगे सहकारी घोटाले के आरोप की संयुक्त संसदीय समिति से जांच कराई जाए लेकिन सत्ता पक्ष ने नहीं माना। देउवा ने कहा कि हमारी मांग पूरा नहीं होने तक संसद को नहीं चलने दिया जाएगा।

सुप्रीम कोर्ट ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की अंतरिम जमानत पर फैसला सुरक्षित रखा

- गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका पर 9 मई को सुनवाई करने का आदेश

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को अरविंद केजरीवाल की अंतरिम जमानत पर फैसला सुरक्षित रख लिया है। जस्टिस संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाली बेंच ने केजरीवाल की गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका पर 9 मई को सुनवाई करने का आदेश दिया। सुनवाई के दौरान ईडी की ओर से पेश एएसजी एसवी राजू ने कोर्ट को बताया कि आबकारी नीति से जुड़े घोटाले की शुरुआत में केजरीवाल की भूमिका की जांच नहीं हो रही थी। जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ी तो उनकी भूमिका सामने आई। तब जस्टिस संजीव खन्ना राजू से पूछा कि क्या आप केस डायरी मेंटेन करते हैं। हम फाइल नोटिंग्स देखना चाहते हैं। जस्टिस संजीव खन्ना ने ईडी की जांच पर सवाल उठाते हुए कहा कि अगर आप कह रहे हैं कि सरकार के मुखिया होने के नाते केजरीवाल इस घोटाले में शामिल हैं, तो इस नतीजे पर पहुंचने में आपको दो साल लग गए। यह तो एक जांच एजेंसी के लिए अच्छी बात नहीं है। सुनवाई के दौरान सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि अगर कोर्ट गिरफ्तारी को चुनौती देने जैसी याचिकाओं पर मिनी ट्रायल करेगी तो फिर जांच आगे कैसे बढ़ेगी। तब जस्टिस खन्ना ने कहा कि यह एक असाधारण स्थिति है। चुनाव चल रहा है और एक मुख्यमंत्री जेल में है। हम उसकी अंतरिम जमानत पर सुनवाई कर रहे हैं, यह सामान्य मामला नहीं है। जस्टिस खन्ना ने कहा कि हम अंतरिम जमानत पर सुनवाई इसलिए नहीं कर रहे कि केजरीवाल राजनेता हैं बल्कि हम यह देखने की कोशिश कर रहे हैं कि केजरीवाल के लिए चुनाव असाधारण स्थिति है क्या। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने केजरीवाल के वकील अभिषेक मनु सिंघवी से कहा कि अगर हम केजरीवाल को जमानत देते हैं तो वो अपनी कार्यालयी जिम्मेदारी भी निभाएंगे क्या। कोर्ट ने साफ किया कि हम नहीं चाहते कि आप अपनी कार्यालयी जिम्मेदारी निभाएं। तब सिंघवी ने कहा कि मैं हलफनामा देने के लिए तैयार हूं कि सीएम ऑफिस का कोई काम नहीं करेंगे।

इससे पहले 30 अप्रैल को सुनवाई के दौरान वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने केजरीवाल के मामले को संजय सिंह के जैसा बताते हुए कहा था कि दोनों की गिरफ्तारी बिना बयान लिये की गई।

केजरीवाल की न्यायिक हिरासत 20 मई तक बढ़ी

नई दिल्ली। दिल्ली के राऊज एवेन्यू कोर्ट की स्पेशल जज कावेरी बावेजा ने दिल्ली आबकारी घोटाला मामले में गिरफ्तार दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की न्यायिक हिरासत 20 मई तक बढ़ा दी है। आज केजरीवाल की न्यायिक हिरासत खत्म हो रही थी, जिसके बाद उन्हें वीडियो कान्फ्रेंसिंग के जरिये पेश किया गया। कोर्ट ने 23 अप्रैल को केजरीवाल की न्यायिक हिरासत आज तक बढ़ाई थी। कोर्ट ने 15 अप्रैल को कोर्ट ने केजरीवाल को 23 अप्रैल तक की न्यायिक हिरासत में भेजा था। 1 अप्रैल को कोर्ट ने 15 अप्रैल तक की न्यायिक हिरासत में भेजा था। 28 मार्च को कोर्ट ने केजरीवाल को 1 अप्रैल तक की ईडी हिरासत में भेजा था।

हरियाणा में भाजपा सरकार पर संकट के बादल

तीन निर्दलीय विधायकों ने वापस लिया समर्थन, सभी कांग्रेस खेमे में

एजेंसियां, रोहतक

हरियाणा में भाजपा को झटका लगा है। तीन निर्दलीय विधायकों ने भाजपा से समर्थन वापस ले लिया है। हरियाणा में उन्होंने कांग्रेस में को बाहर से समर्थन देने का एलान कर दिया है। साथ ही आने वाले विधानसभा चुनाव में भी कांग्रेस के साथ रहने की बात कही है। तीन विधायक रोहतक पहुंचे हैं। यहां उन्होंने नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र सिंह हुड्डा के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस की है। वहीं एक और निर्दलीय विधायक के बारे में समर्थन वापस लेने की चर्चा है। उनका अभी इंतजार है।

नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र सिंह हुड्डा और कांग्रेस अध्यक्ष उदयभान भी प्रेस वार्ता में मौजूद हैं। विधायकों ने नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में चल रही हरियाणा सरकार से अपना समर्थन वापस लेते हुए महंगाई बढने और बेरोजगारी का मुद्दा उठाया है।

सही समय पर सही फैसला लिया

नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने तीनों विधायकों का स्वागत किया और कहा कि इससे स्पष्ट होता है कि मौजूदा सरकार से लोगों का मोह भंग हो गया है और जनभावना को देखते हुए ही इन्होंने फैसला लिया है। उन्होंने कहा कि यह ठीक समय पर ठीक फैसला लिया गया है। कांग्रेस के पक्ष में लहर चल रही है, इसमें इनका भी योगदान होगा कि ये बाहर से कांग्रेस का समर्थन करेंगे। इन्होंने जनभावनाओं की कदर करते हुए ये फैसला लिया है।

अब काम नहीं आयेगी भाजपा की जुमलेबाजी : मायावती

लखीमपुर खीरी। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने मंगलवार दोपहर को खीरी लोकसभा से उम्मीदवार अंशय कालरा और धौरहरा से श्याम किशोर अवस्थी के पक्ष में मतदाने करने की अपील की है। जीआईसी मैदान चुनावी जनसभा में भाजपा, कांग्रेस और सपा गठबंधन पर जमकर हमला बोला। मायावती ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी जेब से राशन नहीं दे रहे हैं। जनता से जो टैक्स वसूला जाता है उसी से ही सरकार राशन दे रही है। भाजपा की अब कोई जुमलेबाजी और गारंटी काम आने वाली नहीं है। भाजपा पर हमला बोलते हुए मायावती ने कहा कि भाजपा ने पूंजीपतियों को धनवान बनाने के लिए काम किया जा रहा है। साथ ही कांग्रेस की तरह भाजपा में भी एजेंसियों का इस्तेमाल किया जा रहा है। उन्होंने कहा बसपा सरकार ने अपनी सरकार में किसान हितैषी काम किए हैं। लखीमपुर खीरी में चल रहे किसान आंदोलन को भाजपा के लोगों ने कुचलने का काम किया गया। राशन वितरण पर मायावती ने निशाना साधते हुए कहा कि जो थोड़ी सी खाद्य सामग्री दी जा रही है वह भाजपा अपनी जेब से नहीं बल्कि आप के टैक्स से दे रही है।

झूठे सपने और विजन दिखाकर गुमराह कर रहे कांग्रेस प्रत्याशी: कंगना

मंडी। भाजपा प्रत्याशी सुश्री कंगना रनौत ने मंगलवार को पूर्व मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर के साथ सराज और बंजार में प्रचार कर समर्थन मांगा। कंगना रनौत ने राजपरिवार पर तीखे हमले करते हुए कहा कि मंडी की मौजूदा सांसद प्रतिभा सिंह का नाम देश के अंतिम तीन सांसदों में शामिल है। मंडी की सांसद ही ढंग से अपनी सांसद निधि तक नहीं बांट पाई, ऐसे व्यक्ति से विकास की क्या ही उम्मीद की जा सकती है। कंगना रनौत ने कहा कि प्रतिभा सिंह सांसद निधि तब भी नहीं बांट पाई जब मंडी संसदीय क्षेत्र के लोगों को आपदा के समय में उसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। मंडी ने ऐसी सांसद को चुन रखा है जो अपने संसदीय क्षेत्र में नजर ही नहीं आती। सांसद निधि का पैसा प्रतिभा सिंह ने कहां खर्च किया इस बात को जानना और इसे लेकर प्रश्न खड़े करना हमारा काम है और हम इस काम को करते रहेंगे। कंगना ने कहा कि मंडी से कांग्रेस के प्रत्याशी अपनी ही सरकार की कार्यप्रणाली पर काफी समय पहले ही रो-रोकर आरोप लगा चुके हैं। माता और पुत्र इस बात को सरेआम स्वीकार चुके हैं कि सरकार में उनकी चल नहीं रही और उनके काम नहीं हो रहे हैं। दोनों ने अपनी ही सरकार को जमकर कोसा था और तो और प्रतिभा सिंह ने राहुल गांधी और प्रियंका गांधी के बारे में यहां तक कह दिया था कि यह दोनों मोदी के सामने बेकार हैं और उनके सामने न तो ये सक्षम हैं और न ही इनकी औकात है लेकिन आज यह दोनों फिर से कांग्रेस की गोद में जाकर बैठे हुए हैं। ऐसे लोगों के असली चेहरे को जनता जान चुकी है। जब पता है कि केंद्र में भाजपा सरकार बनाने जा रही है तो कांग्रेस प्रत्याशी लोगों को झूठे विजन और विकास के सपने दिखाकर गुमराह कर रहे हैं।

कंगना ने कांग्रेस प्रत्याशी को राजा बाबू कहकर संबोधित करते हुए कहा कि खुद को सनातनी बताने वाले सियापति हनुमानचंद्र की जय का नारा लगाते हैं। जवाहर लाल नेहरू को 25 वर्षों का कारावास बताते हैं और इंदिरा गांधी को देश की राष्ट्रपति बताते हैं। ऐसे लोगों को राजनीति में कोई काम नहीं और यह सिर्फ कार्टून नेटवर्क का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि आज सारे सर्वे इसी बात का संकेत दे रहे हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही तीसरी बार सत्ता संभालने जा रहे हैं। विश्व के नेता अभी से उनसे मिलने का समय मांग रहे हैं। तय है कि आयेंगे तो अब मोदी ही। उन्होंने कहा कि देश में विकास की एकमात्र गारंटी नरेंद्र मोदी है।

अब परमाणु हथियारों के साथ युद्धाभ्यास करेगी रूसी सेना

- नाटो सैनिकों की यूक्रेन में तैनाती की आशंकाओं के बीच पुतिन का फैसला

मॉस्को। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने अपनी सेना को परमाणु हथियारों की ड्रिल करने का आदेश दिया है। इस युद्धाभ्यास में नेवी और यूक्रेनी सीमा के पास तैनात सैनिकों को भी शामिल करने को कहा गया है। अलजजीरा के मुताबिक, पुतिन ने यह फैसला तब लिया जब नाटो और पश्चिमी देशों ने यूक्रेन की मदद के लिए सेना भेजने की बात कही थी।

रूस के रक्षा मंत्रालय ने बताया कि युद्धाभ्यास के दौरान टैक्टिकल न्यूक्लियर वेपेन की तैनाती पर फोकस किया जाएगा। हालांकि, यह ड्रिल कब होगी, इसकी जानकारी नहीं दी गई है। दरअसल, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने पिछले हफ्ते कहा था कि अगर यूक्रेन ने मदद मांगी तो वे अपने सैनिकों को वहां भेज सकते हैं। इसके ठीक एक दिन बाद ब्रिटेन के विदेश मंत्री डेविड कैमरून ने कहा था कि यूक्रेन अगर चाहे तो वह रूस पर हमला करने के लिए ब्रिटिश हथियारों का इस्तेमाल कर सकता है। रूस ने दोनों बयानों का विरोध किया था।

अमेरिका ने यूक्रेन में सैनिक भेजे तो जंग बढ़ेगी : पुतिन ने करीब 2 महीने पहले एक इंटरव्यू के दौरान अमेरिका को परमाणु हमले की चेतावनी दी थी। पुतिन ने कहा था कि अगर अमेरिका अपने सैनिकों को यूक्रेन में भेजेगा तो इससे जंग और बढ़ सकती है। दरअसल, रूसी न्यूज एजेंसी ने पुतिन ने सवाल पूछा था कि क्या रूस परमाणु जंग के लिए तैयार है। इस पर रूसी राष्ट्रपति ने कहा था कि हम फिलहाल परमाणु युद्ध की तरफ नहीं बढ़ रहे हैं। हमें अब तक इसकी जरूरत नहीं महसूस हुई। लेकिन अगर मिलिट्री या तकनीक के आधार पर कहा जाए तो हम इसके लिए तैयार हैं। अमेरिका इस बात को समझता है कि अगर उसने रूसी या यूक्रेन में अमेरिकी सैनिकों को भेजा तो रूस इस कदम को हस्तक्षेप के रूप में लेगा। इसके अलावा रूस के अलग-अलग मंत्री और अधिकारी कई बार यूक्रेन को परमाणु हमले की धमकी भी दे चुके हैं।

रूस ने बेलारूस में तैनात किए परमाणु हथियार : यूक्रेन के साथ 3 साल से जारी जंग के बीच पिछले साल 25 मार्च को रूस के राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन ने बेलारूस में रूस के परमाणु हथियार तैनात करने की घोषणा की थी। पुतिन ने कहा था कि बेलारूस के राष्ट्रपति लुकाशेंको काफी समय से परमाणु हथियारों को उनके देश में तैनात करने की मांग कर रहे हैं। बेलारूस के साथ रूस के करीबी सैन्य संबंध हैं। पुतिन ने कहा था कि रूसी परमाणु हथियारों की बेलारूस में तैनाती का कारण ब्रिटेन का यूक्रेन को आर्मर पियर्सिंग शेल मुहैया कराना बताया था, जिसमें यूरेनियम होता है। पुतिन का कहना था कि परमाणु हथियारों को बेलारूस में रख कर रूस वही कर रहा है जो अमेरिका ने कई दशकों से बेल्जियम, जर्मनी, इटली, नीदरलैंड्स और तुर्की में परमाणु हथियारों को रख कर किया।

तृणमूल नेता को मिली सशर्त जमानत

रायगंज। अपनी पत्नी को जान से मारने की कोशिश करने के आरोप में गिरफ्तार कालियागंज के तृणमूल नेता सुदीप बैश्य (38) को रायगंज अदालत ने मंगलवार को सशर्त जमानत दे दी। सुदीप का घर कालियागंज के बाघनबट्टाली इलाके के निवासी हैं और वह स्थानीय स्तर पर युवा तृणमूल कांग्रेस के अध्यक्ष हैं। दरअसल, तृणमूल नेता की पत्नी पिंकी दास ने सुदीप और उनके परिवारवालो के खिलाफ गत तीन मई को रायगंज महिला थाने में शिकायत दर्ज करवाई थी जिसमें पिंकी ने आरोप लगाया था कि उसके पति सुदीप और उनके परिवार वाले ने उनके साथ मारपीट की और गले में फंदा डालकर उनके हत्या की कोशिश की। इसके बाद पुलिस ने आरोपित को गिरफ्तार कर लिया था।

सनराइजर्स और सुपर जायंट्स का मुकाबला आज

हैदराबाद (एजेंसी)। सनराइजर्स हैदराबाद बुधवार को आईपीएल में अपने घरेलू मैदान पर लखनऊ सुपर जायंट्स का सामना करेगी। दोनो ही टीमें इस मैच को जीतकर प्लऑफ के लिए अपनी संभावनाएं बरकरार रखने का प्रयास करेगी। जो भी टीम इस मैच में हारी उसका बाहर जाना तय है। ऐसे में इस मैच में दोनो ही टीमें जीत के लिए अपनी पूरी ताकत लगा देंगी। इस मैच के परिणाम से अन्य टीमों की प्लेऑफ की संभावनाओं पर भी प्रभाव पड़ेगा। सनराइजर्स को पिछले मैच में मुम्मई इंडियंस से हार का सामना करना पड़ा था जिससे उसका मनोबल कमजोर हुआ है। शुरुआती मैच में जमकर रन बनाने वाले सनराइजर्स के बल्लेबाज पिछले कुछ मैचों से विफल रहे हैं। टीम हालांकि इस मैच में अभिषेक शर्मा, ट्रैविस हेड से आक्रामक शुरुआत की उम्मीद करेगी। उसका लक्ष्य अधिक से अधिक रन बनाना रहेगा क्योंकि उसकी बल्लेबाजी और गेंदबाजी कमजोर है। कप्तान पीट कमिंस के अलावा उसके अन्य गेंदबाज अब तक प्रभावी नहीं रहे हैं। दूसरी ओर केएल राहुल की कप्तानी में लखनऊ की टीम भी पिछले मैच में केकेआर से हारी थी। तब लखनऊ की टीम बल्लेबाजी के साथ ही गेंदबाजी में भी नाकाम रही। उसकी बल्लेबाजी की कमान राहुल के अलावा मार्कस स्टोइनिस और निकोलस पूरन के पास रहेगी। टीम की गेंदबाजी यश ठाकुर के अलावा रवि बिश्नोई के पास रहेगी। गेंदबाजी में तेज गेंदबाज मयंक यादव आईपीएल से बाहर हो गए हैं जबकि बायें हाथ के तेज गेंदबाज मोहसिन खान को भी चोट लगी है इससे उसे नुकसान हुआ है।

हेड को छोड़कर सनराइजर्स के अन्य बल्लेबाज पिछले कुछ मैचों में खराब फॉर्म में रहे हैं। युवा अभिषेक शर्मा पिछले चार मैचों में 30 रन से आगे नहीं जा सके हैं। सनराइजर्स के मुख्य कोच डेनियल विटोरी ने स्वीकार किया कि हर बार सलामी बल्लेबाजों पर ही जिम्मेदारी नहीं छोड़ी जा सकती, मध्यक्रम को भी कमान संभालनी होगी। हेनरिच क्लासेन लगातार अच्छा खेलने में नाकाम रहे हैं और नीतिश रेड्डी ने भी कुछ मैचों में अच्छा प्रदर्शन किया है। टी नटराजन ने अच्छी गेंदबाजी की है जबकि अनुभवी भुवनेश्वर कुमार ने भी लय हासिल कर ली है। दूसरी ओर लखनऊ सुपर जाइंट्स ने कोलकाता के खिलाफ इकाना स्टेडियम पर निराशाजनक प्रदर्शन किया और 137 रन पर आउट हो गई। कप्तान केएल राहुल नाकाम रहे जबकि मार्कस स्टोइनिस और निकोलस पूरन भी बड़ी पारियां नहीं खेल सके।

इस मैच में हालांकि बारिश से बाधा आ सकती है। हैदराबाद में मैच के दिन सुबह मौसम साफ रहने की उम्मीद है पर मैच शुरू होने से पहले बारिश के आसार हैं। ऐसे में अगर बारिश के कारण ये मैच नहीं होता है तो लखनऊ और सनराइजर्स को झटका लगेगा।

अब तक सनराइजर्स हैदराबाद ने 11 मैचों में से 6 जीते है और वह अंक तालिका में चौथे स्थान पर है उसके 12 अंक हैं वहीं नेट रन रेट -0.065 का है जबकि दूसरी ओर, लखनऊ सुपर जायंट्स ने भी 11 मैचों में से 6 जीते हैं और वह भी 12 अंकों और -0.371 के नेट रन रेट के साथ तालिका में 5वें स्थान पर हैं। ऐसे में इस मैच को जीतने वाली टीम 14 अंकों के साथ तीसरे नंबर पर पहुंच जाएगी पर बारिश के कारण अगर खेल नहीं हो पाता है तो दोनों ही टीमों को एक-एक अंक मिलेगा और दोनों टीमें 13 अंक तक पहुंच जाएंगी। जिससे चेन्नई सुपर किंग्स अंक तालिका में पांचवें स्थान पर पहुंच जाएगी। अभी वह 12 अंकों के साथ ही तीसरे नंबर पर है।

टीम

सनराइजर्स हैदराबाद = पैट कमिंस (कप्तान), अभिषेक शर्मा, हेनरिक क्लासेन (विकेटकीपर), अब्दुल समद, शाहबाज़ अहमद, मार्को जानसन, भुवनेश्वर कुमार, टी नटराजन, सनवीर सिंह, ट्रैविस हेड, मयंक अग्रवाल, नितीश कुमार रेड्डी

लखनऊ सुपर जाइट्स = केएल राहुल (कप्तान/विकेटकीपर), मार्कस स्टोइनिस, एश्टन टर्नर, आयुष बदोनी, क्रुणाल पंड्या, रवि बिश्नोई, नवीन-उल-हक, मोहसिन खान, यश ठाकुर, अर्शिन कुलकर्णी, युद्धवीर सिंह, दीपक हुडा, निकोलस पूरन।

शुभमन गुजरात टाइटंस की कप्तानी के लिए सबसे बेहतर पर उन्हें काफी कुछ सीखना होगा: मिलर

अहमदाबाद (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका के आक्रामक बल्लेबाज डेविड मिलर ने कहा कि युवा शुभमन गिल गुजरात टाइटंस की कप्तानी के लिए सबसे उपयुक्त खिलाड़ी हैं पर उन्हें अभी काफी कुछ सीखना होगा। शुभमन को इस सत्र की शुरुआत में हार्दिक पंड्या के मुम्बई टीम में जाने के कारण नया कप्तान बनाया गया था। उनके लिए ये सत्र हालांकि अच्छा नहीं रहा और टीम के साथ ही शुभमन का प्रदर्शन भी अच्छा नहीं रहा। इसके बाद भी मिलर इस युवा खिलाड़ी को कप्तानी देने को सही मानने हैं। मिलर ने आरसीबी और जीटी मैच के बाद कहा कि शुभमन एक बेहतरीन खिलाड़ी हैं, जैसा कि हम सभी जानते हैं। वह अब भी युवा है लेकिन मुझे अब भी लगता है कि वह कप्तानी के लिए सबसे बेहतरीन खिलाड़ी हैं। शुभमन ने आरसीबी के खिलाफ 7 गेंदों में 2 रन बनाए जबकि मिलर ने 20 गेंदों में 30 रन बनाये। मिलर ने इसी को लेकर कहा कि शुभमन एक बेहतरीन खिलाड़ी हैं, जैसा कि हम सभी जानते हैं, उन्होंने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपने को साबित किया है। शुभमन गिल की कप्तानी वाली गुजरात टाइटंस का प्रदर्शन इस सत्र में अच्छा नहीं रहा है और आईपीएल 2024 के प्लेऑफ में पहुंचने की उसकी उम्मीदें तकरीबन समाप्त हो गयी हैं। टीम को अपने 11वें मैच में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के हाथों चार विकेट से हार का सामना करना पडा था। इस मैच में गुजरात टाइटंस गुजरात आईपीएल 2024 की अंक तालिका में 9वें स्थान पर आ चुकी है। टीम का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहने से शुभमन पर सवाल उठ रहे हैं।

आईपीएल में एक शतक और लगते ही बनेगा सबसे अधिक शतकों का रिकार्ड

अब तक 12 शतक लगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल में इस बार जिस प्रकार से शतक लग रहे हैं। उससे साफ है कि शतकों के मामले में एक नया रिकार्ड बनेगा। आईपीएल में मुम्बई इंडियंस और सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ मैच में सूर्यकुमार यादव के शतक के साथ ही इस सत्र में अब तक 12 शतक लग गये हैं। इससे पहले 2023 सत्र में इतने शतक लगे थे। वहीं एक और शतक के साथ ही आईपीएल में सबसे अधिक शतक का नया रिकॉर्ड बन जाएगा क्योंकि सत्र में अभी 19 मैच और होने हैं। सनराइजर्स के खिलाफ 102 रन की पारी खेलने के साथ ही सूर्यकुमार ने भी एक उपलब्धि हासिली की है। वह ऐसे दूसरे बल्लेबाज बन गए हैं, जिन्होंने मुंबई इंडियंस की ओर से दो शतक बनाए हैं। उनसे पहले केवल रोहित शर्मा ने यह रिकार्ड बनाया था। मुंबई इंडियंस के सूर्यकुमार यादव ने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ 51 गेंद पर 102 रन बनाये। यह आईपीएल 2024 में 12वां मौका है, जब किसी बल्लेबाज ने शतकीय पारी खेली है।

सूर्यकुमार ने टी20 क्रिकेट में चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए चौथा शतक बनाया है। इस नंबर पर उनसे ज्यादा शतक सिर्फ ग्लेन मैक्सवेल 5 ही लगा सके हैं। डेविड मिलर 4 शतक के साथ बराबरी पर हैं। सूर्यकुमार ने शतकीय पारी के दौरान तिलक वर्मा 37 के साथ 143 रन की नाबाद साझेदारी की। यह मुंबई इंडियंस के लिए चौथे विकेट की सबसे बड़ी साझेदारी का रिकॉर्ड है। आईपीएल की बात करें तो ये लक्ष्य का पीछा करते हुए चौथे विकेट के लिए दूसरी सबसे बड़ी साझेदारी है। सूर्या-तिलक महज एक रन से रिकॉर्ड तोड़ने से दूर रह गए। 144 रन की साझेदारी का यह रिकॉर्ड गुरकीरत सिंह और शिमरन हेटमायर के नाम है। सूर्या का यह टी20 क्रिकेट में ओवरऑल छठा शतक है।

टी20 विश्व कप 2024 के लिए भारतीय टीम की जर्सी लॉन्च हुई

मुम्बई(एजेंसी)। अगले माह वेस्टइंडीज और अमेरिका में संयुक्त रुप से होने वाले टी20 विश्वकप के लिए भारतीय टीम की जर्सी लॉन्च हो गयी है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने इस जर्सी को लॉन्च करने का एक वीडियों भी सोशल मीडिया पर डाला है। इसमें भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा, ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा और अनुभवी स्पिनर कुलदीप यादव भी नजर आ रहे हैं। वहीं भारतीय टीम ने भी इस वीडियो को रीपोस्ट किया। वीडियो के साथ लिख है- एक जर्सी। एक राष्ट्र। पेश है नई टीम इंडिया टी20 जर्सी। आगामी आईसीसी शोपीस इवेंट के लिए भारत की जर्सी में वी-आकार की गर्दन पर तिरंगे रंग की रेखाएं और केसरिया रंग की आस्तीन पर क्लासिक एडिडास धारियां होंगी। जर्सी के केंद्र में इंडिया लिखा होने के साथ आगे की तरफ नीला रंग शामिल किया गया है।

बीसीसीआई ने गत सप्ताह ही इस आईसीसी टूर्नामेंट के लिए 15 खिलाड़ियों की टीम भी घोषित

कर दी थी। भारत को आईसीसी टूर्नामेंट के ग्रुप ए में पाकिस्तान, आयरलैंड, कनाडा और सह-मेजबान अमेरिका के साथ रखा गया है। भारतीय टीम इसमें अपने टी20 विश्व कप अभियान की शुरुआत 5 जून को न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में आयरलैंड के खिलाफ करेगा, इसके बाद 9 जून को उसी स्थान पर पाकिस्तान के खिलाफ अहम मुकाबला होगा। इसके बाद भारत क्रमशः 12 और 15 जून को अमेरिका और कनाडा से खेलना है।

ब्रेट ली ने सुपर जाइंट्स के कप्तान राहुल के रवैये पर सवाल उठाये

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व तेज गेंदबाज ब्रेट ली ने लखनऊ सुपर जाइंट्स के कप्तान केएल राहुल के रवैये की अलोचना करते हुए कहा है कि उनके कम स्ट्राइक रेट के कारण अन्य बल्लेबाजों पर जरुरत से ज्यादा दबाव पड़ रहा है। ब्रेट ली के अनुसार राहुल की उतार-चढ़ाव वाली स्ट्राइक रेट के कारण आने वाले बल्लेबाजों को तेजी से खेलने के लिए मजबूर होना पड़ता है। आईपीएल के इस सत्र में पांच सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ियों में शामिल होने के बाद भी राहुल की स्ट्राइक रेट पर काफी सवाल उठे हैं। ली ने कहा, मुझे लगता है कि अगर आप केकेआर और लखनऊ दोनों तरफ के शुरुआती बल्लेबाजों को देखें, तो समझ में आत है। केकेआर ने तेज से रन बनाये हैं।

आईपीएल के समय पीएसएल का आयोजन पीसीबी के लिए होगा नुकसानदेह

लाहौर। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) को अगले साल पाकिस्तान सुपर लीग (पीएसएल) का आयोजन अप्रैल-मई में करने जा रहा है। वहीं इसी समय पर भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) आईपीएल का आयोजन करता है। ऐसे में पीएसएल का आयोजन पीसीबी को महंगा पड़ सकता है। इसका कारण ये है कि पीएसएल के लिए आईपीएल जैसी विश्व की सबसे महंगी टी-20 लीग का मुकाबला करना कठिन रहेगा। इसका कारण है कि पीएसएल को को विदेश खिलाड़ी मिलना कठिन हो जाएंगे क्योंकि सभी की पसंद आईपीएल होता है। अब तक रोवमैन पॉवेल, शेन रदरफोर्ड, सिकंदर रजा, ल्यूक वुड, राइली रूसो, शेमार जोसफ, शाई होप और डेविड विली ही आईपीएल के अलावा पीएसएल के इस सत्र में नजर आए थे। वहीं पिछले कुछ सत्र में आंद्रे रसेल, राशिद खान और सुनील नरेन ने भी पीएसएल में खेला था। यदि दोनों टूर्नामेंट एक ही समय हुए तो विदेशी खिलाड़ी आईपीएल की तरह आयेंगे और पीएसएल को दूसरे दर्जे के ही क्रिकेटर मिल पायेंगे। इसके अलावा पीसीबी को प्रसारण अधिकार के लिए भी मुश्किल होगी क्योंकि दोनो ही टूर्नामेंट एक ही समय पर होते हैं। ऐसे में मैच का समय एक होने से पीएसएल की व्यूवरशिप कम होना तय है। वैसे ही टूर्नामेंट के दौरान स्टेडियम में कम होते दर्शकों से पीसीबी पहले ही परेशान है। अब तक देखा गया है कि आईपीएल के दौरान कोई अन्य क्रिकेट बोर्ड अपनी घरेलू लीग नहीं आयोजित करता है।

द्रविड़ से कही श्रीसंत की एक बात ने बदली सैमसन की तस्वीर

नई दिल्ली। अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन का कहना है कि एस श्रीसंत का उनकी सफलता में बड़ा योगदान है। सैमसन के अनुसार तेज गेंदबाज एस श्रीसंत के बोले एक झूठ से उनकी किस्मत बदल गयी। पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज एस श्रीसंत ने काफी पहले रॉयल्स के कप्तान राहुल द्रविड़ से

कहा था कि एक स्थानीय मैच में संजू ने उनकी गेंदों पर छह छक्के मारे थे। इसके बाद ही मुझे अवसर मिले। सैमसन ने 2009 में कोलकाता नाइटराइडर्स की ओर से आईपीएल में प्रवेश किया हालांकि उन्हे खेलने का अवसर नहीं मिला। पहला खिताब जीतने के बाद फ्रैंचाइजी ने सैमसन को बिना उतारे ही रिलीज कर दिया। यह वही समय था जब सैमसन को अपनी योग्यता साबित करने की जरूरत थी। एक वीडियो में सैमसन ने कहा, केकेआर के साथ होने के कारण मुझे कोई अवसर नहीं मिल रहा था पर पर आरआर के खिलाफ मैच के दौरान जब राहुल द्रविड़ उनकी कप्तानी कर रहे थे तो श्रीसंत ने उन्हें होटल लॉबी में देखा और मेरी सहायता की। उन्होंने उनसे कहा, केरल का एक लड़का है, जिसने मुझे स्थानीय टूर्नामेंट में एक ओवर में छह छक्के लगाए हैं। हमें निश्चित रूप से उसे एक ट्रायल का अवसर देना चाहिए। श्रीसंत की इस बात से सैमसन को सहायता मिली। रॉयल्स ने उन्हें चुना और 2013 में अपने डेब्यू के बाद से ही वे उनकी टीम में एक अहम खिलाड़ी बन गए हैं। एक होनहार बल्लेबाज से लेकर फ्रैंचाइजी का पोस्टर बॉय बनने और अब इसके कप्तान बनने तक सैमसन ने सब कुछ देखा है। सैमसन की कहानी की पुष्टि तब हुई जब श्रीसंत ने स्वीकार किया कि युवा विकेटकीपर बल्लेबाज को आरआर सेट-अप में लाने के लिए उन्होंने झूठ बोला था हालांकि द्रविड़ ने उनकी बात को पकड़ लिया।

टी20 विश्वकप में नजर नहीं आयेंगे आईपीएल में धूम मचाने वाले नरेन

मुम्बई (एजेंसी)। आईपीएल 2024 सत्र में अपने ऑलराउंड प्रदर्शन से धूम मचाने वाले वेस्ट इंडीज के सुनील नरेन आगामी टी20 विश्वकप कप में नजर नहीं आयेंगे। नरेन से विश्वकप में खेलने के लिए इंडीज टीम के कप्तान रोवमन पॉवेल ने संन्यास से वापसी की अपील की थी पर इस क्रिकेटर ने ये कहते हुए इंकार कर दिया कि ये स्थान किसी युवा क्रिकेटर को मिलना चाहिये। नरेन ने आईपीएल में 400 से ज्यादा रन बनाए हैं जबकि14 विकेट भी लिए हैं। वह आईपीएल में सबसे अधिक रनों के लिए मिलने वाली ऑरेंज कैप की सूची में तीसरे नंबर पर हैं और सबसे अधिक विकेट के लिए मिलने वाली पर्पल कैप की सूची में छठे नंबर पर है। नरेन इस सत्र में कोलकाता नाइटराइडर्स की ओर से खेल रहे हैं। उन्होंने अब इस टी20 लीग में 41.90 की औसत और 183.66 स्ट्राइक रेट से 461 रन बनाए हैं। इसमें एक शतक शामिल हैं। इसके साथ ही उन्होंने 14 विकेट भी लिए हैं। अब तक केवली 5 गेंदबाज ही उनसे ज्यादा विकेट ले पाए हैं इसके बाद भी वह वेस्टइंडीज की टीम में नहीं रहेंगे।

पॉवेल ने नरेन को मनाने की बहुत कोशिश की पर वह नहीं माने। पॉवेल ने कहा कि नरेन को वेस्टइंडीज की विश्व कप टीम का हिस्सा बनना चाहिये। पॉवेल ने कायरन पोलार्ड सहित कई दिग्गजों से भी अपनी बात नरेन तक पहुंचाई पर नरेन ने साफ इंकार कर दिया और कहा कि उन्होंने बहुत सोच समझकर संन्यास लिया है और अब वे इंटरनेशनल क्रिकेट में वापसी नहीं करेंगे। सुनील नरेन ने नवंबर 2023 में ही संन्यास का ऐलान किया है। 34 साल के सुनील नरेन ने वेस्टइंडीज के लिए 6 टेस्ट, 65 वनडे और 51 टी20 मैच खेले हैं। उन्होंने आखिरी टी20 इंटरनेशनल मैच 2019 में खेला था। इसके बाद से वह वेस्टइंडीज के लिए कभी नहीं खेले हैं. हालांकि, आईपीएल समेत दुनिया की तमाम टी20 लीग में वह खेलते रहे हैं। उन्होंने अब तक 509 टी20

मैच खेले हैं। उन्होंने इन मैचों में 549 विकेट लिए हैं और 4195 रन भी बनाए हैं।

गावस्कर ने विराट के धीमे स्ट्राइक रेट को लेकर दिये बयान का बचाव किया

मुम्बई। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सुनील गावस्कर ने आईपीएल में विराट कोहली के धीमे स्ट्राइक रेट को लेकर दिये अपने बयान का बचाव किया है। गावस्कर ने कहा कि कमेंटरी करने पर जो दिखता है वही हम बोलते हैं। इस सत्र में 500 से अधिक रन बनाने विराट पावर प्ले में कम स्ट्राइक रेट को लेकर आलोचना का केन्द्र बने थे। इसके बाद कोहली ने गुजरात टाइटंस के खिलाफ मुकाबले में 44 गेंद में नाबाद 70 रन की पारी खेलकर सबका मुंह बंद कर दिया था। गुजरात टाइटंस के खिलाफ रॉयल चैलेंजर्स को को मिली जीत के बाद विराट ने स्ट्राइक रेट को लेकर अपनी आलोचना करने वालों को करारा जवाब दिया थी। वहीं उनके बयान से गावस्कर नाराज दिखे। गावस्कर ने कहा कि कमेंटेटर कोहली से सवाल इसलिए पूछ रहे थे क्योंकि वह 118 के स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी कर रहे थे और 14-15वें ओवर में आउट हुए थे। वहीं विराट ने गुजरात के खिलाफ 70 रन बनाकर कहा था कि वो सभी लोग जो स्ट्राइक रेट और मेरे अच्छे से स्पिन नहीं खेलने के बारे में बात करते हैं वो नहीं जानते कि मेरे लिए केवल टीम को जीत दिलाना ही मायने रखता है। 15 साल तक ऐसा करने की वजह है कि मैंने बहुत से मैदानों पर टीम के लिए मैच खेले और जीते भी हैं। ऐसे में मुझे नहीं लगता कि जो खुद मैदान पर नहीं होते, उन्हें कमेंटरी बॉक्स में बैठकर ऐसी बातें करनी चाहिए। वहीं इससे पहले गावस्कर ने कहा था कि यदि आप पारी शुरु करते हैं, फिर 14वें या 15वें ओवर में आउट हो जाते हैं और तब भी आपका स्ट्राइक रेट 118 रहता है तो इस स्थिति में अगर आप चाहते हैं कि तालियां मिलें तो यह थोड़ा अजीब है।

सनराइजर्स की हार से सीएसके, सुपरजायंट्स और दिल्ली के प्लेऑफ की राह बनी

मुम्बई(एजेंसी)। आईपीएल लीग मुकाबले में मुंबई इंडियंस की सनराइजर्स हैदराबाद पर जीत से चेन्नई सुपरकिंग्स (सीएसके), लखनऊ सुपरजायंट्स और दिल्ली कैपिटल्स को लाभ हुआ है। वहीं सनराइजर्स के प्लेऑफ की उम्मीदें कमजोर हुई हैं। वहीं

सनराइजर्स हैदराबाद इस हार के बाद भी अंक तालिका में चौथे नंबर पर कायम है। सनराइजर्स की टीम एक समय अंक तालिका में पहले नंबर पर थी और तब वह टॉप-2 में रहने की उम्मीद कर रही थी पर अब उसे टॉप-4 के लिए भी कड़ा संघर्ष करना पड़ रहा है। अंक तालिका में चेन्नई सुपरकिंग्स, सनराइजर्स हैदराबाद और लखनऊ सुपरजायंट्स के एक बराबर 12-12 अंक हैं। इस प्रकार नेट रनरेट के आधार पर उनकी रैंकिंग तीसरी, चौथी और पांचवीं है। तीनों ही

टीमों के अब 3-3 मैच बचे हैं। ऐसे में एक गलती से ये टीमें प्लेऑफ से बाहर होंगी।

यही कारण है कि जब मुंबई इंडियंस ने सनराइजर्स हैदराबाद को हराया तो चेन्नई सुपरकिंग्स और लखनऊ सुपरजायंट्स के प्रशंसकों ने खुशी जाहिर की। चेन्नई और लखनऊ ही नहीं, दिल्ली कैपिटल्स के फैंस की प्लेऑफ की उम्मीद भी हैदराबाद की हार से जाग गई है। दिल्ली की टीम 11 मैचों में से 5 जीतकर 10 अंकों के साथ छठे नंबर पर है। दिल्ली के प्रशंसकों उम्मीद कर रहे हैं कि उनकी पसंदीदा टीम बाकी बचे तीन मैच जीतकर प्लेऑफ में जगह बना सकती है। ऐसा संभव भी है और अगर चेन्नई, हैदराबाद व लखनऊ में से कोई दो टीम जीत जाएं तो दिल्ली आगे निकल सकती है।

सनराइजर्स हैदराबाद की हार से कोलकाता नाइटराइडर्स और राजस्थान रॉयल्स को भी थोड़ी राहत ही मिली होगी। कोलकाता और राजस्थान दोनों ही टीमें 16-16 अंक लेकर पहले दो स्थान पर हैं. अगर वे एक-एक मैच और जीत लेती हैं तो टॉप-2 में रहने का उनका दावा बेहद मजबूत हो जाएगा।

भारत - वेस्टइंडीज के बीच हो सकता है टी-20 विश्वकप का फाइनल : लारा

नई दिल्ली (एजेंसी)। अगले महीने होने वाले टी20 विश्व कप 2024 में भारत-वेस्टइंडीज के बीच फाइनल की ख्वाहिश जताते हुए महान क्रिकेटर ब्रायन लारा ने कहा है कि सूर्यकुमार यादव को भारत के लिए तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करनी चाहिए। लारा ने यह भी कहा कि विश्व कप में भारत और वेस्टइंडीज के बीच फाइनल होने से 2007 में हुई गलती की भरपाई हो जाएगी जब वेस्टइंडीज में हुए वनडे विश्व कप में भारत के जल्दी बाहर होने से मेजबान को काफी खामियाजा भुगतना पड़ा।

भारत ने कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली को टीम में रखा है जबकि शुभमन गिल और रिंकू सिंह जैसे युवा रिजर्व में हैं। सूर्यकुमार मुख्य टीम में है। लारा ने कहा कि मेरी सलाह यह होगी कि सूर्यकुमार यादव को तीसरे नंबर पर उतारा जाए। वह टी20 क्रिकेट के महानतम बल्लेबाजों में से है। अगर आप सर विव जैसे खिलाड़ियों से बात करें तो वह आपको बताएंगे कि वह कैसे बल्लेबाजी को बेताब रहते थे। उन्होंने कहा कि मुझे सूर्यकुमार के साथ भी यही लगता है। उसे जल्दी से उतारना जरूरी है और अगर वह 10-15 ओवर खेल जाता है तो कमाल कर सकता है।

लारा ने कहा कि अगर आप उसको जल्दी उतारते हैं तो वह आपको जीत की स्थिति में पहुंचा देगा और बाद में बल्लेबाजी करने पर जीत दिला देगा। सूर्यकुमार आम तौर पर चौथे और कोहली तीसरे नंबर पर उतरते हैं। आईपीएल में कमेंट्री कर रहे लारा ने कहा कि भारत और वेस्टइंडीज के बीच फाइनल हो सकता है जिससे 2007 विश्व कप में हुई त्रासदी की भरपाई हो जाएगी जब भारतीय टीम पहले दौर में बाहर हो गई थी।

लारा ने कहा कि इंग्लैंड टीम को वेस्टइंडीज बहुत पसंद है। इंग्लैंड भी अंतिम 4 में होगा और चौथे स्थान पर डार्कहॉर्स के रूप में अफगानिस्तान पहुंच सकता है। उन्होंने कहा कि भारत और वेस्टइंडीज के बीच फाइनल से अतीत में हुई गलती की भरपाई हो जाएगी। भारत 2007 में दूसरे दौर में नहीं पहुंच सका था और इसका खामियाजा हमें भुगतना पड़ा। हम नहीं चाहते कि ऐसा फिर हो इसलिए भारत और वेस्टइंडीज के बीच फाइनल होना चाहिए जिसमें बेहतर टीम जीते।

भारत ने युजवेंद्र चहल, कुलदीप यादव, अक्षर पटेल और रविंद्र जडेजा के रूप में चार स्पिनरों को चुना है जिनमें से 2 हरफनमौला हैं। लारा ने कहा कि चार स्पिनरों के होने पर मैं ज्यादा नहीं बोलना चाहूंगा। लेकिन मुझे नहीं लगता कि चारों स्पिनर खेलेंगे। मुझे खुशी है कि चहल टीम में है। वह आईपीएल स्टार ही नहीं है बल्कि काफी दिमाग लगाकर गेंदबाजी करता है। कुलदीप भी। ये आपको विकेट दिलाएंगे और रनगति पर अंकुश भी लगाएंगे। कोहली के स्ट्राइक रेट को लेकर हो रही चर्चा के बीच लारा ने कहा कि आपको अंतिम एकादश में विराट जैसा एक खिलाड़ी चाहिए ही।

टी20 विश्व कप में भारत की सफलता की कुंजी होंगे ये दो खिलाड़ी : शास्त्री

दुबई। भारत के पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री ने कहा कि आगामी टी20 विश्व कप में शिवम दुबे की बड़े छक्के लगाने की क्षमता से भारत को बड़े स्कोर बनाने में मदद मिलेगी और यशस्वी जायसवाल के साथ दुबे पर भारत की उम्मीदों का दारोमदार होगा। जायसवाल और दुबे एक जून से अमेरिका और वेस्टइंडीज में होने वाले टी20 विश्व कप में पदार्पण करेंगे।

शास्त्री ने आईसीसी से कहा, 'दोनों बाएं हाथ के बल्लेबाज हैं और अपना पहला विश्व कप खेल रहे हैं। एक यशस्वी जायसवाल है जिसने इंग्लैंड के खिलाफ शानदार प्रदर्शन किया। वह युवा है और बेखौफ खेलता है।' चेन्नई सुपर किंग्स के लिये खेलने वाले दुबे ने इस सत्र में 11 मैचों में 170.73 की स्ट्राइक रेट से 350 रन बनाए हैं। शास्त्री ने कहा, 'मध्यक्रम में उसे देखिएगा। वह आक्रामक है और मैच विनर है। वह मजे के लिये छक्के लगा देता है और स्पिन गेंदबाजी को बखूबी खेलता है।' उन्होंने कहा, 'तेज गेंदबाजों के खिलाफ भी वह असरदार है। पांचवें छठे नंबर पर उसकी भूमिका अहम होगी। अगर कोई 20.25 ओवर में खेल का नक्शा बदल सकता है, तो वह है। उसका स्ट्राइक रेट 200 के आसपास है जिससे भारत को काफी मदद मिलेगी।'

इंडिगो एयरबस से खरीदेगी ए350-900 श्रेणी के 30 विमान

नई दिल्ली । भारत की प्रमुख एयरलाइन इंडिगो ने यूरोपीय विमान निर्माता एयरबस से एयरबस ए350-900 श्रेणी के 30 विमानों की खरीद के लिए ऑर्डर दिया है। एयरबस ने कहा है कि यह ऑर्डर इंडिगो के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क को लंबी दूरी के गंतव्यों तक फैलाने करने में मदद करेगा। इंडिगो के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने इसे एक ऐतिहासिक क्षण और इंडिगो के इतिहास में एक एक नया अध्याय बताते हुए कहा कि यह एयरलाइन और भारतीय विमानन के भविष्य को भी आकार देगा। इन 30 एयरबस ए350-900 विमानों का बेड़ा इंडिगो को वैश्विक विमानन क्षेत्र की अग्रणीय एयरलाइनों की पंक्ति में खड़ा होने और अपने कारोबार के अगले चरण में प्रवेश करने में मदद करेगा। एयरबस के एक कार्यकारी अे धिकारी ने एयरबस पर एक बार फिर भरोसा जताने इंडिगो और इस करार से जुड़ी अपनी कंपनी की टीमों को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि चौड़े विमानों के लिए इंडिगो के इस पहले आर्डर से दोनों कंपनियों की साझेदारी का एक रोमांचक नया अध्याय शुरू होता है। एयरबस की ओर से जारी की गई विज्ञप्ति में कहा गया है कि ए350 डिजाइन नई है। इसमें अत्याधुनिक टेक्नॉलाजी को शामिल किया गया है। इससे कार्बन डाइऑक्साइड (सीओ2) उत्सर्जन में 25 प्रतिशत कटौती होती है।

गिरावट पर बंद हुए शेयर बाजार

मुम्बई ।

शेयर बाजार मंगलवार को गिरावट पर बंद हुआ। सप्ताह के दूसरे ही कारोबारी दिन दुनिया भर के बाजारों से मिले अच्छे संकेतों के बाद भी मुनाफावसूली हावी होने से बाजार में गिरावट रही। निवेशकों ने विभिन्न सेक्टरों में शेयर बेचे। इस दबाव के कारण ही बेंचमार्क इंडेक्स नीचे आने लगा। आज कारोबार के दौरान बीएसई मिडकैप और स्मॉलकैप सूचकांकों में भी 3 फीसदी तक की गिरावट रही। इसके अलावा व्यापक बाजारों में भी गिरावट आई। ये 1.9 फीसदी और 1.65 फीसदी नीचे आये। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों वाला बीएसई मानक सूचकांक सेंसेक्स 383.69 अंक करीब 0.52 फीसदी टूटकर 73,511.85 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स में आज 73,259.26 और 74,026.80 के बीच कारोबार हुआ। वहीं दूसरी ओर पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 140.20 अंक तकरीबन 0.76 फीसदी नीचे आया। निफ्टी दिन के अंत में 22,302.50 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी में आज 22,232.05 और 22,499.05 के बीच कारोबार हुआ।

आज कारोबार के दौरान ही सेंसेक्स के 30 शेयरों में, पावर ग्रिड, इंडसइंड बैंक, टाटा मोटर्स, जेएसडब्ल्यू स्टील, एचसीएल टेक, एनटीपीसी, टाटा स्टील, आईसीआईसीआई बैंक, महिंद्रा एंड महिंद्रा, एक्सिस बैंक, रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफसी बैंक और अल्ट्राटेक सीमेंट के शेयर नीचे आये। इसमें इनमें 1 से 4 फीसदी तक की गिरावट दर्ज की गयी। वहीं दूसरी ओर, एचयूएल, टेक एम, नेस्ले इंडिया, टीसीएस, आईटीसी, कोटक बैंक और इंफोसिस प्रमुख रूप से लाभ में रहे। इन शेयरों की तेजी से शेयर बाजार को कुछ बल मिला।

वहीं गत दिवस बेंचमार्क सेंसेक्स एक सीमित दायरे में

कारोबार करने के बाद लगभग सपाट बंद हुआ। हाई वेल्युएशन से संबंधी चिंताओं के बीच निवेशकों ने इंडेक्स हैवीवेट में मुनाफावसूली की जिसके चलते बाजार सोमवार को लगभग सपाट रहा। वहीं आज सुबह वैश्विक बाजारों से मिले खराब संकेतों की वजह से हरे निशान पर कारोबार की शुरुआत के बाद शेयर बाजार में गिरावट देखने को मिली। एचसीएलटेक, आईसीआईसीआई बैंक, एचडीएफसी बैंक और रिलायंस इंडस्ट्रीज के दबाव में भारतीय शेयरों ने शुरुआती बढ़त गंवा दी। सेंसेक्स 400 अंकों की गिरावट के साथ 73,495 के स्तर पर कारोबार करता दिख रहा है। जबकि निफ्टी50 100 से अधिक अंकों की गिरावट के साथ 22,329 के स्तर पर आ गिरा। शुरुआत में सेंसेक्स 0.08 फीसदी बढ़कर 73,954.96 पर खुला था, जबकि निफ्टी 50 0.13 फीसदी बढ़कर 22,471.95 के स्तर पर कारोबार करता दिखा।

देश के कई राज्यों में महंगा हुआ पेट्रोल और डीजल

नई दिल्ली ।

वैश्विक बाजार में कच्चा तेल हल्की गिरावट के साथ कारोबार कर रहा है। इस बीच देश में ऑयल मार्केटिंग कंपनियों ने मंगलवार को ईंधन की नई कीमतें जारी कर दी हैं। गुजरात, गोवा, झारखंड, केरल, एमपी और मणिपुर समेत कुछ राज्यों में पेट्रोल-डीजल के दाम बढ़े हैं। वहीं महाराष्ट्र, कर्नाटक, छत्तीसगढ़, बिहार और जम्मू-कश्मीर में ईंधन की कीमतें घटी हैं। नई दिल्ली में एक लीटर पेट्रोल की कीमत 94.72 रुपये और डीजल की कीमत 87.62 रुपये प्रति लीटर बनी हुई है। मुंबई में पेट्रोल की कीमत 104.21 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 92.15 रुपये प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल की कीमत 103.94 रुपये प्रति लीटर और डीजल 90.76 रुपये प्रति लीटर, चेन्नई में पेट्रोल की कीमत 100.85 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 92.43 रुपये प्रति लीटर बनी हुई है। वहीं नोएडा में पेट्रोल 94.81 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.94 रुपये प्रति लीटर, गुरुग्राम में पेट्रोल 95.18 रुपये प्रति लीटर और डीजल 88.03 रुपये प्रति लीटर, चंडीगढ़ में पेट्रोल 94.22 रुपये प्रति लीटर और डीजल 82.38 रुपये प्रति लीटर, हैदराबाद में पेट्रोल 107.39 रुपये प्रति लीटर और डीजल 95.63 रुपये प्रति लीटर, जयपुर में पेट्रोल 104.86 रुपये प्रति लीटर और डीजल 90.34 रुपये प्रति लीटर, पटना में पेट्रोल 105.16 रुपये प्रति लीटर और डीजल 92.03 रुपये प्रति लीटर, लखनऊ में पेट्रोल 94.63 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.74 रुपये प्रति लीटर है।

सेबी ने ट्रेडिंग का समय बढ़ाने का प्रस्ताव किया खारिज

- एनएसई ने दिया था डेरिवेटिव मार्केट में समय बढ़ाने का प्रस्ताव

मुंबई ।

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) ने भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) को डेरिवेटिव सेगमेंट में कारोबार का समय बढ़ाने का प्रस्ताव दिया था मगर बाजार नियामक ने प्रस्ताव पर ब्रोकरों के एकमत नहीं होने की वजह से उसे खारिज कर दिया। एनएसई ने बाजार नियामक से डेरिवेटिव मार्केट को अतिरिक्त तीन घंटे शाम 6 बजे से रात 9 बजे तक खोलने का अनुरोध किया था। एनएसई का तर्क था कि इससे बाजार भागीदारों को देर शाम वैश्विक संकेतों का आकलन करने और उसके हिसाब से खरीद-बिक्री करने में मदद मिलेगी। लेकिन शेयर ब्रोकरों में इस पर सहमति नहीं थी। ब्रोकरों का कहना था कि इससे उनकी लागत बढ़ जाएगी और अतिरिक्त तकनीक की भी जरूरत होगी। एनएसई के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने इस प्रस्ताव को फिलहाल ठंडे बस्ते में डालने की पुष्टि की। एनएसई के नतीजों पर विश्लेषकों के साथ चर्चा के दौरान उन्होंने कहा कि फिलहाल कारोबार का समय बढ़ाने की कोई योजना नहीं है क्योंकि ब्रोकरों की ओर से इस बारे में अपेक्षित प्रतिक्रिया नहीं मिलने की वजह से सेबी ने हमारा आवेदन खारिज कर दिया। इसलिए मार्केट का समय बढ़ाने की योजना फिलहाल स्थगित कर दी गई है।' इस साल की शुरुआत में शेयर ब्रोकरों के निकाय एसोसिएशन ऑफ नैशनल एक्सचेंजेज मेंबर्स ऑफ इंडिया ने इस प्रस्ताव को मंजूरी दी थी। हालांकि बंबई स्टॉक एक्सचेंज ब्रोकर्स फोरम अलग सेगमेंट के पक्ष में नहीं था। बाजार नियामक ने बाजार में कारोबार का समय बढ़ाने के साथ ही अन्य मुद्दों पर ब्रोकरों के बीच आम राय बनाने के लिए ब्रोकर्स इंडस्ट्री स्टैंडर्ड फोरम का गठन किया था जिसमें ब्रोकरों के तीन संगठन बतौर सदस्य शामिल थे। सूत्रों के अनुसार आईएसएफ ने पिछले महीने प्रस्ताव पर अपनी टिप्पणियां सौंपी थीं।

उसने न तो बाजार का समय बढ़ाने की जरूरत की पुष्टि की और न ही इससे जुड़ी चुनौतियों से इनकार किया। बाजार नियामक ने एक्सचेंज के परिचालन, सौदों का निपटान, पोजीशन की निगरानी और जोखिम प्रबंधन के मसले पर सवाल उठाए थे।

रुपया चार पैसे बढ़कर 83.48 डॉलर पर

मुंबई । घरेलू शेयर बाजारों में सकारात्मक रुख के बीच रुपये ने मंगलवार को शुरुआती कारोबार में अमेरिकी मुद्रा के मुकाबले सीमित दायरे में कारोबार किया और चार पैसे मजबूत होकर 83.48 रुपये प्रति डॉलर पर पहुंच गया। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि विदेशी बाजार में अमेरिकी मुद्रा की मजबूती, कच्चे तेल की ऊंची कीमतों और विदेशी पूंजी की निकासी से स्थानीय मुद्रा पर दबाव पड़ा और इसकी तेजी पर रोक लगी। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 83.48 प्रति डॉलर पर खुला जो पिछले बंद भाव से चार पैसे की बढ़त दर्शाता है। रुपया सोमवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 83.52 पर बंद हुआ था। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की मजबूती को परखने वाला डॉलर सूचकांक 0.13 प्रतिशत की बढ़त के साथ 105.18 पर रहा।

निर्यात से रोक हटने के बाद प्याज के थोक भाव में आई तेजी

मुंबई। पिछले सप्ताह केंद्र सरकार ने प्याज के निर्यात पर लगी रोक हटा दी थी। इसके बाद प्याज के थोक भाव में तेजी दर्ज की गई है। जानकारों का कहना है कि प्याज के निर्यात की अनुमति कुछ शर्तों के साथ दी गई है। ऐसे में तात्कालिक रूप से भले ही प्याज के भाव बढ़े हैं लेकिन आगे बहुत अधिक कीमत बढ़ने की संभावना नजर नहीं आ रही है। इसका कारण यह है कि निर्यात एक तय भाव से कम पर नहीं किया जा सकेगा। केंद्र सरकार ने पिछले सप्ताह 3 मई को प्याज के निर्यात से प्रतिबंध हटाने की घोषणा की थी। इस दिन महाराष्ट्र की प्याज मंडी लासलगांव (विंचुर) में प्याज के थोक भाव 900 से 1,875 रुपए थे, जो बढ़कर 1,000 से 2,400 रुपए क्विंटल हो गए। इसी तरह मुंबई की वाशी मंडी में इस दौरान प्याज के थोक भाव 875-2,000 रुपए की तुलना में बढ़कर 1,250-2,750 रुपए क्विंटल हो गए। दिल्ली की आजादपुर मंडी में इस अवधि में प्याज के थोक भाव 875-2,000 रुपए से बढ़कर 2,750 रुपए क्विंटल दर्ज किए गए। महाराष्ट्र के एक प्याज कारोबारी ने बताया कि निर्यात पर रोक हटने के फैसले के बाद प्याज के भाव बढ़े हैं लेकिन प्याज की कीमतों में आई यह तेजी आगे लंबे समय तक जारी रहने की संभावना नहीं है क्योंकि निर्यात के लिए 550 डॉलर प्रति टन की सीमा लगा दी गई है यानी इससे कम भाव पर निर्यात नहीं किया जा सकेगा। इस भाव पर यूरोप व खाड़ी देशों को निर्यात संभव है लेकिन बांग्लादेश व कोलंबो जैसे देशों को निर्यात संभव नहीं है क्योंकि इन देशों को भारतीय प्याज के ज्यादा दाम चुकाने पड़ेंगे।

लेनदेन का ब्योरा हटाकर ई-रुपए को बनाया जा सकता है गोपनीय शक्तिकांत दास

- कानून या टेक्नोलाजी से दूर की जा सकती है ई-रुपए की गोपनीयता से जुड़ी चिंता

मुंबई ।

भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा कि लेनदेन के ब्योरे को स्थायी रूप से हटाकर ई-रुपये या सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (सीबीडीसी) को गोपनीय बनाया जा सकता है। इससे यह कागजी मुद्रा के समान हो जाएगी। हाल ही में आयो जित बीआईएस इनोवेशन सम्मेलन में दास ने कहा कि सीबीडीएस के ऑफलाइन हस्तांतरण को लेकर भी काम किया जा रहा है। 2022 के अंत में सीबीडीसी की लॉन्चिंग के साथ इसकी गोपनीयता को लेकर चिंता बनी हुई है। कुछ लोगों का कहना है कि सीबीडीसी से लेनदेन का रिकार्ड तैयार हो जाता है, जबकि कागजी मुद्रा के लेनदेन में गोपनीयता बनी रहती है।` रिजर्व बैंक गवर्नर ने कहा कि कानून या टेक्नोलाजी से ई-रुपये की गोपनीयता से जुड़ी चिंता दूर की जा सकती है। उन्होंने कहा कि अभी भी खुदरा लेनदेन में यूपीआई को प्राथमिकता दी जा रही है लेकिन आने वाले समय में यह स्थिति बदल सकती है। बीआईएस इनोवेशन समिट में बोलते हुए दास ने कहा कि भारत अपने वित्तीय समावेशन लक्ष्यों में मदद के लिए प्रोग्रामेबिलिटी फीचर पेश करने के साथ-साथ सीबीडीसी को ऑफलाइन मोड में हस्तांतरणीय बनाने पर भी काम कर रहा है। यह ध्यान दिया जा सकता है कि 2022 के अंत में सीबीडीसी की शुरुआत के बाद से गोपनीयता पहलू के बारे में चिंताएं रही हैं, कुछ लोगों का कहना है कि इलेक्ट्रॉनिक प्रकृति एक निशान छोड़ देगी जहां सभी मुद्रा का उपयोग किया गया है, नकदी के विपरीत जो गुमनामी प्रदान करती है। उन्होंने कहा कि मूल सिद्धांत यह है कि सीबीडीसी में नकदी के समान ही गुमनामी की डिग्री हो सकती है, न अधिक और न कम। अतीत में दास और उनके डिप्टी टी रबी शंकर सहित आरबीआई अधिकारियों ने कहा है कि प्रौद्योगिकी गोपनीयता पर ऐसी चिंताओं का समाधान प्रदान करती है। इस बीच दास ने दोहराया कि भारत सीबीडीसी को ऑफलाइन मोड में भी हस्तांतरणीय बनाने पर काम कर रहा है, उन्होंने बताया कि नकदी की प्रमुख विशेषताओं में से एक यह है कि इसे काम करने के लिए नेटवर्क कनेक्टिविटी की आवश्यकता नहीं है।

जियो, एयरटेल, वोडाफोन 96,317 करोड़ की स्पेक्ट्रम नीलामी में भाग लेंगी

नई दिल्ली ।

रिलायंस जियो, भारती एयरटेल और वोडाफोन आइडिया जैसी दूरसंचार कंपनियों ने छह जून से शुरू होने वाली 96,317 करोड़ रुपये की स्पेक्ट्रम नीलामी में बोली लगाने के लिए आवेदन जमा कर दिया है। इससे पहले 2022 में हुई पिछली नीलामी में अडाणी समूह की कंपनी का नाम आश्चर्यजनक रूप से बोली लगाने वालों में आया था। हालांकि, इस बार की नीलामी में कोई नया नाम नहीं है। एक आधिकारिक सूत्र ने बताया कि रिलायंस जियो, भारती एयरटेल और वोडाफोन आइडिया ने स्पेक्ट्रम नीलामी के लिए आवेदन जमा किए हैं। सरकार मोबाइल फोन सेवाओं के लिए लगभग 96,317 करोड़ रुपये के आधार मूल्य पर आठ स्पेक्ट्रम बैंड की नीलामी करेगी। 800 मेगाहर्ट्ज, 900 मेगाहर्ट्ज, 1,800 मेगाहर्ट्ज, 2,100 मेगाहर्ट्ज, 2,300 मेगाहर्ट्ज, 2,500 मेगाहर्ट्ज, 3,300 मेगाहर्ट्ज और 26 गीगाहर्ट्ज बैंड में सभी उपलब्ध स्पेक्ट्रम नीलामी का हिस्सा हैं। आधार मूल्य पर

कुल स्पेक्ट्रम का मूल्य 96,317 करोड़ रुपये है।

स्पेक्ट्रम 20 साल के लिए आवंटित किया जाएगा और सफल बोलीदाताओं को 20 समान वार्षिक किस्तों में भुगतान करने की अनुमति दी जाएगी। दूरसंचार विभाग ने आगामी नीलामी के माध्यम से प्राप्त स्पेक्ट्रम को न्यूनतम 10 साल की अवधि के बाद 'सरेंडर' करने का विकल्प प्रदान किया है। विभाग 10 मई को आवेदकों का स्वामित्व विवरण प्रकाशित करेगा।

आवेदन वापस लेने की अंतिम तिथि 17 मई है और बोलीदाताओं की अंतिम सूची 20 मई को घोषित की जाएगी।

इंडिया रेटिंग्स ने बढ़ाया भारत का वृद्धि दर अनुमान

मुंबई ।

इंडिया रेटिंग्स एंड रिसर्च ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए देश की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर के अनुमान को 6.5 प्रतिशत से बढ़ाकर 7.1 प्रतिशत कर दिया। यह अनुमान रिजर्व बैंक के सात प्रतिशत के अनुमान से थोड़ा अधिक है। घरेलू रेटिंग एजेंसी ने बयान में कहा कि सरकारी पूंजीगत व्यय बने रहने, कॉरपोरेट और बैंकिंग क्षेत्र के बही-खाते में कर्ज की कमी और आरंभिक निजी कॉरपोरेट पूंजीगत व्यय से मिले मजबूत समर्थन ने उसे वृद्धि अनुमान में संशोधन करने के लिए मजबूर किया है। इसके साथ ही रेटिंग एजेंसी ने कहा कि उपभोग मांग का व्यापक आधार नहीं होना और वैश्विक स्तर पर सुस्त वृद्धि के कारण निर्यात में आने वाली बाधाएं भारत की जीडीपी वृद्धि को सीमित कर सकती है। एजेंसी ने उम्मीद जताई कि निजी अंतिम उपभोग व्यय में वृद्धि वित्त वर्ष 2024-25 में बढ़कर सात प्रतिशत हो जाएगी, जो वित्त वर्ष 2023-24 में तीन प्रतिशत थी। यह तीन साल का उच्चतम स्तर होगा।इस रिपोर्ट में मौजूदा उपभोग मांग को अत्यधिक विषम बताते हुए कहा गया है कि यह उच्च आय वर्ग से संबंधित परिवारों द्वारा बड़े पैमाने पर उपभोग की जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं से प्रेरित है जबकि ग्रामीण खपत कमजोर बनी हुई है।इंडिया रेटिंग्स ने कहा कि सामान्य से बेहतर

मानसून रहने से गेहूं की सरकारी खरीद के चालू वित्त वर्ष में 3.7 करोड़ टन रहने पर खपत बढ़ सकती है। पिछले वित्त वर्ष में गेहूं की खरीद 2.6 करोड़ टन रही थी।

मैक्रोटेक चालू वित्त वर्ष में 17 आवासीय परियोजनाएं पेश करेगी

नई दिल्ली । चालू वित्त वर्ष 2024-25 में मैक्रोटेक डेवलपर्स 17 आवासीय परियोजनाएं शुरू` करने पर` विचार कर रही है, जिनकी राजस्व क्षमता 12,000 करोड़ रुपये होगी। इससे कंपनी की बिक्री बुकिंग में बढ़ोतरी होगी, जो 2023-24 में मजबूत मांग के दम पर रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई थी। निवेशकों के अनुसार लोढ़ा ब्रांड के तहत अपनी संपत्तियों का विपणन करने वाली मैक्रोटेक डेवलपर्स 2024-25 में मुंबई महानगर क्षेत्र (एमएमआर), पुणे तथा बेंगलुरु में 10 नई परियोजनाएं और मौजूदा आवासीय परियोजनाओं में सात नए चरण शुरू करेगा। पेश किए जाने वाले कुल क्षेत्रफल का अनुमान 1.01 करोड़ वर्ग फुट है, जिसका अनुमानित सकल विकास मूल्य (जीडीवी) 12,100 करोड़ रुपये है। हालांकि, कंपनी ने कहा कि इस वित्त वर्ष में पेश होने वाली परियोजनाओं के लिए मार्गदर्शन बढ़ सकता है, क्योंकि वह अधिक भूमि अधिग्रहण कर सकती है और इसी वित्त वर्ष में पेश करने में सक्षम हो सकती है। भारत के अग्रणी रियल एस्टेट डेवलपर्स में से एक मैक्रोटेक डेवलपर्स ने चालू वित्त वर्ष में 17,500 करोड़ रुपये मूल्य की संपत्ति बेचने का लक्ष्य रखा है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 21 प्रतिशत अधिक है। इसने अपनी बिक्री बुकिंग में 20 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की, जो पिछले वित्त वर्ष में रिकॉर्ड 14,520 करोड़ रुपये हो गई जो 2022-23 में 12,060 करोड़ रुपये थी।

म्यूजिक से ब्रेक लेकर पापा मंगलम बिड़ला का कारोबार संभालेंगी अनन्या

- अनन्या ने सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर कहा- जीवन का सबसे मुश्किल फैसला

मुंबई ।

आदित्य बिड़ला ग्रुप के चेयरमैन कुमार मंगलम बिड़ला की सबसे बड़ी बेटी अनन्या बिड़ला ने म्यूजिक से ब्रेक लेकर पापा के कारोबार को संभालने का फैसला किया है। इस बात की जानकारी उन्होंने सोशल मीडिया के जरिए शेयर की और एक इमोशनल पोस्ट भी लिखा। उनका ये पोस्ट पढ़ फैंस काफी दुखी हैं। अनन्या ने बॉलीवुड में भी काम किया था तो बॉलीवुड से भी उनके इस डिसीजन को लेकर रिएक्शन आ रहे हैं। अनन्या ने इंस्टाग्राम पर पोस्ट शेयर करते हुए लिखा- दोस्तों, ये मेरे लिए सबसे मुश्किल डिसीजन था। अब मैं उस स्टेज पर पहुंच चुकी हूं जहां पर मेरे लिए बिजनेस करना, उसे आगे बढ़ाना और उसके साथ सिंगिंग करना मुश्किल हो गया है। मेरे लिए बैलेंस बनाना लगभग नामुमकिन हो गया है। अब तक मैंने जितने भी गाने रिलीज किए हैं उन्हें इतना प्यार देने के लिए आप सभी का शुक्रिया। मुझे उम्मीद है कि आने वाले समय में हम अपने ही लोगों द्वारा बनाए गए अंग्रेजी गानों की तारीफ करेंगे. क्योंकि हमारे देश में टैलेंट की कोई कमी नहीं है। इंस्टा पर ये पोस्ट शेयर करते हुए अनन्या बिड़ला ने लिखा- कभी न भुला पाने वाली यादें, इतने सारे प्यार के लिए

आप सभी का शुक्रिया। सिंगर द्वारा ये पोस्ट लिखते ही उनके सपोर्ट में बॉलीवुड समेत कई सारे फैंस उतर आए और इमोशनल भी हो गए। कई लोग तो उनके इस डिसीजन से शॉक्ड भी नजर आए।

जयप्रकाश एसोसिएट्स ने नहीं चुकाया 4,616 करोड़ का कर्ज

नई दिल्ली ।

संकटग्रस्त जेपी समूह की प्रमुख कंपनी जयप्रकाश एसोसिएट्स लिमिटेड (जेएएल) ने मूलधन व ब्याज राशि सहित 4,616 करोड़ रुपये के कर्ज का भुगतान नहीं किया है। जेएएल ने सोमवार देर रात शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि कंपनी ने 30 अप्रैल को 1,751 करोड़ रुपये की मूल राशि और 2,865 करोड़ रुपये के ब्याज के भुगतान में चूक की है। जेएएल ने कहा` कि कंपनी का कुल उधार 29,805 करोड़ रुपये है, जिसे 2037 तक चुकाया जाना है। इसमें से 30 अप्रैल 2024 तक 4,616 करोड़ रुपये बकाया था। ये कर्ज विभिन्न बैंकों से लिया गया है। कंपनी ने कहा कि 29,805 करोड़ रुपये की कुल उधारी में से 18,955 करोड़ रुपये प्रस्तावित विशेष प्रयोजन वाहन (एसपीवी) को हस्तांतरित किए जाएंगे। इसके लिए सभी विधिवत अनुमोदित एक व्यवस्था योजना को हितधारकों की मंजूरी मिल गई है, हालांकि यह राष्ट्रीय कंपनी विधि अधिकरण (एनसीएलटी) की मंजूरी के लिए लंबित है। कंपनी ने कहा कि किसी भी स्थिति में सम्पूर्ण ऋण पुनर्गठन के अधीन है। जेएएल ने कहा` कि एक जिम्मेदार उधारकर्ता के तौर पर कंपनी उधारी को कम करने के लिए ठोस कदम उठा रही है। सीमेंट व्यवसाय के प्रस्तावित विनिवेश और विचाराधीन पुनर्गठन के बाद, संशोधित पुनर्गठन योजना के कार्यान्वयन पर उधारी लगभग शून्य हो जाएगी।

गोदरेज कंज्यूमर को 1,893.21 करोड़ का नुकसान

नई दिल्ली । दैनिक उपभोग के उत्पाद बनाने वाली कंपनी गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड (जीसीपीएल) को मार्च तिमाही में 1,893.21 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। जीसीपीएल ने शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि ब्रांड और साख की हानि के अलावा अफ्रीका में बिक्री घटने से भी उसे नुकसान उठाना पड़ा। एक साल पहले की समान तिमाही में उसे 452.14 करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ था। जनवरी-मार्च, 2024 में कंपनी कुल परिचालन आय 3,385.61 करोड़ रुपये रही, जो एक साल पहले की अवधि में 3,200.16 करोड़ रुपये थी। कंपनी ने कहा कि चौथी तिमाही में कुल खर्च एक साल पहले की समान अवधि के 2,680.39 करोड़ रुपये की तुलना में 2,758.27 करोड़ रुपये था। आलोच्य अवधि में कंपनी ने 2,375.65 करोड़ रुपये की असाधारण लागत खर्च की। पूरे वित्त वर्ष 2023-24 में जीसीपीएल का एकीकृत घाटा 560.55 करोड़ रुपये था जबकि इससे पिछले वित्त वर्ष में कंपनी ने 1,702.46 करोड़ रुपये का लाभ कमाया था।कंपनी का पिछले वित्त वर्ष में परिचालन राजस्व 14,096.11 करोड़ रुपये रहा जो वित्त वर्ष 2022-23 में 13,315.97 करोड़ रुपये था।

सीसीएल में नवनियुक्त प्रबंधन प्रसिछुमन ले होलक इंडक्सन प्रोग्राम

रांची। सीसीएल में प्रतिभा के निखारेक आउर उत्कृस्टता के बढ़ावा देवेक कर संगे नवनियुक्त अधिकारीमन के कम्पनी कर बिबिध काम से परिचित कराएक ले मैनेजमेंट ट्रेनी इंडक्सन प्रोग्राम कर आयोजन करल गेलक। ई कार्जक्रम कर आयोजन मानव संसाधन बिकास बिभाग आउर अधिकारी स्थापना बिभाग करलक। उद्घाटन सत्र में निदेसकमन प्रसिछुमन के कई सलाह देलयं। कार्यानुभवमन के साझा करलयं।

ई अवसर में सीसीएल कर निदेसक (बित्त) पवन कुमार मिश्रा, निदेसक (कार्मिक) हर्ष नाथ मिश्र, निदेसक (तकनीकी/योजना एवं परियोजना) सतीश झा, निदेसक (तकनीकी/संचालन) हरीश दुहान, मुख्य सतर्कता अधिकारी पंकज कुमार, जीएम (एचआरडी) आरके पांडेय, जीएम (अधिकारी स्थापना) एसके ठाकुर, जीएम (ऑपरेशन) मेराज अहमद आउर एचओडी (श्रमशक्ति) श्रीमती कविता गुप्ता आउर अन्य अधिकारी उपस्थित रहयं।

आज 12 प्रबंधन प्रसिछुमन कंपनी में आपन पेसेवर जीवन कर यात्रा सुरू करलयं। इकर में एक गो महिला खनन इंजीनियर भी सामिल हयं, जे कंपनी कर कार्यबल में बिबिधता आउर समावेसिता के परदरसित करेला। जीएम (एचआरडी) आरके पांडेय कार्जक्रम कर आरम्भ में सउब कर स्वागत करलयं।

सत्र कर दौरान, निदेसकमन आउर मुख्य सतर्कता अधिकारी देवल गेल भूमिका के पूरा करेक में समर्पन आउर ईमानदार प्रयास कर महत के रेखांकित करलयं। प्रसिछुमन से आपन अनुभव के समृद्ध करेक ले वरीय अधिकारीमन कर संगे सक्रिय रूप से जुड़ेक कर सलाह देलयं।

आईआईटी-आईएसएम कर सहभागिता में राज्य खनन सूचकांक उपरे होवी कार्जसाला

नई दिल्ली। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान- भारतीय खान विद्यापीठ (आईआईटी-आईएसएम), धनबाद कर सहभागिता में खान मंत्रालय कइल यानी 8 मइ, 2024 के दिल्ली में एक दिनक कार्जसाला कर आयोजन करी। इकर उद्देस राइज कर खनन छेतर कर परदरसन के दर्ज करेक ले परिकल्पित राज्य खनन सूचकांक कर प्रारूप ढांचा उपरे चर्चा करेक रहे। ई कार्जसाला कर अध्यछता खान मंत्रालय कर सचिव श्री वी.एल. कांथा राव करबयं। इकर में राइज कर बरिस्ठ अधिकारी हिस्सा लेंबयं।

खनन छेतर कई मूल्य श्रृंखलामन में सउबसे आगे हेके, जे इस्पात, अलौह धातु, सीमेंट, उर्वरक, रसायन आउर इलेक्ट्रॉनिक्स जइसे प्रमुख औद्योगिक छेतर के कच्चा माल कर आपूर्ति करेला। देस कर खनन छेतर कर बिकास में राइज कर महतपूर्न भूमिका हेके। खनन छेतर ले बिभिन्न दृष्टिकोन निर्धारित करल जाए हे। इनकर में समानता, टिकाऊपन आउर जिम्मेदारी कर संगे संसाधन उपयोग दछता के प्राथमिकता देवेक, भारत कर भूमि में खोज उपरे धेयान केंद्रित करेक कर जरूरत, भविस में खनिज उत्पादन के सुबिधाजनक बनाएक ले कार्रवाई करेक आउर खनन से संबंधित काम से प्रभावित बेक्तिमन आउर छेतर कर हित आउर लाभ ले काम करेक सामिल हय।

अइसन रास्ट्रीय प्रयास में केऊ राइज कर सापेछ जोगदान महतपूर्न करलयं। इकर में एक गो महिला खनन इंजीनियर भी सामिल हयं, जे कंपनी कर कार्यबल में बिबिधता आउर समावेसिता के परदरसित करेला। जीएम (एचआरडी) आरके पांडेय कार्जक्रम कर आरम्भ में सउब कर स्वागत करलयं।

सत्र कर दौरान, निदेसकमन आउर मुख्य सतर्कता अधिकारी देवल गेल भूमिका के पूरा करेक में समर्पन आउर ईमानदार प्रयास कर महत के रेखांकित करलयं। प्रसिछुमन से आपन अनुभव के समृद्ध करेक ले वरीय अधिकारीमन कर संगे सक्रिय रूप से जुड़ेक कर सलाह देलयं।

हेके आउर इके प्रतिबिंबित करेक कर जरूरत हेके। ई लखे खनन छेतर कर परदरसन कर संगे-संगे खनन गतिबिधि में राइज कर दन से भविस कर तैयारी के दर्ज करेक ले एक राज्य खनन सूचकांक कर परिकल्पना करल जाए हे। ई सूचकांक कर दायरे में गैर-ईंधन प्रमुख खनिज आउर लघु खनिज होवी। खान मंत्रालय ई ढांचय के डिजाइन करेक, डेटा एकत्र करेक आउर सूचकांक तैयार करेक के लेइ के एक ठो अध्ययन करेक कर जिम्मेदारी धनबाद इस्थित आईआईटी-आईएसएम के देइ हे।

ई प्रक्रिया के पारदरसी आउर बस्तुनिस्ठ बनाएक ले सूचकांक बिकास कर हर चरन में राइज कर संगे परामर्स करल जात हे। दिल्ली में आयोजित ई कार्जसाला एहे प्रयास कर एक गो हिस्सा हय। ई कार्जसाला में राइज से प्राप्त प्रतिक्रियामन कर आधार में रूपरेखा के अंतिम रूप देवेक में सहायता मिली।

आवश्यक सेवा में लागल अब्सेंटी भोटर्स ले मतदान सुरू

- समाहरणालय परिसर कर दूसर तल्ला में मतदान करेक ले 9 मई तक देवल जाए हे सुबिधा

पलामू। जरुरी सेवा में लागल अब्सेंटी भोटर्स ले मंगलवार से मतदान कर प्रक्रिया सुरु होए गेलक। अब्सेंटी भोटर्स कर मतदान हेतु समाहरनालय कर दूसर तल्ला में सुबिधा केंद्र कर अधिस्ठापन कराल जाए हे, जे 9 मई के सांझ 5 बजे तक क्रियासील रही। ई दौरान जे मन जरुरी सेवा में लागल हयं आउर जे फॉर्म 12 डी भइर के आपन नोडल पदाधिकारी कर समछ आवेदन समर्पित कइर रहयं, ऊ मन सुबिधा केंद्र (समाहरणालय) में भोटर आईकार्ड इया भारत निर्वाचन आयोग द्वारा वैकल्पिक दस्तावेज कर रूप में चिह्नित करल गेल 12 दस्तावेज में से केऊ एक दस्तावेज के आपन संगे अनिवार्य रूप से लाइन के मतदान कइर सकयंना।एहे पांइत में आइज कुल 55 गो भोटर्स आपन मताधिकार कर प्रयोग करलयं। आपने के मालूम होवी कि जरुरी सेवा में लगल 293 गो मतदातामन से 9 मई कर सांझ 5 बजे तक मतदातान कराएक कर लछ रखा जाय हे। इकर अतिरिक्त 7 से 9 मई कर बीच पुलिस लाइन मेदिनीनगर कर अलावा 7 मई के छत्तरपुर, 8 मई के हुसैनाबाद आउर 9 के विश्रामपुर कर पुलिस लाइन में भी चुनाव काम में लागल पदाधिकारीमन/ कर्मचारीमन से मतदान कराल जात हे।

मतदान कर दिन अदमीमन के भोट देवेक ले प्रेरित करी माहेश्वरी सभा

रांची। श्री माहेश्वरी सभा, माहेश्वरी महिला समिति आउर माहेश्वरी युवा संगठन कर संयुक्त बैठकी होलक। इकर में चुनाव कर महापर्व में मतदातामन के मतदान करेक ले जागरूक करेक, मत कर अधिकार कर महत कर जानकारी देवेक उपरे बिस्तृत चर्चा होलक। सभा कर तीनों साखा सर्वसम्मति से निर्नय लेलक कि हर सदस्य आपन अस्तर में मतदातामन से संपर्क कइर के उनके मतदान कर दिन भोट देवेक ले प्रेरित करबयं। आपन-आपन पहुंच कर छेतर में मतदान कर दिन ई सुनिश्चित करेक कर चेष्टा करी कि सउब अदमी भोट देवेक ले जरुर जावयं। बैठकी में तीनों साखा कर अध्यछ, सचिव कर अलावा पवन मंत्री, अशोक साबू, दीपक मारु, रमन बोड़ा, संगीता चितलांगिया, अनीता साबू,रश्मि मालपानी, सीमा मालपानी, पंकज साबू, सौरभ साबू बिसेस रूप से उपस्थित रहयं।

डीसी इंटरमीडिएट स्ट्रांग रूम आउर बिद्यालयमन कर करलयं निरीछन

- सभी स्थान में एएमएफ कर सुविधामन के हर हाल में बहाल राखेक कर निरदेस

पलामू। जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त शशि रंजन मंगलवार के सीएपीएफ के ठहारायेक ले चयनित राजमाता प्रफुल मंजरी उच्च बिद्यालय आउर केंद्रीय बिद्यालय चैनपुर कर निरीछन करलयं। ई दौरान ऊ केंद्रीय बिद्यालय कर आसपास फैलल झाड़ीमन के सफा करेक कर आदेस देलयं। राजमाता प्रफुल मंजरी उच्च बिद्यालय में भी सउच सुबिधामन के दुरुस्त करेक के लेइ के चैनपुर परखंड बिकास पदाधिकारी के निर्देसित करलयं।

इकर बाद ऊ इंटरमीडिएट स्ट्रांग रूम ले चिन्हित सदगुरु प्रताप हरि+2 उच्च बिद्यालय कर भी जायजा लेलयं। ऊ चैनपुर बीडीओ से रिजर्व ईवीएम मसीन के सुरछित राखेक ले बनाल गेल इंटरमीडिएट स्ट्रांग रूम से मतदान केंद्रों कर दूरी आउर सुरछा बेवस्था कर जानकारी लेलयं।

निरीछ कर क्रम में जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त चैनपुर कर बीडीओ के सदगुरु प्रताप हरि+2 उच्च बिद्यालय आउर मतदान केंद्र संख्या 118 व 119 के मॉडल बूथ बनाएक कर निरदेस देलयं। इकर संगे सउब बूथ में एएमएफ कर तहत सउब सुबिधामन के अनिवार्य रूप से बहाल करेक कर निरदेस देलयं।

ई दौरान बिसेस कइर के पियेक वाला पानी कर सुबिधा आउर धूप से बचेक ले टेंट लगाएक उपरे बल देलयं। निरीछन कर दौरान उप बिकास आयुक्त आउर चैनपुर सीओ उपस्थित रहयं।

जिनगी ले एक-एक बूंद खून जरूरी : बीडीओ

- मतदान कर प्रतिसत बढ़ाएक ले स्वीप कोषांग करलक रक्तदान सिबिर

गुमला। चैनपुर परखंड अंतर्गत लोकसभा आम चुनाव 2024 में मतदान कर प्रतिसत बढ़ाएक ले स्वीप कोषांग कर अंतर्गत रक्तदान सिबिर कर आयोजन करल गेलक। सिबिर में परखंड बिकास पदाधिकारी यादव बैठा, प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ धर्मनाथ ठाकुर युवामन के 1 जून के होवेक वाला मतदान में बइढ़-चइढ़ के भाग लेवेक कर संदेस देलयं।सिबिर कर उद्घाटन करते ऊ कहलयं कि जे लखे जिनगी ले एक-एक बूंद खून जरूरी हेके, वइसने ओहे लखे स्वस्थ लोकतंत्र में एक-एक भोट कर महत हय। ऊ मन अदमीमन से मतदान कर दिन बेसी से बेसी संख्या मतदान कर लोकतंत्र के मजबूत करेक आउर मतदान प्रतिसत बढ़ाएक कर अपील करलयं।

बीडीओ बतालयं कि मतदान प्रतिसत बढ़ाएक आउर भोटरमन के जागरूक करेक ले बूथ अस्तर में भी स्वीप कार्जक्रम कर तहत तरह-तरह कर आयोजन करल जात हे। रक्तदान सिबिर इकरे हिस्सा हेक। रक्तदान सिबिर में 25 गो अदमीमन रक्तदान करेक ले जांच करुवालयं। इकर में से कुछ कर में हीमोग्लोबिन कर कमी आउर अन्य कारन से सारीरिक रूप से सक्षम नी पाल गेलयं।सिबिर में 14 गो अदमीमन रक्तदान करलयं। इकर में अइसन भी अदमीमन पहुंचलयं, जे पहिल धांव रक्तदान करलयं। कुछ साल से रक्तदान करते आवत हयं। रक्तदान करेक वाला सउब अदमीमन कर बीच परखंड बिकास पदाधिकारी चैनपुर आउर प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी (सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, चैनपुर) कर संयुक्त हस्ताछर से रक्तदान प्रमान पत्र दुई दिन कर बाद मिली। उनके सम्मानित करल गेलक। मौका में परखंड कार्जक्रम प्रबंधक विनय कुमार नायक, गुमला ब्लड बैंक से जीरेन सुरीन, एलटी संगीत कुजूर, गीत कुमारी आदि उपस्थित रहयं।

मुद्रक व प्रकाशक **नीलम सिंह** द्वारा झारखंड वनिता उद्योग एसएचजी के लिए श्याम नगर, गांधी नगर सीसीएल कॉलोनी डीएवी गांधी नगर स्कूल के पीछे, थाना-गोंदा, जिला-रांची, राज्य झारखंड-834008 से प्रकाशित एवं शिवा साईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड रातू, काठीटांड़ टेंडर बगीचा के नजदीक, एचपी पेट्रोल पंप, पोस्ट व थाना रातू, रांची, झारखंड-835222 में स्थित प्रिंटिंग प्रेस में मुद्रित। आरएनआई पंजीयन संख्या. **JHABIL/2023/86791**, **संपादक** : नीलम सिंह, **प्रबंध संपादक :** कृशन गोपालका,
सलाहकार संपादक : रतन लाल अग्रवाल। फोन नंबरः 8210640230, 9934166306, **ईमेल आइडी**ः jharkhandwanitaudyog@gmail.com